RNI No.DELHIN/2011/41355

दिल्ली से प्रकाशित

नवंबर 2025 वर्ष 14 अंक 168 मूल्य ₹20

प्राइम स्पेक्टेटर

पीएसयू और अपराध पर केंद्रित पत्रिका

बेटियों ने बनाया भारत को चैंपियन

PRIME INDIA MEDIA HOUSE →

PRIME CRIME INDIA

www.primecrimeindia.com

PSU TODAY

NETA INDIA

www.netaindia.com

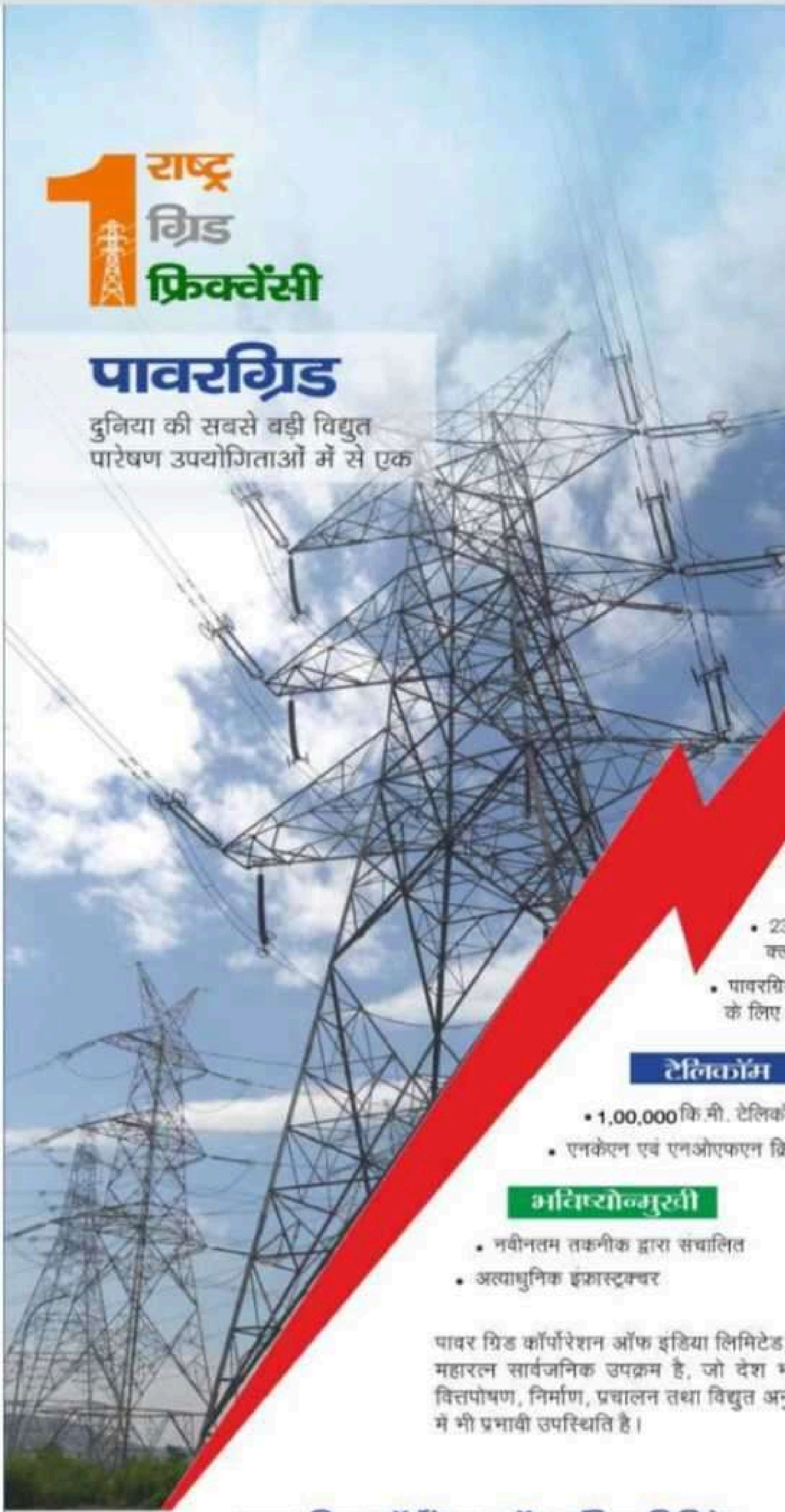

पावरग्रिड
POWERGRID

1 राष्ट्र ग्रिड फ्रिक्वेंसी

पावरग्रिड

दुनिया की सबसे बड़ी विद्युत पारेषण उपयोगिताओं में से एक

पावरग्रिड का व्यवसाय

पारेषण

- पारेषण लाइनें– **1,78,975** सर्किट किमी
- सब–स्टेशन– **280**
- ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता– **5,43,961** एमवीए

परामर्श सेवाएं

- 250 से अधिक घरेलू क्लाइंट्स को पारेषण संबंधी परामर्श
- 23 देशों में वैश्विक उपस्थिति के साथ 30 से अधिक क्लाइंट्स
- पावरग्रिड लीडरशिप एकेडमी– दुनिया भर के प्रतिभागियों के लिए **550+** पाठ्यक्रम

टेलिकॉम

- **1,00,000** कि.मी. टेलिकॉम नेटवर्क का स्वामित्व एवं प्रचालन
- एनकेएन एवं एनओएफएन क्रियान्वयन में प्रमुख परामर्शदाता

भविष्योन्मुखी

- नवीनतम तकनीक द्वारा संचालित
- अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का एक महारत्न सार्वजनिक उपक्रम है, जो देश भर में पारेषण योजनाओं के नियोजन, डिजाइनिंग, वित्तपोषण, निर्माण, प्रचालन तथा विद्युत अनुरक्षण में संलग्न है और टेलिकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में भी प्रभावी उपस्थिति है।

पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
केन्द्रीय कार्यालय : "सौदामिनी", प्लॉट सं.–2, सेक्टर–29, गुरुग्राम, हरियाणा–122001, फोन : 0124-2571700-719
पंजीकृत कार्यालय : बी-9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016
सीआईएन : L40101DL1989GOI038121 | वेबसाइट : www.powergrid.in | फॉलो करें

एक महारत्न पीएसयू

संपादकीय

नासिर खान
संपादक

ममदानी की जीत के मायने

जोहरान ममदानी का न्यूयॉर्क के मेयर का चुनाव जीतना अमेरिका की राजनीति में ऐतिहासिक मोड़ है। जब प्रवासी वहां ज्वलंत मुद्दा बने हुए हैं, तब पहली बार एक मुस्लिम नेता का अमेरिका की वित्तीय राजधानी की कमान संभालना अमेरिकी समाज में बढ़ती विविधता और स्वीकार्यता का संकेत है। उनकी जीत बताती है कि अमेरिकी नई सोच के साथ चलने के लिए तैयार हैं।

ममदानी ने एक साल पहले जब अपने कैंपेन की शुरुआत की थी, तब किसी ने नहीं सोचा था कि वह इतिहास रचने जा रहे हैं। जून में वह डेमोक्रेटिक प्राइमरी में जीते और पार्टी की तरफ से उम्मीदवार चुने गए, तब सबका ध्यान उनकी ओर गया। 34 साल के जिस युवा को उसके कम अनुभव की वजह से पहले चुनावी लड़ाई में कमजोर माना जा रहा था, बाद में वही सबसे अहम फैक्टर साबित हुआ। उनकी खासियत रही जनता से जुड़ाव। उन्होंने विज्ञापनों पर खर्च करने के बजाय सीधे लोगों से संवाद किया। आम शहरियों की समस्याओं को समझा और वादा किया कि वह न्यूयॉर्क को रहने के लिए ज्यादा बेहतर जगह बनाएंगे। उनकी चुनावी घोषणाओं को देखें तो लगता है कि वह किसी विकासशील देश की बात कर रहे हैं – फ्री पब्लिक ट्रांसपोर्ट, किराये पर लगाम और न्यूनतम वेतन। लेकिन, परिणाम से जाहिर है कि वह नब्ज पकड़ने में सफल रहे। उन्होंने उन समस्याओं को छुआ, जिन्हें दूसरे ज्यादा अनुभवी नेता नजरअंदाज करते रहे। ममदानी ने केवल वादे ही नहीं किए, यह भी बताया कि वह इन्हें पूरा कैसे करने वाले हैं। उन्होंने कॉरपोरेट टैक्स बढ़ाकर और न्यूयॉर्क के अमीरों पर 2ः अतिरिक्त कर लगाकर योजनाओं के लिए पैसा जुटाने की बात कही। इससे मध्यम वर्ग उनसे जुड़ता चला गया। एक लाख लोगों का वॉलंटियर बनना और 20 लाख से अधिक वोटिंग से पता चलता है कि इस बार जनता बदलाव का मन बना चुकी थी। ममदानी ने जीत के बाद जवाहरलाल नेहरू को कोट किया। उन्होंने इस परिणाम को बदलाव के लिए समर्थन बताया और कहा कि न्यूयॉर्क ने ट्रंप को हराने का रास्ता दिखा दिया है। इस जीत ने पस्त डेमोक्रेट्स में नई जान भरी होगी, लेकिन चुनौती अब शुरू होती है। चुनावी प्रचार के दौरान ट्रंप और ममदानी में जैसी तल्खी दिखी, वैसा कभी नहीं हुआ था। ट्रंप ने धमकी दी थी कि अगर ममदानी जीते तो वह न्यूयॉर्क के फेडरल फंड्स में कटौती कर देंगे। ममदानी के सामने अब अपने वादों को पूरा करने की चुनौती है।

भारत की बेटियां भी बनी विश्वविजेता 7

प्राइम स्पेक्टेटर

संपूर्ण हिंदी मासिक पत्रिका

DAVP No.0813F27125-025

वर्ष-14,अंक:168,नवंबर 2025

मल्य ₹ 20

RNI No.DELHIIN/2011/41355

संपादक
नासिर खान

सलाहकार संपादक
डॉ. ईशा
राकेश त्रिपाठी

राजनीतिक सपादक
इंजी.ए पी सिंह

संपादक (सूचना प्रौद्योगिकी)
प्रशांत दत्त मिश्रा

कानूनी सलाहकार
डी.बी.गोस्वामी,सलीम खान
(एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)

चीफ बिजनेस एग्जीक्यूटिव
समीर अख्तर

विदेश प्रतिनिधि
विकास पारिक (लंदन)

प्रमुख प्रतिनिधि

दिल्ली ब्यूरो प्रमुख
सतपाल सिंह तंवर

लखनऊ ब्यूरो प्रमुख
अशोक तिवारी

मध्य प्रदेश ब्यूरो प्रमुख
श्वेतांक वर्मा

हरियाणा ब्यूरो प्रमुख
संजय सिन्हा

उत्तराखंड ब्यूरो प्रमुख
सुनील नेगी

पूर्वांचल ब्यूरो प्रमुख
शाहिद अस्करी

सोनभद्र ब्यूरो प्रमुख
संजय सिंह

बरेली मण्डल ब्यूरो प्रमुख
योगेंद्रपाल सिंह कौशल

बिहार ब्यूरो प्रमुख
शक्ति प्रकाश

महाराष्ट्र ब्यूरो प्रमुख
राजकुमार केशरवानी

हिमाचल ब्यूरो प्रमुख
साहिल शर्मा

राजस्थान ब्यूरो प्रमुख
रानू पाठक

पशिचम बंगाल,दिल्ली एनसीआर ब्यूरो प्रभारी
नरेश कुमार श्रीवास्तव

संपादकीय 3

राजस्थान की डिजिटल क्रांति 19

पीएसयू की खबरें 33

सुपरस्टार : राजेश खन्ना उर्फ काका 38

कब करवाना पड़ता लिवर ट्रांसप्लांट 40

रोशन हो रहा है छत्तीसगढ़ 42

मीरा नायर का बेटा, न्यूयार्क का मेयर 48

सत्याचा मोर्चा में एक साथ दिखाई दिए उद्धव, राज और पवार 13

दिल्ली में दशकों बाद यमुना घाटों पर मना छठ पर्व 30

क्षेत्रीय प्रतिनिधि

दिल्ली ब्यूरो
मोहम्मद आसिफ (वरिष्ठ संवाददाता)

मथुरा ब्यूरो
विनय चौधरी (संवाददाता)

कानपुर ब्यूरो
अजय कुमार द्विवेदी (वरिष्ठ संवाददाता)

इलाहाबाद ब्यूरो
गुफ़रान खान (वरिष्ठ संवाददाता)

दक्षिणांचल ब्यूरो
इमरान खान (वरिष्ठ संवाददाता)

बलिया ब्यूरो
डॉ.कलीम वारसी (वरिष्ठ संवाददाता),

आरा ब्यूरो
विमलेश कुमार (संवाददाता)

हाजीपुर ब्यूरो
राहुल कुमार (संवाददाता)

कार्यालय

कॉरपोरेट ऑफिस

91, फर्स्ट फ्लोर जे एंड के ब्लॉक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली– 110092

संपादकीय कार्यालय

आर–141/3 रमेश पार्क लक्ष्मी नगर दिल्ली–110092
मोबाइल–9718647540Ph.011-46536014
ईमेल–primespectator@gmail.com, primeindia-mediahouse@gmail.com
वेबसाइट–primeindiamediahouse.com
primecrimeindia.com & netaindia.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक नासिर खान द्वारा ANEJA PRINTERS, C–11, SECTOR-10, NOIDA (UP) से मुद्रित तथा आर–141/3 रमेश पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 से प्रकाशित। सभी पदाधिकारी अवैतनिक हैं। प्राइम स्पेक्टेटर के किसी भी रचना के प्रकाशन से पहले संपादक की अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, लेखक के निजी विचार हैं। सभी प्रकार के विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

WINNER

भारत की बेटियां भी बनी विश्व विजेता

भारत ने 25 साल बाद पहली बार महिला वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता। भारतीय टीम बनी चौंपियन, महिला वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराया।

डॉ. ईशा
सलाहकार संपादक

कौन कहता है कि आसमाँ में छेद नहीं होता जरा एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों। एक मशहूर लेखक की इन पंक्तियों को भारत की बेटियों ने 2 नवंबर शनिवार को आईसीसी महिला वनडे वर्ल्ड कप 2025 खिताब साकार कर दिया है। यह पहला मौका रहा, जब भारत ने महिला वर्ल्ड कप खिताब अपने नाम किया। हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व वाली भारतीय टीम ने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से मात देकर ट्रॉफी उठाईं।

नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम पर खेले गए आईसीसी महिला वनडे वर्ल्ड कप 2025 फाइनल में भारत ने पहले बल्लेबाजी की और 50 ओवर में 7 विकेट खोकर 298 रन बनाए। जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम 45.3 ओवर में 246 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत के रूप में दुनिया को 25 साल बाद नया वर्ल्ड चौंपियन मिला। भारत ने इससे पहले 2005 और 2017 महिला वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में प्रवेश किया था, लेकिन ट्रॉफी जीतने से चूक गई थी। इस बार हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारत ने कोई गलती नहीं की और फाइनल जीतकर देश का मान बढ़ाया। भारतीय महिला टीम पहली बार चौंपियन बनने में कामयाब हुई है। 299 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की टीम 45.3 ओवर में 246 रन बनाकर ऑलआ. उट हो गई। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लॉरा ने 101 रन की पारी खेली। भारत के लिए दीप्ति शर्मा ने 9.3 ओवर में 39 रन देकर पांच विकेट हासिल किए। वहीं शेफाली वर्मा को दो विकेट मिले। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में सात विकेट गंवाकर 298 रन बनाए थे। भारत के लिए शेफाली वर्मा ने 87 और दीप्ति शर्मा ने 58 रन की पारी खेली।

दीप्ति शर्मा ने गेंद से किया कमाल

299 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए कप्तान लॉरा वुल्फार्ट और तेजमिन ब्रिट्स की जोड़ी दक्षिण अफ्रीका को अच्छी शुरुआत दिलाई। लेकिन 10वें ओवर की पहली गेंद पर ब्रिट्स रन आउट हो गईं। ब्रिट्स ने 23 रन की पारी खेली। इसके बाद एक छोर से दक्षिण अफ्री. का के विकेट गिरने का सिलसिला शुरू हो गया। श्री चरणी ने एनेके बॉश को खाता खोलने का मौका ही नहीं दिय. ा। सुने लूस ने कप्तान लॉरा के साथ मिलकर पारी को संभालने की कोशिश की। लेकिन शेफाली ने बल्ले के बाद गेंद से कमाल दिखाते हुए सुने लूस और मारिजान काप को पवेलियन वापस भेज दिया। सिनालो जाफ्टा भी ज्यादा देर क्रीज पर टिक नहीं पाईं और उन्हें दीप्ति शर्मा ने पवेलियन वापस भेजा। उन्होंने 16 रन की पारी खेली। लगातार गिरते विकेटों के बीच कप्तान लॉरा एक छोर पर डटी रहीं। एनेरी डर्कसन ने लारा का साथ देने की कोशिश की। लेकिन उन्हें 35 के स्कोर पर दीप्ति शर्मा ने बोल्ड कर दिया। इस बीच लॉरा ने सेमीफाइनल के बाद फाइनल में भी शतक जड़ा। लेकिन वो भी अपनी पारी को 101 रन से आगे नहीं बढ़ा पाईं और उन्हें भी दीप्ति शर्मा ने ही आउट किया। लारा के आउट होने के बाद दक्षिण अफ्रीका की जीत की उम्मीद नहीं के बराबर रह गई थीं। दक्षिण अफ्रीका ने 41.4 ओवर में 221 के स्कोर पर अपना आठवां विकेट गंवाया। इसके बाद दीप्ति शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका

की बाकी दो खिलाड़ियों को ज्यादा देर टिकने नहीं दिया। उन्होंने 9.3 ओवर में 39 रन देकर पांच विकेट हासिल किए। दीप्ति शर्मा ने दक्षिण अफ्रीका को 246 रन पर ऑल आउट करने में अहम भूमिका निभाई। शेफाली वर्मा को दो विकेट मिले। वहीं श्री चरणी ने एक विकेट हासिल किया।

शेफाली ने खेली 87 रन की पारी

टॉस गंवाने के बाद शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना की जोड़ी मैदान पर उत. री। शुरुआत से ही दोनों खिलाड़ियों ने तेजी से रन बनाए। 18वें ओवर की चौथी गेंद पर आउट होने से पहले स्मृति ने शेफाली के साथ पहले विकेट के लिए 104 रन जोड़े। स्मृति मंधाना ने 58 गेंद पर 45 रन की पारी खेली। स्मृति मंधाना के आउट होने के बाद भी शेफाली ने तेजी से रन बनाना जारी रखा। लेकिन शेफाली फाइनल में शतक बनाने से चूक गईं। उन्होंने 78 गेंद में 87 रन की पारी खेली। शेफाली की पारी में सात चौके और दो छक्के शामिल रहे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में भारत की जीत की हीरो रहीं जेमिमा ने 37 गेंद पर 24 रन की पारी खेली। 29.4 ओवर में 171 रन पर तीन विकेट गंवाने के बाद भारत की पारी मुश्किल में आती दिख रही थीं। लेकिन कप्तान हरमनप्रीत कौर ने दीप्ति शर्मा के साथ मिलकर भारतीय पारी को संभाला। दोनों के बीच चौथे विकेट के लिए 52 रन की साझेदारी हुई। हालांकि हरमनप्रीत कौर की पारी भी 20 रन से आगे नहीं बढ़ पाई। लेकिन आखिरी 10 ओवर्स में दीप्ति शर्मा और ऋचा घोष की शानदार पारियों ने भारत के स्कोर को 50 ओवर में सात विकेट गंवाकर 298 के स्कोर तक पहुंचाया। दीप्ति शर्मा ने 58 रन बनाए। वहीं ऋचा घोष ने 34 रन की पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका की गेंदबाज अयाबोंगा खाका ने 9 ओवर में 58 रन देकर तीन विकेट लिए। इस मुकाबले के साथ ही महिला क्रिकेट को नया चौंपियन मिल गया है। भारतीय महिला टीम ने पहली बार वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता है। भारतीय टीम तीसरी बार (2005 और 2017 के बाद) इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची थी। पहले दो बार भारतीय टीम को नि. राशा हाथ लगी थी। अब तक ऑस्ट्रेलिया की टीम सबसे ज्यादा महिला वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीतने वाली टीम है। ऑस्ट्रेलिया ने सात बार इस खिताब को अपने नाम किया है। इंग्लैंड की टीम चार बार ट्रॉफी जीती और न्यूजीलैंड ने एक बार। भारतीय महिला टीम ने पहली बार वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता है। ये वो ऐतिहासिक पल था जिसका इस टीम को बहुत अरसे से इंतजार था। भारतीय टीम इससे पहले दो बार (2005 और 2017) इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची थी। लेकिन इस बार कुछ अलग था। इस टीम ने सात बार की चौंपियन ऑस्ट्रेलिया टीम को सेमीफाइनल के रोमांचक मैच में हराया। इस मुकाबले में मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स ने 127 रनों की यादगार पारी खेली। और फिर, फाइनल में इस टीम ने दक्षिण अफ्रीका की टीम को 52 रनों से हराया। जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम चौंपियन बनी तो चारों ओर से तारीफों की बरसात होने लगी।सूर्यकुमार यादव, सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, स्टार बॉक्सर निखत जरीन ने टीम की तारीफ की। पीएम नरेंद्र मोदी से लेकर भारतीय राजनीति के अनेक दिग्गजों ने इस जीत को महान बताया। भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय ने टीम की तारीफ करते हुए कहा, श्आपने हमें और पूरी दुनिया को प्रेरणा दी है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की इसलिए भी तारीफ हो रही है क्योंकि इसमें शामिल लड़कियों ने मैदान पर जितना संघर्ष किया, उससे कहीं ज्यादा संघर्ष उन्हें यहां तक पहुंचने के लिए करना पड़ा।

बेटियों ने मुश्किलों भरा सफर तय कर टीम को बनाया विश्व विजेता

क्रांति गौड़

22 साल की क्रांति गौड़ ने मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के घुवारा कस्बे से निकल कर टीम इंडिया तक का सफर तय किया।क्रांति गौड़ की शुरुआत टेनिस बॉल क्रिकेट में लड़कों के साथ खेलने से हुई है क्योंकि उनके घर के

आस–पास लड़कियां क्रिकेट नहीं खेलती थीं। एक इंटरव्यू में क्रांति ने बताया कि घर के सामने एक ग्राउंड है वहां कुछ लड़के क्रिकेट खेल रहे थे। लड़कियां भी साइड में अपना गेम खेल रही थीं लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मुझे क्रिकेट खेलनी चाहिए। फिर सब लड़कियां एक साइड खेलती थीं और मैं लड़कों के साथ क्रिकेट खेलती थी। इसके बाद अपने भाई के साथ क्रांति आस–पास के टेनिस बॉल टूर्नामेंट में भी हिस्सा लेने लग. ीं। हालांकि, इस दौरान उन्हें सामाजिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। लड़कों के साथ क्रिकेट खेलने के लिए उन्हें डांट भी सुननी पड़ती थी। उन्होंने साल 2017 में पहली बार अपने जिले में एक टूर्नामेंट में लेदर बॉल से मैच खेला था, जिसमें वो दर्शक बनकर पहुंची थीं। महिला टीम में एक खिलाड़ी कम होने से उन्हें मौका मिला और वो प्लेयर ऑफ द मैच बनीं। क्रांति ने उन दिनों को याद करते हुए इसी इंटरव्यू में कहा था, ष्एक समय ऐसा आया था कि हमें खाने के लिए भी उधार लेने पड़ते थे और लोगों से वादा करते थे कि हम आपको वापस लौटा देंगे। कहते हैं न कि बुरे वक्त में कोई साथ नहीं देता है, तो जब हमारा बुरा वक्त आया तो किसी ने साथ नहीं दिया। ऐसे वक्त में मुझे प्रैक्टिस के लिए जाना होता था तो कोई पैसे उधार भी नहीं देता था। उस टाइम मुझे मम्मी ने अपने गहने बेचकर मैच खेलने भेजा था।

राधा यादव

भारतीय महिला क्रिकेट टीम में लेफ्ट–आर्म स्पिनर राधा यादव बेहद सामान्य परिवार से आती हैं। उनका परिवार मुंबई के उपनगर कांदिवली में रहता था। मुंबई के महान कोच रमाकांत आचरेकर से क्रिकेट के गुर सीखने वाले प्रफुल्ल नाइक ने पहली बार राधा में क्रिकेट के प्रति दिल. चस्पी को पहचाना था। तब राधा 11 साल की थीं। उन्होंने राधा से अपने पिता से मिलवाने का आग्रह किया। राध ा के पिता सब्जी बेचते थे। नाइक ने किसी तरह उनके परिवार को क्रिकेट खेलने देने के लिए मना लिया। और यहीं से राधा के जीवन का ऐसा सफर शुरू हुआ जिसने उन्हें भारतीय महिला क्रिकेट टीम का अहम हिस्सा बनाया। पिछले साल अक्टूबर में राधा यादव अपनी हैरत. अंगेज कैच के लिए सुर्खियों में रही थीं। न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे मैच में उन्होंने हवा में ये कैच लपका था।

अमनजोत कौर

भारतीय गेंदबाजी के मोर्चे की एक अहम खिलाड़ी हैं पंजाब के संगरूर जिले की रहने वाली अमनजोत कौर। उनका परिवार पंजाब के मोहाली में रहता है। उन्होंने क्रिकेट की दुनिया में कदम गली क्रिकेट से ही रखा। वो अक्सर लड़कों के साथ ही खेलती थीं। टीम के वर्ल्ड चौंपियन बनने के बाद अमनजोर कौर की मां रंजीतकौर ने बीबीसी को बताया, ष्पांच छह साल की लड़की का अकेले लड़कों के साथ खेलना एक बड़ी बात थी। वह लड़कों की तरह ही जूड़ा या पटका बांधती थी।वो कहती हैं कि शुरुआती दिन थोड़े मुश्किल जरूर थे लेकिन अमनजोत अपने खेल के दम पर खुद पुरस्कार या स्कॉलरशिप हासिल कर लेती थीं। लेकिन दिलचस्प है कि अमनजोत कौर के पिता ने सबसे पहले उनकी प्रतिभा को पहचाना और बढ़ावा दिया। अमनजोत कौर के पिता भूपेंदर पेशे से कारपेंटर हैं। वो ठेके लेकर काम करते थे। उन्होंने बीबीसी को बताया कि जब अमनजोत ने कहा कि उसे एकेडमी ज्वाइन करना है तो मुझे अपना वो काम छोड़ना पड़ा, जो मैं ठेके लेकर करता था। फिर मैं दुकान पर काम करने लगा, ताकि समय बचे। अमनजोत के माता–पिता दोनों का कहना है कि श्यह जीत खेल को लेकर लड़कियों के प्रति नजरिये को बदल देगी और एक नई प्रेरणा बनेगी।

दीप्ति शर्मा

दीप्ति शर्मा के प्रदर्शन ने भारत को चौंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई है। दीप्ति के पिता भारतीय रेलवे में काम करते थे। ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा के प्रदर्शन की बदौलत उन्हें प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया। वो वर्ल्ड कप में 20 से ज्यादा विकेट लेने और 200 से ज्यादा रन बनाने वाली पहली महिला क्रिकेटर बन गई हैं। उत्तर प्रदेश के आगरा में

जन्मीं दीप्ति शर्मा 12 साल की उम्र में यूपी की टीम में चुन ली गई थीं। उन्होंने साल 2014 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सिरीज के लिए अंतरराष्ट्रीय मैच में डेब्यू किया। और इसके दो साल बाद ही वह भारतीय टी–20 टीम में जगह बनाने में सफल हो गई। उन्होंने मात्र 18 साल की उम्र में एक वनडे मैच में छह विकेट लेने का गौरव हासिल किया। साल 2017 में आयरलैंड के खिलाफ खेले गए मैच में 188 रन की पारी खेलकर रिकॉर्ड बनाया था। तब उनकी उम्र महज 19 साल थी। यूपी सरकार ने दीप्ति शर्मा को इस साल जनवरी में पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) नियुक्त किया है। साथ ही उन्हें तीन करोड़ रुपये का पुरस्कार भी दिया।

रेणुका ठाकुर

भारतीय टीम की एक और तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर हिमाचल से आती हैं। वे एक किसान परिवार से आती हैं। उनके पिता नहीं हैं लेकिन उनका सपना था कि उनका कोई बच्चा खिलाड़ी बने। रेणुका की मां सुनीता ने बताया कि बचपन से ही रेणुका ठाकुर में क्रिकेट को लेकर एक जुनून था और जुगाड़ से बनाए गए बल्ले और गेंद से वो इलाके के लड़कों के साथ खेलती थीं। सुनीता ने बताया कि उनके पति क्रिकेट के फैन थे और चाहते थे कि उनकी बेटी खेल में अच्छा करे।उन्होंने कहा कि वो क्रिकेट को बहुत पसंद करते थे, आज वो हमारे साथ नहीं हैं लेकिन बेटी ने उनका यह सपना पूरा किया। भारतीय टीम की जीत के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुख्खू ने रेणुका ठाकुर को एक करोड़ रुपये का पुरस्कार देने का एलान किया है।

राष्ट्रपति ने ऐतिहासिक जीत की बधाई दी

आईसीसी महिला क्रिकेट वर्ल्ड कप 2025 की विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से राष्ट्रपति भवन में गुरूवार 6 नवंबर को मुलाकात की। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने टीम की सभी खिलाड़ियों को ऐतिहासिक जीत की बधाई दी। इस खास मौके पर राष्ट्रपति ने टीम के सभी सदस्यों को ऐतिहासिक जीत के लिए बधाई दी और कहा कि उन्होंने इतिहास रच दिया है। राष्ट्रपति मुर्मू ने टीम की सफलता को सराहते हुए कहा कि इस टीम ने क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतकर न केवल देश का नाम रोशन किया है, बल्कि युवा पीढ़ी के लिए आदर्श भी कायम किया है। राष्ट्रपति ने कहा कि यह टीम भारत का प्रतिबिंब है। वे विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों और परिस्थितियों का प्रति. निधित्व करती हैं, लेकिन वे एक टीम हैं — भारत। देश की बेटियों ने क्रिकेट में इतिहास रच दिया है। राष्ट्रपति ने कहा कि इस जीत ने सभी भारतीयों का अपने खिलाड़ियों पर भरोसा और मजबूत किया है। उन्होंने यह भी बताया कि यह टीम अब उन लड़कियों के लिए रोल मॉडल बन गई है, जो क्रिकेट में करियर बनाना चाहती हैं। इस अवसर पर टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने राष्ट्रपति मुर्मू को टीम की सिग्नेचर वाली जर्सी भेंट की और कहा कि यह टूर्नामेंट हमारे लिए बहुत खास था। जब हमें पता चला कि यह भारत में हो रहा है, तो हमने तय किया कि ट्रॉफी को देश से बाहर नहीं जाने देंगे। हमें अपनी जीत पर पूरा भरोसा था और इस पल को आपके साथ साझा कर खुश हैं।

प्रधानमंत्री ने टीम के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी

प्रधानमंत्री ने खिलाड़ियों से अपनी सफलता की कहानी साझा करके दूसरों को प्रेरित करने का आह्वान किया, प्रत्येक खिलाड़ी से साल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 5 नवंबर बुध ावार को 7, लोक कल्याण मार्ग, नई दिल्ली में आईसीसी महिला विश्व कप 2025 की चैंपियन टीम से बातचीत की। भारतीय टीम ने रविवार, 2 नवंबर, 2025 को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में जीत हासिल की। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि यह देव दीपावली और गुरुपर्व दोनों का प्रतीक है। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएं भी दीं। प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, टीम के कोच अमोल मजूमदार ने कहा कि उनसे मिलना हमारे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है। उन्होंने खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत को देश की बेटियों द्वारा चलाए जा रहे एक अभियान के रूप में जिक्र किया और पिछले दो वर्षों में उनके असाधारण समर्पण की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि लड़कियों ने हर अभ्यास सत्र में उल्लेखनीय उत्साह और ऊर्जा के साथ खेला और उनकी कड़ी मेहनत रंग लाई है।कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 2017 में प्रधानमंत्री से मुलाकात को याद किया जब ट्रॉफी नहीं मिली थी और वर्षों से जिस ट्रॉफी के लिए उन्होंने मेहनत की थी, उसे अब मिलने पर अत्यधिक सम्मान महसूस किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने उनकी खुशी दोगुनी कर दी और यह उनके लिए बहुत गर्व की बात है। उन्होंने यह भी कहा कि उनका लक्ष्य भविष्य में भी उनसे मिलते रहना और उनके साथ टीम की तस्वीरें खिंचवाना है। पीएम मोदी ने उनकी उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने वाकई कुछ बड़ा हासिल किया है। उन्होंने जोर

देकर कहा कि भारत में क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि लोगों के जीवन का एक हिस्सा बन गया है। उन्होंने कहा कि जब क्रिकेट अच्छा चलता है, तो देश उत्साहित महसूस करता है, और थोड़ी सी भी असफलता पूरे देश को झकझोर देती है। मोदी ने कहा कि पूरा देश देख रहा है और गर्व महसूस कर रहा है, लोग वास्तव में खिलाड़ियों के अनुभव सुनना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सफलता के कारण वे भी बहुत प्रेरित हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि घर लौटने के बाद, उन्हें उन स्कूलों का दौरा करना चाहिए जहां उन्होंने पढ़ाई की है और छात्रों के साथ बातचीत करते हुए एक दिन बिताना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चे कई सवाल पूछेंगे और उन्हें जीवन भर याद रखेंगे और यह अनुभव खिलाड़ियों को भी प्रेरित करेगा। इसके बाद श्री मोदी ने तीन स्कूलों का चयन करने और हर साल एक स्कूल का दौरा करने का प्रस्ताव रखा और कहा कि इससे खिलाड़ियों के साथ–साथ छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी। प्रधानमंत्री ने फिट इंडिया अभियान, खासकर मोटापे से निपटने में योगदान देने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने खरीदारी के समय तेल की खपत 10 प्रतिशत कम करने की सलाह दी और कहा कि खिलाड़ियों से ऐसे संदेश सुनने का काफी असर होगा। उन्होंने खिला. ड़ियों को खासकर बेटियों के लिए फिट इंडिया का समर्थन करने और सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। मोदी ने खिलाड़ियों से बातचीत का अवसर पाकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि कुछ खिलाड़ियों से वे पहले भी मिल चुके हैं, जबकि कई खिलाड़ी उनसे पहली बार मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे हमेशा उनसे मिलने के लिए उत्सुक रहते हैं और उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं। प्रधानमंत्री ने अंत में कहा कि हमें मिलकर देश को आगे ले जाना है और सभी को अपनी शुभकामनाएं दीं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम पर पैसों की बरसात

आईसीसी वर्ल्डकप जीतने के बाद भारतीय महिला क्रिकेट टीम पर पै. सों और उपहारों की बरसात होने लगी है। वैसे बता दें कि आईसीसी ने इस बार महिला वर्ल्ड कप की पुरस्कार राशि में लगभग 300 फीसदी की वृद्धि की, जिससे कुल पुरस्कार पूल करीब 123 करोड़ रूपए तक पहुंच गया। वहीं बीसीसीआई की ओर से दी गई 51 करोड़ की अतिरिक्त राशि ने इस सफलता को और भी ऐतिहासिक बना दिया। बीसीसीआई का यह ऐतिहासिक कदम न केवल इस जीत का जश्न है, बल्कि यह संदेश भी कि म. हिला खिलाड़ियों को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए। इसके अलावा विश्व कप 2025 जीतने वाली भारतीय महिला क्रिकेट टीम को टाटा समूह की ओर से एक भव्य तोहफा दिया गया है. टीम की इस ऐतिहासिक जीत का सम्मान करते हुए, टाटा मोटर्स ने प्रत्येक खिला. ड़ी को बिल्कुल नई टाटा सिएरा एसयूवी भेंट करने की घोषणा की है। यह घोषण ाा भारतीय खेलों और महिला क्रिकेट के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण को दर्शाती है। मिली जानकारी के अनुसार, टाटा सिएरा एसयूवी की आधिकारिक लॉन्चिंग 25 नवंबर को की जाएगी। इसके बाद, महिला क्रिकेट टीम की प्रत्येक सदस्य को इन एसयूवी का पहला बैच सौंपा जाएगा। बताया गया है कि टीम के हर मेंबर को टाटा सिएरा एसयूवी का टॉप मॉडल दिया जाएगा, जो उनकी शानदार उपलब्धि का प्रतीक होगा। यह तोहफा भारत की विश्वविजेता बेटियों के असाध ाारण प्रदर्शन का जश्न मनाता है, जिससे देश भर में खुशी का माहौल है।

भारत- दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराया

फाइनल की प्लेयर ऑफ द मैच: शफाली वर्मा

87 रन (78 गेंदों में) और 2 विकेट (36 रन देकर)

टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

दीप्ति शर्मा, 9 मैचों में 22 विकेट, फाइनल में 58 रन

सर्वाधिक रन

लौरा वोल्वार्ट (दक्षिण अफ्रीका) 9 पारियों में 571 रन

सर्वाधिक विकेट

दीप्ति शर्मा (भारत) 22 विकेट

सत्याचा मोर्चा में एक साथ दिखाई दिए उद्धव, राज और पवार

बीएमसी चुनाव से पहले 'वोट चोरी' के मुद्दे पर निकले इस विरोध मार्च ने न सिर्फ विपक्षी एकजुटता का प्रदर्शन किया, बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति में एक नए समीकरण की झलक भी दिखा दी।

राजकुमार केशरवानी
महाराष्ट्र ब्यूरो प्रमुख

बीएमसी चुनाव से पहले मुंबई की सड़कों पर एक नवंबर शनिवार को महाराष्ट्र की राजनीति का एक नया दृश्य देखने को मिला। उद्धव ठाकरे, राज ठाकरे और शरद पवार एक साथ 'सत्याचा मोर्चा' में दिखाई दिए। बीएमसी चुनाव से पहले 'वोट चोरी' के मुद्दे पर निकले इस वि. रोध मार्च ने न सिर्फ विपक्षी एकजुटता का प्रदर्शन किया, बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति में एक नए समीकरण की झलक भी दिखा दी। रैली के अंत में उद्धव ठाकरे ने जब मंच से कहा कि मेरी पार्टी चुराई, निशान चुराया, अब वोट भी चुराओगे, तो यह बयान सिर्फ एक राजनीतिक आरोप नहीं, बल्कि सत्ता से छिनी पहचान का दर्द भी था। उद्धव ने इसके बाद फिल्म 'शोले' का मशहूर डायलॉग दोहराते हुए कहा कि जागते रहो, वरना एनाकोंडा आ जाएगा। यह हमला सीधे बीजेपी की ओर था।

यह 'सत्याचा मोर्चा' महा विकास आघाड़ी– कांग्रेस, एनसीपी (एसपी) और शिवसेना (यूबीटी) का था। लेकिन इसमें सबसे बड़ी हैरानी तब हुई जब महा. राष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे भी शामिल हुए। मुंबई के फैशन स्ट्रीट से शुरू हुआ यह मार्च बीएमसी मुख्यालय तक पहुंचा, जहां उद्धव ठाकरे, शरद पवार, सुप्रिया सुले और बालासाहेब थोराट समेत विपक्ष के सभी बड़े नेता मौजूद रहे। हजारों कार्यकर्ताओं के साथ यह रैली बीजेपी पर सीधा हमला बन गई। विपक्ष ने आरोप लगाया कि मतदाता सूची में गड़बड़ियां, फर्जी वोटरों की प्रविष्टियां और डिलीटेड नामों की हेराफेरी सत्ताधारी दल के पक्ष में की जा रही है।

राज ठाकरे जो अब तक विपक्षी गठबंधन से दूरी बनाए हुए थे, लोकल

ट्रेन में बैठकर इस मार्च में पहुंचे। मंच से उन्होंने कहा कि हजारों लोग ठाणे में वोट करते हैं और मुंबई में भी। यह सब कैसे हो रहा है?" उन्होंने बताया कि कुल 4500 मतदाता ऐसे हैं जिन्होंने ठाणे के कल्याण ग्रामीण और मुंबई के मालाबार हिल दोनों जगह वोट किया। राज का यह खुला बयान न सिर्फ चुनाव आयोग की ओर इशारा था, बल्कि यह संकेत भी कि वह अब उद्धव ठाकरे के साथ मुद्दों पर कंधे से कंधा मिलाने को तैयार हैं।

'शोले' वाला वार और उद्धव की राजनीतिक रणनीति

उद्धव ठाकरे का एनाकोंडा वाला संवाद जो 'शोले' फिल्म के प्रसिद्ध डायलॉग से प्रेरित था, उनकी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा था। एक तरफ जनता को सतर्क रहने का संदेश और दूसरी तरफ बीजेपी पर तीखा व्यंग्य। उन्होंने कहा, "आप मेरी पार्टी चुराते हैं, मेरे पिता का नाम चुराते हैं, अब वोट भी चुराओगे? लेकिन याद रखो, महाराष्ट्र जाग रहा है।" यह बयान न सिर्फ उनके समर्थकों के लिए जोश बढ़ाने वाला था बल्कि उन मतदाताओं के लिए भी संकेत था जो उद्धव–राज के बीच की दूरी खत्म होते देख रहे हैं।

पवार बोले यह है संविधान और लोकतंत्र बचाने की लड़ाई

रैली में शरद पवार ने कहा कि यह सिर्फ एक राजनीतिक मार्च नहीं बल्कि संविधान और लोकतंत्र की रक्षा का आंदोलन है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी केंद्र और राज्य में सत्ता का दुरुपयोग कर विपक्षी नेताओं को निशाना बना रही है। कांग्रेस नेता बालासाहेब थोराट ने कहा कि वोट चोरी का मुद्दा राहुल गांधी ने सबसे पहले उठाया था, अब यह पूरे देश में गूंज रहा है।

क्या ठाकरे और पवार की जोड़ी बदल देगी समीकरण?

BMC की कुर्सी लंबे समय से उद्धव ठाकरे की शिवसेना का गढ़ रही है। लेकिन पार्टी विभाजन के बाद यह चुनाव उनके लिए 'अस्तित्व की लड़ाई' बन गया है। राज ठाकरे और शरद पवार का मंच पर आना उद्धव के लिए न केवल प्रतीकात्मक राहत है, बल्कि एक नया नैरेटिव भी कि मराठी अस्मिता, लोकतंत्र और पारदर्शिता की लड़ाई में विपक्ष अब एकजुट है। हालांकि राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि यह एकजुटता तभी असरदार साबित होगी जब एमवीए इसे सिर्फ 'वोट चोरी' तक सीमित न रखकर एक जनआंदोलन का रूप दे।

बीएमसी चुनाव:

मुंबई में महायुति एकजुट, लेकिन 50 सीटों पर आमने–सामने होंगे शिंदे गुट– भाजपा। महायुति मुंबई में तो साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी, लेकिन बाकी जगहों पर अकेले मैदान में उतरने के संकेत मिल रहे हैं। हालांकि मुंबई महानगरपालिका चुनाव में ही 50 सीटों के लिए भाजपा और शिंदे गुट के बीच टकराव की तस्वीर बन रही है। महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों की आहट सुनाई देने लगी है। महायुति और महाविकास अघाड़ी राज्य में अपनी ताकत आजमा रहे हैं। वहीं ठाकरे बंधुओं के एक साथ आने से एमवीए में दरार पड़ने की आशंका है। दूसरी ओर, महायुति भले ही मुंबई में साथ लड़ेगी, लेकिन संकेत मिल रहे हैं कि वे बाकी जगहों पर अलग–अलग चुनाव लड़ेंगे। मुंबई महानगरपालिका चुनाव में 50 सीटों के लिए भाजपा और शिंदे गुट के बीच टक्कर होने की संभावना है।

नगर निगम चुनाव नजदीक आते ही भाजपा और शिवसेना (शिंदे गुट) के बीच सीटों के बंटवारे का मुद्दा गरमाने की संभावना है। भाजपा ने 227 सीटों वाली मुंबई नगर निगम में 'मिशन 150' का ऐलान किया है। वहीं, शिंदे गुट ने आधी सीटों की मांग की है। मुंबई नगर निगम चुनाव से पहले ही एकनाथ शिंदे ने रणनीति बनाकर 100 से ज़्यादा पूर्व नगरसेवकों को शिवसेना में शामिल कर लिया था। इनमें से लगभग 45 नगरसेवक ठाकरे गुट के हैं और पिछले

नगर निगम चुनाव में जीते थे।

खबरों के मुताबिक, मुंबई महानगरपालिका में शिवसेना (शिंदे गुट) और भाजपा के बीच गठबंधन तय हो गया है और अब वार्डवार सीटों का बंटवारा शुरू होगा। कल्याण–डोंबिवली में गठबंधन नहीं होगा, जबकि ठाणे में फैसला आना बाकी है। हालांकि, मुंबई में दोनों दलों के साथ आने के फैसले से 50 वार्डों में स्थानीय स्तर पर तनाव पैदा हो सकता है।

शिंदे गुट में शामिल हुए शिवसेना ठा. करे गुट के 44 पार्षदों ने पिछले चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों को हराकर जीत हासिल की थी। दहिसर, अंधेरी, जोगेश्वरी, विक्रोली, घाटकोपर, गोरेगांव के कुछ वार्डों में काफी कड़ा मुकाबला था। ऐसे में बड़ा सवाल यह उठ खड़ा हुआ है कि इन सीटों पर फिर से कौन चुनाव लड़ेगा। शिंदे गुट ने इन सीटों

पर अपना दावा ठोक दिया है। इस बीच, भाजपा भी शिंदे से ये सीटें छीनने की तैयारी में है।

ठाकरे के गठबंधन से शिंदे गुट को चुनौती

राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि शिवसेना से शिंदे गुट में शामिल हुए नगरसेवकों के लिए दोबारा चुनकर आना आसान नहीं होगा। वहीं, अगर शिवसेना (उद्धव गुट) और मनसे साथ आ गए, तो 'गद्दारों को सबक सिखाओ' मुहिम तेज होने की संभावना है। भाजपा का तर्क है कि उन्हें वहीं नामांकन मिलना चाहिए जहां उनकी जीत की संभावना प्रबल हो। चूकि मुंबई शिवसेना का गढ़ है, इसलिए शिंदे गुट को उम्मीद है कि भाजपा उसे उचित सीटें देगी।

इसरो ने रचा इतिहास, उपग्रह सीएमएस-03 बाहुबली कक्षा में स्थापित

श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश)। भारतीय धरती से नयी पीढ़ी के स्वदेशी बाहुबली रॉकेट के जरिए प्रक्षेपित किया जाने वाला सबसे भारी संचार उपग्रह रविवार को सफलतापूर्वक इच्छित कक्षा में स्थापित कर दिया गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बताया कि 4,410 किलोग्राम वजनी संचार उपग्रह सीएमएस–03 को एलवीएम 3–एम5 रॉकेट के जरिए प्रक्षेपित किया गया, जिससे भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी को यह दुर्लभ उपलब्धि हासिल करने में मदद मिली। इसने कहा कि सीएमएस–03 एक बहु–बैंड संचार उपग्रह है और यह भारतीय भूभाग सहित एक विस्तृत समुद्री क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करेगा। इसने कहा कि उपग्रह को वांछित भू–समकालिक स्थानांतरण कक्षा (जीटीओ) में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया गया। यह 2013 में प्रक्षेपित की गई जीसैट 7 श्रृंखला का प्रतिस्थापन भी है।

इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने कहा कि प्रक्षेपण यान ने संचार उपग्रह को इच्छित कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया। उन्होंने कहा कि 4,410 किलोग्राम का उपग्रह सटीकता के साथ स्थापित कर दिया गया है। प्रक्षेपण के बाद मिशन नियंत्रण केंद्र से अपने संबोधन में उन्होंने एलवीएम 3 उपग्रह को 'बाहुबली रॉकेट बताया, जो स्पष्ट रूप से इसकी भारी भार उठाने की क्षमता का संदर्भ था। नारायणन ने याद दिलाया कि रॉकेट का पिछला प्रक्षेपण ''सबसे प्रतिष्ठित चंद्रयान 3 था, जिसने राष्ट्र को गौरव दिलाया। उन्होंने कहा कि रविवार को ''भारी उपग्रह के साथ सफलता प्राप्त करने के बाद इसने एक और गौरव प्राप्त किया। प्रायोगिक मिशन सहित एलवीएम 3 के सभी आठ प्रक्षेपण सफल रहे हैं, जो 100 प्रतिशत सफलता दर दर्शाते हैं।

अंतरिक्ष विभाग के सचिव नारायणन ने कहा कि इस उपग्रह को कम से कम 15 वर्षों तक संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है तथा यह आत्मनिर्भर भारत का एक और शानदार उदाहरण है। उन्होंने कहा कि इसरो वैज्ञानिकों को मिशन में कठिनाई का सामना करना पड़ा, क्योंकि मौसम अनुकूल नहीं था, लेकिन उन्होंने कड़ी मेहनत की और सफलता सुनिश्चित की। रविवार के प्रक्षेपण से पहले, भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भारी उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए फ्रांस स्थित एरियनस्पेस द्वारा प्रदान किए गए एरियन रॉकेटों की मदद से फ्रेंच गुयाना स्थित कौरू प्रक्षेपण केंद्र की सेवाओं का उपयोग कर रही थी। पांच दिसंबर, 2018 को इसरो ने फ्रेंच गुयाना से एरियन–5 वीए–246 रॉकेट के जरिए 5,854 किलोग्राम वजनी अपने सबसे भारी संचार उपग्रह जीसैट–11 को प्रक्षेपित किया था। दो ठोस मोटर 'स्ट्रैप–ऑनश् (एस200), एक द्रव प्रणोदक कोर चरण (एल110) और एक क्रायोजेनिक चरण (सी25) वाला तीन चरण वाला एलवीएम 3–एम5 रॉकेट इसरो को जीटीओ में 4,000 किलोग्राम तक वजन वाले भारी संचार उपग्रहों को प्रक्षेपित करने में पूर्ण आत्मनिर्भरता प्रदान करता है। एलवीएम3– को इसरो के वैज्ञानिक भू–समकालिक उपग्रह प्रक्षेपण यान (जीएसएलवी) एमके3 भी कहते हैं। इसरो के वैज्ञानिकों ने मिशन के उद्देश्यों, लक्षित कक्षा, ऊंचाई आदि के आधार पर प्रक्षेपण यानों को वर्गीकृत

किया है। इसरो द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रक्षेपण यानों में ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी), जीएसएलवी) और एलवीएम3 (प्रक्षेपण यान मार्क–3) शामिल हैं। अंतरिक्ष एजेंसी 1999 से ग्राहकों के उपग्रहों के लिए श्रीहरिकोटा से प्रक्षेपण सेवाएँ प्रदान करती रही है। मिशन की सफलता में अपनी विश्वसनीयता के कारण, पीएसएलवी इसरो के वैज्ञा. निकों के लिए एक विश्वसनीय रॉकेट रहा है। पीएसएलवी एक बहु–उपयोगी प्रक्षेपण यान रहा है और लगभग 1,750 किलोग्राम का पेलोड ले जा सकता है। रविवार के मिशन के संदर्भ में, एलवीएम3 रॉकेट का महत्व इसलिए भी है, क्योंकि इसने भारतीय धरती से भारी संचार उपग्रह का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है। इसरो ने बताया कि एलवीएम3–एम5 पाँचवीं अभियानगत उड़ान है। एलवीएम3 यान को सी25 क्रायोजेनिक चरण सहित पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक से विकसित किया गया है। इसरो ने बताया कि दिसंबर 2014 में प्रक्षेपित पहली विकास उड़ान 'एलवीएम–3 क्रू मॉड्यूल एटमॉस्फेरिक री–एंट्री एक्सपेरिमेंटश(केयर) से लेकर सभी सफल प्रक्षेपणों का इसका रिकॉर्ड रहा है। इसरो ने कहा कि महत्वाकांक्षी गगनयान मिशन के लिए अंतरिक्ष एजेंसी ने 'मानव रेटेड एलवीएम 3 रॉकेट की प्रक्षेपण यान के रूप में योजना बनाई थी, जिसे एचआरएलवी नाम दिया गया है। एलवीएम3 यान अपने शक्तिशाली क्रायोजेनिक चरण के साथ 4,000 किलोग्राम वजन का पेलोड जीटीओ तक तथा 8,000 किलोग्राम वजन का पेलोड पृथ्वी की निचली कक्षा तक ले जाने में सक्षम है। एलवीएम–3 रॉकेट ने इससे पहले चंद्रयान–3 का सफल प्रक्षेपण किया था, जिसके जरिये भारत 2023 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरने वाला पहला देश बन गया। उस उपग्रह का वजन 3841.4 किलोग्राम था।

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने भारतीय नौसेना को बधाई दी

भारत के उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने संचार उपग्रह सीएमएस–03 के सफल प्रक्षेपण पर इसरो और भारतीय नौसेना को हार्दिक बधाई दी है।उपराष्ट्रपति ने इस उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि भारत के शक्तिशाली एलवीएम3–एम5 रॉकेट ने एक बार फिर आकाश की ओर उड़ान भरी और भारतीय नौसेना के सबसे भारी और सबसे उन्नत संचार उपग्रह जीसैट–7आर (सीएमएस–03) को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटी. ओ) में सफलतापूर्वक स्थापित किया। उन्होंने कहा कि स्वदेश में विकसित यह उपग्रह हिंद महासागर क्षेत्र में अंतरिक्ष–आधारित संचार, संपर्क और समुद्री डोमेन जागरूकता को मजबूती देगा। उन्हा. ने कहा कि यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक और गौरवपूर्ण मील का पत्थर होगा। भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के समर्पित प्रयासों की सरा. हना करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि इसरो अंतरिक्ष अन्वेषण में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करना जारी रखे हुए है।

प्रधानमंत्री ने ग्रह सीएमएस-03 के सफल प्रक्षेपण पर इसरो को बधाई दी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के सबसे भारी संचार उपग्रह सीएमएस–03 के सफल प्रक्षेपण पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को बधाई दी है। एक्स पर एक पोस्ट में प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारा अंतरिक्ष क्षेत्र हमें निरंतर गौरवान्वित कर रहा है। भारत के सबसे भारी संचार उपग्रह सीएमएस–03 के सफल प्रक्षेपण पर इसरो को बधाई। यह सराहनीय है कि अंतरिक्ष वैज्ञानिकों द्वारा संचालित हमारा अंतरिक्ष क्षेत्र उत्कृष्टता एवं नवाचार का पर्याय बन चुका है।उनकी सफलताओं ने राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाया है और अनगिनत लोगों को सशक्त बनाया है।

.प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

आजादी के बाद पहली बार बिहार में रिकॉर्ड 68-79 फीसदी हुआ मतदान

शक्ति प्रकाश
बिहार ब्यूरो प्रमुख

पटना। गुरुवार को बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण में उत्साहजनक लोकतांत्रिक आंकड़ा देखने को मिला। 121 निर्वाचन क्षेत्रों में प्रभावशाली मतदान हुआ। पहले चरण का मतदान–प्रतिशत 64.69 है, जो सभी मतदान बूथों से पूरा डेटा सामने आने पर और बढ़ सकता है। पिछले चार चुनावों, विधानसभा और आम चुनाव में इन्हीं निर्वाचन क्षेत्रों में हमेशा 55.4 फीसदी और 55.85 फीसदी के बीच मतदान दर्ज हुआ है। लगभग नौ फीसदी अंकों का उछाल निर्वाचन प्रक्रिया के साथ रिश्ते में नयी ऊर्जा का संकेत है। आंकड़े एक ज्यादा दिलचस्प कहानी सामने लाते हैं। विशेष गहन पुन. रीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया में पंजीकृत मतदाता आम चुनाव 2024 में 3.88 करोड़ के मुकाबले घटकर अब 3.73 करोड़ रह गये हैं। इसके बावजूद, वास्तविक मतदाता संख्या 2.15 करोड़ से बढ़कर 2.42 करोड़ (अंतरिम) हो गयी। प्रत्याशित रूप से, सत्तारूढ़ गठबंधन ने इस बढ़ो. तरी को वर्तमान सत्ता–समर्थक लहर बताते हुए, झटपट इसका श्रेय लोकप्रिय कल्याणकारी योजनाओं को दे दिया है। वहीं विपक्ष ने इसकी व्याख्या वर्तमान सत्ता–विरोधी भावना और बदलाव की चाहत के रूप में की है। हालांकि, सिर्फ मतदान के आंकड़ों से पक्का निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी। अकाद. मिक अध्ययनों ने दिखाया है कि बढ़ी हुई मतदाता भागीदारी और विधानसभा चुनावों में वर्तमान सत्ता–समर्थक या–विरोधी लहर के बीच बहुत थोड़ा सह– संबंध रहा है। लेकिन अलग–अलग डेटा एक समझ प्रदान कर सकता है। महिलाओं की भागीदारी में छलांग से नीतीश कुमार–नीत सरकार द्वारा चुनाव की पूर्व–संध्या पर लागू नकद हस्तांतरण योजनाओं के असर की पुष्टि हो सकती है। इसके उलट, बढ़ा हुआ युवा मतदान इस राज्य में बदलाव की तड़प का प्रतिबिंब हो सकता है, जहां बेरोजगारी और बड़े पैमाने पर प्रवासन एक स्थायी चिंता बनी हुई है। लेि कन भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने लिंग–आधारित मतदान के आंकड़े अभी तक जारी नहीं किये हैं और ऐसे विश्लेषणों को अटकलों के सहारे छोड़ रखा है। निर्विवाद यह लगता है कि एसआईआर प्रक्रिया को लेकर बढ़े विमर्श ने एक भूमिका निभायी। ऐसा जान पड़ता है कि विपक्ष की मतदाता अधिकार यात्रा और मतदाता सूची के मुद्दे पर लगातार फोकस ने नागरिकों को अपने मताधिकार की पवित्रता के प्रति जागरूक बनाया है। मतदान से एक दिन पहले, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने हरियाण ा में मतदाता सूची में विसंगतियों को लेकर चिंता पेश की और आयोग द्वारा अपर्याप्त कार्रवाई का आरोप लगाया। बिहार का पहले चरण का मतदान एक काम का सबक देता है कि निर्वाचन प्रक्रियाओं से जुड़ी चिंताओं का निवारण महज आलोचना के जरिए नहीं, बल्कि सांगठनिक मशीनरी को पंजीकरण और भ. ागीदारी के बारे में मतदाताओं को शिक्षित व उत्साहित करने के लिए लामबंद करके ही किया जा सकता है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के लिए अच्छा होगा कि वे चुनाव की विश्वसनीयता के बारे में अपनी चिंताओं को व्यवस्थित जमीनी काम में ले जाएं जिससे नाग. रिक अपने लोकतांत्रिक अधिकारों पर दावेदारी के लिए सशक्त बनें दृ यह रणनीति लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करते हुए मतपेटी में संभवत: ठोस नतीजे दे सकती है।

पहले चरण में रिकॉर्ड मतदान की वजह कहीं एसआईआर तो नहीं

बिहार विधानसभा चुनाव में पहले चरण के तहत 121 सीटों पर रिकॉर्ड 64.66 प्रतिशत वोटिंग हुई। छह नवंबर को हुए पहले चरण के मतदान के साथ ही तेजस्वी यादव, तेज प्रताप यादव और सम्राट चौधरी सहित 1314 उम्मी.

दवारों की किस्मत ईवीएम में कैद हो गई है। सिर्फ विधानसभा नहीं बल्कि 1952 से अब तक हुए लोकसभा चुनावों की तुलना में भी 2025 विधानसभा सभा चुनाव के पहले चरण में सर्वाधिक मतदान हुआ। भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने इसे ऐतिहासिक मतदान बताया। आकड़ों की बात करें तो साल, 1951–52 से 2020 तक हुए विधानसभा चुनावों में मतदान प्रतिशत केवल तीन बार ही 60 प्रतिशत से अधिक रहा। 1990 में 62.04 प्रतिशत मतदान हुआ था, वहीं 1995 और 2000 में क्रमशः 61.79 व 62.57 प्रतिशत मतदान दर्ज हुआ था। लेकिन 2025 विधानसभा चुनाव के पहले चरण में बिहार की 243 विधानसभा सीटों में 18 जिलों की 121 सीटों पर तीन करोड़ 75 लाख मतदाताओं ने 64.66 प्रतिशत वोट दिया। जो साल 2020 में हुए पहले चरण के 56.1 प्रतिशत मतदान की तुलना में लगभग आठ प्रतिशत अधिक है। ये अलग बात है कि उस बार पहले चरण में 71 सीटों पर चुनाव हुए थे।

रिकॉर्ड मतदान के लिए स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन हो सकता है एक कारण

बिहार कुछ पत्रकार मानते हैं कि मत प्रतिशत बढ़ने के अलग–अलग कारणों में से एक कारण एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) हो सकता है। वह कहते हैं कि लगभग आठ परसेंट वोट मृत, डिस्प्लेस और नॉन एग्जिस्टिंग वोटर्स की वजह से कटे। ऐसे में जहां मत घटा तो मत प्रतिशत बढ़ा है। वह कहते हैं, एक संभावना एसआईआर के लिए चली दो महीने की प्रक्रिया भी है। इस दौरान डर की वजह से लोग अलर्ट हुए, जो मतदाताओं को बूथ तक लाने के लिए जिम्मेदार हो सकता है। जो मत प्रतिशत बढ़ने का एक और कारण हो सकता है। वहीं चुनाव विश्लेषकों का कहना है कि बढ़ा हुआ आठ प्रतिशत मतदान एसआईआर के कारण हुए डिलीशन का परिणाम हो सकता है। वह कहते हैं कि मत प्रतिशत बढ़ने के लिए एसआईआर में मतदाताओं का नाम हटना एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। जून 2025 में बिहार में कुल 7.89 करोड़ मतदाता थे। लेकिन एसआईआर के बाद 30 सितंबर को जब फाइनल लिस्ट जारी हुई तो मतदाता 6 प्रतिशत घटकर 7.42 करोड़ हो गए। पिछले कई चुनावों से मतदाता जागरुकता अभियान चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता रूपेश कहते हैं कि एसआईआर के बाद मतदाताओं के एक तबके में उत्सुकता तो बढ़ी है। लोग मतदान के बहाने अपनी आधिकारिक मौजूदगी साबित करना चाहते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि कि वोट फीसदी बढ़ने के पीछे एंटी इनकम्बेंसी भी एक कारण हो सकती है क्योंकि प्रोइनकम्बेंसी इतनी तादाद में मतदाताओं को बूथ तक नहीं ला सकती। लेकिन ऑनलाइन सर्वे एजेंसी पीपल्स पल्स से जुड़े डेटा विश्लेषक डॉ. राजन पांडे कहते हैं कि एसआईआर इसका एक कारण है, मतलब अब हम रेंडम एग्जांपल्स के माध्यम से इतना कह सकते हैं कि लोगों में डर फैला है कि अगर हमने वोट नहीं दिया तो कल्याणकारी योजनाओं से हमारा भुगतान कट जाएगा। उनका मानना है कि ये डर सिर्फ मुस्लिमों में नहीं है बल्कि अति पिछड़ों में भी है क्योंकि कल्याणकारी योजनाओं का एक बड़ा लाभ उनको भी मिलता है। डॉ। राजन पांडे कहते हैं कि हमारे पास बढ़े हुए मत प्रतिशत का अभी ब्रेकअप नहीं है कि इसमें पुरुष और महिला कितने हैं? वो ब्रेकअप बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि महिला वोटर का बढ़ना सामान्य तौर पर बिहार में प्रो नीतीश से जोड़ा जाता रहा है।

मत प्रतिशत बढ़ने में महिला मतदाताओं की भागीदारी

बिहार में बढ़े मतदान और इसमें महिला मतदाताओं की भागीदारी के सवाल पर डॉ। राजन पांडे कहते हैं, एक वजह तो जीविका ही है, वो पहले से ही भारत में जितने भी स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन हैं उनमें टॉप थ्री या टॉप फाइव में आती ही हैं, जिनकी पहुंच बहुत मजबूत है। चुनावी जानकारी कहते हैं कि जीविका के माध्यम से इस दौरान महिलाओं के खाते में काफी पैसा गया है। दूसरी तरफ महिला वोट बैंक अगर उत्तर भारत के किसी राज्य में है तो बिहार में है। जिसका लिंकेज बहुत मजबूती से नीतीश कुमार के साथ है। वह कहते हैं नीतीश कुमार के जो भी कदम रहे हैं चाहे शराबबंदी हो, चाहे जीविका हो या और भी चीजें जिनमें लड़कियों के लिए साइकिल भी। मतलब शुरू से ही उन्होंने महिला वोट बैंक को साधा है। वहीं लोगों का मानना है कि महिलाओं के खाते में नीतीश सरकार के दिए गए दस हजार रुपए भी शायद उन्हें मतदान केंद्र तक लाने की एक बड़ी वजह हो सकती है।लेकिन राजन पांडे एक दूसरी संभावना की बात भी कहते हैं, ट्रेडिशनली देखें तो हायर वोटर टर्नआउट को टर्नआउट फॉर चेंज माना जा सकता है। हायर वोटर टर्नआउट मतलब बदलाव होगा, लेकिन इसको थंब रूल नहीं मान सकते।

बढ़े मत प्रतिशत में प्रवासियों की भूमिका

बिहार प्रवासियों का राज्य रहा है। ऐसे में बिहार विधानसभा चुनाव में मत प्रतिशत बढ़ने में प्रवासियों की भूमिका को लेकर सवाल उठना लाजिम है। डॉ.राजन पांडे कहते हैं कि बिल्कुल, छठ पूजा के आसपास ही चुनाव रखा जाता रहा है ताकि छठ में लोग आएं तो फिर कुछ समय और रुक कर वोट करके चले जाएं। हालांकि, इस बार गैप काफी लंबा था लेकिन सामान्यतः व्यक्ति अगर इतनी मशक्कत करके छठ में आता है तो अपने पैतृक घर में ठहरता है। ऐसे प्रवासी मतदाता फेस्टिवल सीजन में राजनितिक दलों को आकर्षित करते हैं। अगर ऐसा है तो क्या मत प्रतिशत बढ़ने के पीछे राजनीतिक दलों की सक्रियता भी है? इस सवाल पर राजन पांडे कहते हैं कि इस दिशा में अभी तक सिर्फ ये दिखा है कि बीजेपी ने हरियाणा से कुछ लोगों को वोट देने के लिए बिहार भेजा है। लेकिन अन्य राजनीतिक दलों में न तो आरजेडी, न जेडीयू और न कांग्रेस किसी का ऐसा उदाहरण नहीं दिखा। वहीं एक पत्रकार का मानना है कि जो प्रवासी आए उन्होंने अपने पैतृक घरों पर ठहर कर अपने मत अधिकार का इस्तेमाल किया। उनके ठहरने का कारण बिहार में धान की खड़ी फसल भी है, जिसे काटने के लिए भी लोग बड़ी संख्या में ठहरे हैं।

राजस्थान की डिजिटल क्रांति, डीबीटी ने बचाए हजारों करोड़, बना नंबर-1 राज्य

रानू पाठक
राजस्थान ब्यूरो प्रमुख

वित्तीय समावेशन में राजस्थान देश में नंबर–वन बना। डीबीटी से 57 लाख फर्जी लाभार्थी हटे, जिससे 3,425 करोड़ की बचत हुई। अभियान में 1 करोड़ से अधिक नागरिक लाभान्वित हुए, और 8.5 लाख से अधिक जनधन खाते खोले गए। राजस्थान ने एक बार फिर समावेशी विकास का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया है। भारत सरकार के 1 जुलाई से 30 सितंबर 2025 तक चले देशव्यापी वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुरक्षा संतृप्ति अभियान में राजस्थान ने देशभर में पहला स्थान हासिल किया है. इस अभियान में नीति, तकनीक और जनभागीदारी के संगम ने पारदर्शिता के नए मानक स्थापित किए हैं।

57 लाख फर्जी लाभार्थी हटे, हुई 3425 करोड़ की बचत

इस अभियान का सबसे बड़ा परिणाम प्रशासनिक शुचिता के रूप में सामने आया है। राज्य सरकार ने सभी सरकारी सहायता, जैसे पेंशन, छात्रवृत्ति, बीमा, खाद्य सुरक्षा और कृषि सब्सिडी, को सीधे आधार–लिंक्ड बैंक खाता में ट्रांसफर करना शुरू किया। इस व्यवस्था के कारण 57,03,608 फर्जी और डुप्लीकेट लाभार्थियों का खुलासा हुआ, जो वर्षों से योजनाओं का लाभ उठा रहे थे, पर असल में पात्र नहीं थे। इन फर्जी नामों को हटाने से राज्य सरकार को 3,425.89 करोड़ रुपए की भारी बचत हुई है। 6 अक्टूबर 2025 तक राजस्थान में एक करोड़ से अधिक नागरिक इस अभियान से लाभान्वित हो चुके हैं, जो देश में सबसे अधिक है।

बैंकिंग से वंचितों को जोड़ा

वित्तीय समावेशन के तहत, राज्य ने बैंकिंग सुविधाओं से वंचित नागरिकों को मुख्यधारा में लाने का भी उल्लेखनीय काम किया। अभियान के दौरान 8,56,931 नए प्रधानमंत्री जनधन खाते खोले गए। 30 जून 2025 तक राज्य में 3.71 करोड़ जनधन खाते सक्रिय थे। वहीं सरकार ने 16,63,458 निष्क्रिय जनधन खातों को पुनः चालू करने के लिए री–केवाईसी अभियान चलाया। लाखों नागरिक अब दुर्घटना और जीवन बीमा सुरक्षा के दायरे में आ चुके हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लेनदेन और बचत में वृद्धि हुई है। कुलगुरु प्रो. राय ने कहा कि सरकार ने नीति, तकनीक और जनता के इस संगम से वित्तीय समावेशन को एक आंदोलन का रूप दिया है, जिससे बिचौलियों पर पूरी तरह रोक लगी है और लाभ सीधे जरूरतमंदों तक पहुंच रहा है।

राजस्थान की आशा कार्यकर्ताएं हुई हाईटेक

एक समय था जब राजस्थान की आशा कार्यकर्ताओं को हर घर–भ्रमण, हर जाँच और हर परामर्श सत्र को दर्ज करने के लिए जटिल कागजी कार्यवाही से गुजरना पड़ता था।पारिश्रमिक का भुगतान अक्सर देर से मिलता था, रजिस्टर हाथ से भरने पड़ते थे, और जितना समय वे मरीजों

की मदद करने में लगातीं, लगभग उतना ही समय दस्तखत करने और कागज पूरे करने में चला जाता था। यह स्थिति तब बदली जब प्रदेश ने यूएनसीडीएफ नाम का ऑनलाइन मंच शुरू किया। इससे आषा कार्यकर्ताओं के काम की निगरानी व भुगतान, दोनों अधिक तेज और सुगम हो गए।इसके बाद 2022 में गर्भावस्था, शिशु देखभाल एवं निगरानी तथा स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन (पीसीटीएस) ऐप जोड़ा गया, जिससे सेवा–आधारित प्रोत्साहनों का प्रबंधन भी आसान हो गया। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के भुगतान के डिजि. टल एकीकरण के लिए नीतियां और रणनीतियाँ तैयार करने में पीसीटीएस ने राज्य अधिकारियों व अन्य हितधारकों के साथ मिलकर काम किया। और अधिक बदलाव तब आया जब प्रदेश के एनसीडी विभाग ने गैर–संक्रामक रोगों से जुड़े जांच, निरन्तर निगरानी व कार्रवाई और मरीज सहायता जैसे प्रोत्साहनों को भी इसी डिजिटल व्यवस्था से जोड़ दिया। आषा साफ्ट और पीसीटीएस को एक साथ मिला दिए जाने के साथ, आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (एबीएसए) –यानि 14 अंकों की डिजिटल स्वास्थ्य पहचान (आइडी) – जुड़ने से, आषा कार्यकर्ता अब सेवाएं आसानी से ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं व पर्यवेक्षक मरीजों की स्थिति वास्तविक समय में देख सकते हैं।

कार्यकर्ताओं व मरीजों दोनों के लिए बेहतर

2024 तक डब्ल्यूएचओ और अन्य साझीदारों की मदद से सफल पायलट परियोजनाओं के बाद, यह प्रणाली पूरे राजस्थान में लागू हो गई। जिन भुगतानों में पहले सप्ताहों का समय लग जाता था, अब वे तेजी से, स्वतः और पारदर्शिता के साथ आषा कार्यकर्ताओं तक पहुंच रहे हैं।

राजस्थान में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के निदेशक डॉक्टर अमित कुमार यादव कहते हैं, आभा साफ्ट को एनसीडी प्रोत्साहनों से जोड़कर राजस्थान ने दक्षता और सशक्तिकरण का एक नया मानक स्थापित किया है. इस पहल ने समय पर भुगतान सुनिश्चित किए हैं, जवाबदेही बढ़ाई है और लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में मदद की है। एक अहम फैसला यह था कि नई व्यवस्था शुरू होने पर पि. छले 12 महीनों की जांच और निरन्तर निगरानी व कार्रवाई का डेटा भी दर्ज किया गया। इससे आषा कार्यकर्ताओं के, अतीत में किए गए काम को मान्यता मिली और रिपोर्टिंग की सटीकता में बड़ा सुधार आया। अधिकारियों का मानना है कि इसी कदम ने इस प्रयास को सचमुच रूपान्तरकारी बना दिया है। भारत में डब्ल्यूएचओ की कार्यकारी प्रति. निधि पेयडन के अनुसार, राजस्थान में

डिजिटल मंच के एकीकरण ने स्वास्थ्य व्यवस्था की काम करने की क्षमता को काफी बढ़ाया है। इससे निरन्तर निगरानी व कार्रवाई तेज हुई है, निगरानी बेहतर हुई है और स्वास्थ्य नतीजों को मापना आसान हुआ है।इस बदलाव के नतीजे भी बहुत जल्दी सामने आए। भारत में स्वास्थ्यकर्मियों के भुगतान की डिजिटल व्यवस्था ने गैर–संचारी रोगों के प्रबंधन को गति दी है। भुगतान प्रणाली त्वरित हुई। आशा कार्यकर्ताओं के लिए यह बदलाव सिर्फ आंकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि सीधे उनके जीवन और काम से जुड़ा है।

राजस्थान के राज्य NCD नोडल अधिकारी डॉक्टर सुनील सिंह बताते हैं, आशा साफ्टवेयर ने हमारी भुगतान प्रणाली में क्रान्ति ला दी है। स्वचालन ने समय पर भुगतान सुनिश्चित किए हैं, जिससे पहले होने वाली देरी दूर हो गई है।डब्ल्यूएचओ ने नीतियाँ सुधारने, प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाने और स्थानीय भाषा में आसान वीडियो शिक्षण सामग्री तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इससे डिजिटल प्रणाली सीखना आशा कार्यकर्ताओं के लिए कहीं ज़्यादा सरल हो गया। पहले जिला स्तर पर आशा समन्वयकों को प्रशिक्षित किया गया, और फिर उन्होंने ब्लॉक और गाँव स्तर पर अन्य आशा कार्यकर्ताओं को सिख. ाया और उनका मार्गदर्शन किया।आज राजस्थान की यह डिजिटल व्यवस्था सिर्फ भुगतान तेज करने तक सीमित नहीं है। यह गैर–संक्रामक रोगों की देखभाल को मजबूत कर रही है, मरीजों के लिए निरन्तर निगरानी व समय पर कार्रवाई सुनिश्चित कर रही है, और आशा कार्यकर्ताओं को उनके काम के अनुरूप सम्मान और स्थिरता दे रही है।जो पहल कभी एक तकनीकी सुधार के रूप में शुरू हुई थी, वह अब इस बात का बड़ा उदाहरण बन गई है कि डिजिटल नवा. चार किस तरह सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है, अग्रिम पंक्ति में काम करने वाली महिलाओं को सशक्त बना सकता है, और जरूरी सेवाओं में तेजी के साथ–साथ गरिमा भी ला सकता है।

पंजाब के पूर्व डीजीपी के बेटे की मौत मामले ने सबको कर दिया सन्न

मौत से पहले बनाए वीडियो ने पिता पर लगाया अपनी बीबी से रिलेशन में रहने का आरोप

पंजाब के पूर्व डीजीपी मोहम्मद मुस्तफा के बेटे की मौत मामले ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। हालांकि अब मामले की जांच अब सीबीआई को दे दी गई है। सीबीआई ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। जांच एजेंसी ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 103(1) और 61 के तहत 4 लोगों को आरोपी बनाया है। इनमें मोहम्मद मुस्तफा (पूर्व डीजीपी, पंजाब), रजिया सुल्ताना (पूर्व मंत्री, पंजाब), मृतक की पत्नी और मृतक की बहन शामिल है। अब सीबी. आई इस पूरे मामले की गहराई से जांच करेगी। हालांकि मुस्तफा के बेठे अकील ने मौत से पहले बनाए वीडियो में पिता पर गंभीर आरोप लगाए। उसने कहा कि उसके पिता और उसकी पत्नी के बीच अवैध संबंध थे। इन संबंधों को उसने रंगे हाथों पकड़ भी लिया था। अगर सीबीआ. ई को जांच में ऐसा सही पाया गया तो पूर्व डीजीपी को लंबी सजा हो सकती है। पंजाब के पूर्व डीजीपी मोहम्मद मुस्. तफा और उनकी पत्नी और पूर्व मंत्री रजिया सुल्ताना, उनकी बहू और बेटी के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। यह केस उनके बेटे अकील की मौत के पांच दिन बाद हुआ है। यह केस पांच दिनों तक चर्चा का विषय नहीं था। अकील की मौत को आत्महत्या बताया गया। हालांकि जब उसके मोबाइल फोन की जांच हुई तो यह घटना चर्चित हो गई। वीडियो में अकील ने अपने पिता, मां, पत्नी और बहन पर आरोप लगाया था कि वे उसे मार डालेंगे। अकील का यह वीडियो लगभग 17 मिनट का है, इसमें उसने अपने परिवार पर कई गंभीर आरा. ेप लगाए हैं। अकील ने एक वीडियो में आरोप लगाया है कि उसके पिता और उसकी पत्नी के बीच संबंध थे और उसे जान का खतरा है। डीसीपी सृष्टि गुप्ता ने कहा कि मामले से जुड़े सभी पहल. ुओं की गहन और वैज्ञानिक जांच करने

के लिए एक एसीपी रैंक के अधिकारी की देखरेख में एक एसआईटी का गठन किया गया है।

अकील ने वीडियो में क्या कहा

'मैं आज 27 अगस्त 2025 को यह वीडियो बना रहा हूं, ताकि मेरे पास डॉक्यूमेंट हो जाए। मैंने अपने डैड और वाइफ का अफेयर पकड़ा है। काफी टाइम हो गया, लगभग 2 साल। यह काफी पहले हो जाना चाहिए था। शादी के तुरंत बाद 2018 में मैंने उन्हें पकड़ लिया था, बाथरूम में अपने रूम के ड्रेसिंग रूम में, फिर वह भाग गए थे सीढ़ियों से नीचे। मुझे डिटेन करवाया था। मेंटल ट्रामा में हूं। बहुत स्ट्रेस हूं। लगता है, कब क्या हो जाएगा।'

बहन पर लगाए गंभीर आरोप

मुझे फर्जी केस में फंसाने की साजिश हुई। मैंने खुद मेरी मां और बहन को पिता के साथ साजिश करते हुए सुना कि इसका कुछ इंतजाम करो। उन्होंने जो-जो आइडिया रखे, मैं बता नहीं सकता। बस उनका बस नहीं चल रहा है। पंचकुला पुलिस उनके अंडर नहीं है इसलिए उनके कहने पर नहीं चल रही। वह कहते हैं कि सरकार आएगी तो मुझे जेल भिजवा देंगे। 2012 में मैं सोनीपत से लॉ कर रहा था। तब मेरी बहन किसी के साथ भाग गई थी। बहन पर वैश्यावृति का आरोप लगाते हुए अकील ने कहा कि उसके पास रुपये कहां से आते थे?

पत्नी ने पहली बार को नहीं बनाए संबंध

मेरे डैड और वाइफ का अफेयर कहां से कब शुरू हुआ मुझे नहीं पता। लेकिन अब मैं जब सोचता हूं तो लगता है कि दोनों एक दूसरे को पहले से जानते थे। जब मेरी शादी हुई तो पहली रात को उसने मुझे हाथ नहीं लगाया। उसके अगले दिन सुबह मैंने उससे पूछा कि नहा लिया तो उसने मुझे टॉन्ट किया कि मेरे साथ नहाना था क्या? हम लोगों को लड़ाई हुई। मैं उसके घरवालों से नहीं मिला।

पिता और पत्नी के संबंध के बारे में सोचकर पागल हो जाता हूं

'मैं सोचता हूं तो पागल हो जाता हूं। इसकी शादी मुझसे नहीं, मेरे बाप से हुई है। मुझे जबरन रिहेबिलेशन सेंटर भेज दिया गया। कहते थे मेरी दिमागी हालत ठीक नहीं। अगर दिमागी हालत ठीक नहीं थी तो किसी मानसिक रोग विशेषज्ञ को दिखाते। कोई डॉक्टर को कभी नहीं दिखाया, बस रीहेबिलेशन सेंटर भेज दिया। वहां मेरी काउंसलिंग की गई। मुझे बार-बार कहा गया कि मन की बात शेयर करो। दिल-दिमाग में जो चल रहा है, शेयर करो। मैंने उन्हें अपने डैड और वाइफ के अफेयर के बारे में बता दिया। मेरे परिवार वालों तक यह बात पहुंची तो उन्होंने तुरंत मुझे वहां से निकाल लिया। उसके बाद मेरे गैंगस्टर्स से तालुकात बताकर पुलिस से उठवा दिया गया।'

जब पुलिस ने मुझे उठाया तो वह (डैड) हंस रहा था। मेरी बहन सारे रुपये लूटना चाहती है। मुझे मारते हैं। गालियां देते हैं। मुझे डराया कि अगर कुछ स्टेप लिया तो तेरे ऊपर रेप केस करा देंगे। तेरे ऊपर बहन का रेप करने का और मां का रेप करने का आरोप लगाएंगे। इनका प्लान चुनाव के बाद मेरे साथ एक्शन लेने का है। धमकी देते हैं कि मरवा देंगे। कुछ नहीं होगा। मैं डरा हुआ हूं। मैं अकेला हूं, ये तीन हैं। मैं कॉन्डम यूज करता था। वह प्रेग्नेंट कैसे हुई? मैंने अपनी पत्नी से पूछा था। इन लोगों ने मुझे मारने की कोशिश की। एक बार मरेल कोटला में मेरा सिर दर्द हो रहा था। तबीयत खराब हो गई। मुझे लगा बीपी इश्यू है। मैं पास के अस्पताल गया और ब्लड प्रेशर की दवा लेकर आया। अब मुझे लगता है कि मेरे साथ कुछ करने की कोशिश की गई थी। मैं इस लड़की से शादी नहीं करना चाहता था क्योंकि मुझे पॉजिटिव वाइब्स नहीं लग रही थीं लेकिन वह मेरे पैर में गिर गई।

रोने लगी, तब मैंने शादी की थी..

मुस्तफा ने क्या कहा

मुस्तफा ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि मैं एफआईआर दर्ज होने और एसआईटी गठित होने का स्वागत करता हूं। पुलिस को यह पहला कदम उठाना चाहिए। मेरे पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है। पुलिस द्वारा किए गए पोस्टमॉर्टम के आधार पर कहा गया है कि मौत ड्रग ओवरडोज के कारण हुई। मुझे भी यही संदेह है। वह लंबे समय से इसका (ड्रग्स का) सेवन कर रहा था और कई बातें कहता था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने वीडियो में ये बातें ड्रग्स के प्रभाव में कही हैं। अकील 16 अक्टूबर को अपने पंचकूला स्थित घर के कमरे में मृत पाया गया था। परिवार को किसी भी तरह की गड़बड़ी का संदेह नहीं था और उनका मानना था कि यह नशीली दवाओं के ओवरडोज से हुई मौत थी। मामले ने तब नया मोड़ ले लिया जब मृतक द्वारा अपनी मृत्यु से पहले कथित तौर पर सोशल मीडिया पर पोस्ट और वीडियो सामने आए, जिनमें उसके परिवार के सदस्यों पर चौंकाने वाले आ. रोप लगाए गए थे और दावा किया गया था कि उसे अपनी जान का खतरा है।

जानकारी के मुताबिक, अकील अख्तर की मौत 6 अक्टूबर 2025 को संदिग्. ध हालात में हुई थी। वह पंचकूला के सेक्टर–4 में मानसा देवी मंदिर के पास रहते थे। उनके पिता का नाम मोहम्मद मुस्तफा है और मां का नाम रजिया सुल्ताना हैं, जो पंजाब सरकार में पूर्व पीडब्ल्यूडी मंत्री रह चुकी हैं।

बताया जा रहा है कि अकील अख्तर का अपने परिवार से लंबे समय से झगड़ा चल रहा था। उन्होंने 27 अगस्त को सोशल मीडिया पर एक वीडियो पोस्ट किया था, जिसमें उन्होंने चौंकाने वाले आरोप लगाए थे। वीडियो में अकील ने कहा था कि उन्हें अपने पिता और अपनी पत्नी के बीच अवैध संबंधों का पता चला है। उन्होंने ये भी दावा किया था कि उनका पूरा परिवार, जिसमें उनकी मां और बहन भी शामिल है। उन्हें मारने या किसी झूठे केस में फंसाने की साजिश रच रहा है।

केस की जांच कर रही है सीबीआई

केंद्र सरकार के आदेश के बाद अब सीबीआई ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। जांच एजेंसी ने भ. ारतीय न्याय संहिता की धारा 103(1) और 61 के तहत 4 लोगों को आ. रोपी बनाया है। इनमें मोहम्मद मुस्तफा (पूर्व डीजीपी, पंजाब), रजिया सुल्ताना (पूर्व मंत्री, पंजाब), मृतक की पत्नी और मृतक की बहन शामिल है। अब सीबीआई इस पूरे मामले की गहराई से जांच करेगी।

.प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

मुस्लिम परिवार 158 साल से करा रहा है रामलीला

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 71 किलोमीटर दूर इन्हौना में सफेद और लाल रंग की अपनी भव्य हवेली से महज पचास मीटर की दूरी पर 25 एकड़ में हर साल दशहरा मेला लगता है। ताज्जुब की बात यह है कि यह रामलीला की आयोजन किसी हिंदू भाई की ओर से नहीं बल्कि हवेली में रहने वाला मुस्लिम परिवार की कराता है। इस रामलीला को देखने के लिए हिंदुओं के साथ मुस्लिम लोग और महिलाएं भी देखने को आती है। अगर कहा जाए तो यहां की तस्वीर हिंदू और मुस्लिम एकता की मिसाल है। चौधरी शुजा पेशे से बैंकर हैं, लेकिन यहां उनका रोल कुछ अलग है। वे और उनका परिवार इस दशहरा मेला के आयोजक हैं। ये परम्परा चौधरी शुजा के परदादा चौधरी अकबर हुसैन ने 1867 में शुरू की थी, जो आज 158 साल बाद भी जारी है। अब दशहरा मेला और रामलीला कराने की जिम्मेदारी चौधरी मोहम्मद शुजा और उनका परिवार निभा रहा है।

मोहम्मद शुजा बताते हैं कि हम 158 साल से दशहरा मेला करते आ रहे हैं। हमारी छठी पीढी इसे आगे बढ़ा रही है। भगवान राम को हम उसी तरह मानते हैं जैसे अपने यहाँ पैगम्बर हैं। उन्होंने अच्छाई की राह दिखाई, हमें उनकी उतनी ही इज़्जत है। चाहे जितने भी मसरूफ हों, हम वक्त निकालकर अपनी जमीन पर रामलीला और मेला कराते हैं। शुजा की पत्नी निदा अमीना दावा करती हैं कि हमें नहीं लगता कि ऐसा कहीं और होता होगा। हमारे लिए ये बहुत कीमती चीज है। हम इसे अपना ही त्योहार समझ कर मनाते हैं। यही नहीं होली की शुरुआत भी हमारे घर से होती है। पंडित जी आते हैं जंत्री निकालते है और पहले रंग यहां खेला जाता है, फिर पूरे गाँव में होली मनाई जाती है।

दशहरे के दस दिन बाद आयोजन

चौधरी खानदान के चौधरी फव्वाद हुसैन पुराने दिनों को याद करते हैं कि हम बहुत छोटे हुआ करते थे तब राम जी, सीता जी और लक्ष्मण जी को यहाँ तैयार किया जाता था और इस हवेली में रावण आगे आगे जाता था ढोल नगाड़ों के साथ और तीन चार हाथियों पर राम जी और सीता जी और दूसरे किरदार जाते थे। ये राजा रामचन्द्र जी की विजय का त्योहार है, वो हिंदुस्तान के राजा थे और हिन्दू मुस्लिम सबके राजा थे, तो ये सबका त्योहार है, ये हमारी संस्कृति है, हमारी हिस्ट्री है। देश भर में दशहरा मेला और रामलीला होती है लेकिन इन्हौना की रामलीला सिर्फ इसलिए खास नहीं है कि इसे चौधरी खानदान कराता है, इसकी खासियत ये भी है कि बड़े पैमाने पर मुसलमान यहां आते हैं और रामलीला देखते हैं। इतना ही नहीं इस रामलीला का आयोजन दशहरा के अमूमन दस दिनों बाद होता है। इस साल का आयोजन 11 और 12 अक्तूबर को हुआ था। दो दिन चलने वाले इस मेले में हर साल आस–पास के इलाकों से करीब पच्चीस हजार लोग आते हैं। इस मेले की लोकप्रियता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इसमें एक हजार से ज़्यादा दुकानों लगती हैं जिनमें खाने पीने से लेकर

मिट्टी के खिलौने तक बिकते हैं।इन्हौना यूपी के अमेठी जिले का छोटा सा कस्बा है। पच्चीस हजार की आबादी वाले इन्हौना की करीब चालीस फीसदी आबादी हिंदुओं की है। लेकिन सबसे बड़ी बात ये है कि दशहरे के 158 साल के अब तक के इतिहास में कभी भी यहाँ दशहरे मेले और रामलीला का विरोध नहीं हुआ।

रामलीला को देखने में बडी संख्या में मुस्लिम परिवार पहुंचते हैं

12 अक्तूबर के दिन मैदान में भीड़ ठसाठस भरी थी। स्टेज पर रामचरितमानस का सुंदरकांड चल रहा था। हनुमान जी लंका पहुंचे हैं और लंका दहन का दृश्य चल रहा है। मैदान के बीचोंबीच में 40 फीट ऊंचा रावण का पुतला है जिसमें राम और लक्ष्मण तीर से आग लगाते हैं।चौधरी मोहम्मद शुजा भी वहीं मौजूद हैं, उनके साथ कई मुस्लिम परिवार, जिनमे बुर्का पहने औरतें रामलीला की तस्वीरें और सेल्फी ले रही हैं। 40 फीट का रावण का पुतला भी चौधरी मोहम्मद शुजा के घर पर ही तैयार होता है। निदा बताती हैं कि रामलीला की तैयारियां कई दिन पहले से शुरू हो जाती हैं। सबसे पहले हवेली में रावण बनना शुरू होता है। रावण को सजाने के लिए पेपर लाना हो, सजावट करनी हो या कॉस्ट्यूम तैयार करना हो, सब हम लोग ही करते हैं। यहां रामलीला करना कलाकारों के लिए भी एक अलग एहसास है। रामलीला के डायरेक्टर इन्द्रसेन मौर्या कहते हैं कि सबसे बड़ी बात ये है कि चौधरी साहब मुस्लिम होते हुए भी दशहरा इतने धूमधाम से मनाते हैं। पहले यहां मुस्लिम कलाकार भी रामलीला में रोल करते थे। सबसे अच्छा ये लगता है कि बड़ी तादाद में मुस्लिम समाज भी यहां रामलीला देखने आता है। इन्हौना के मेले में आये 65 साल के श्रीगोपाल गुप्ता कहते हैं कि इस मेले में हमलोग बचपन से आ रहे हैं। देश मे आज जब लोग जात पात और धर्म के नाम पर बंट रहे हैं, वहां चौधरी खानदान गंगा जमुनी तहजीब की मिसाल कायम कर रहा है। इस मेले से हर तबके के लोगो को जोड़ने का काम होता है। किसी को रोजी मिलती है तो किसी को आनन्द। वहीं 50 साल के विनय कुमार सरोज कहते हैं कि बचपन में इस मेले की अहमियत नहीं समझता था। लेकिन अब समाज में तनाव और अलगाव बढ़ता देखता हूँ तो लगता है कि ऐसे मेले की बहुत ज़्यादा जरूरत है। निदा भी मानती हैं कि, ष्आज जब कम्युनल टेंशन और डिवाइड इतने बढ़ रहे हैं तो माहौल को देखते हुए ये थोड़ा मुश्किल हो गया है। लेकिन अब हमें लगता है कि इस मेले को जारी रखने की हमारी जिम्मेदारी और बढ़ गई है।

यहां हिन्दू मुसलमान का कोई फर्क नहीं

*मोहम्मद शुजा भीड़ देखकर काफी खुश हैं, कहते हैं कि इन डेढ़ सौ सालों में कभी किसी ने विरोध नहीं किया कि हम दशहरा मेला क्यों कर रहे हैं। मेले में बीते पांच दशक से देखने वाले मोहम्मद शमीम पुराने जमाने को याद करते हैं कि हमारे चौधरी अख़्तर हुसैन साहब बाकायदा पूरी चौपाइयों को पढ़ते थे और रामलीला को गाइड करते थे। यहां हिन्दू मुसलमान का कोई फर्क नहीं है। यहां ईद की नमाज के बाद सैकड़ों हिन्दू मस्जिद के बाहर इत्र लिए खड़े रहते हैं, नमाज के बाद सबके गले लगाकर इत्र लगाते हैं। चौधरी खानदान सिर्फ रामलीला कराता ही नहीं है बल्कि उससे सीख भी लेता है। चौधरी शुजा कहते हैं कि हमारे लिए राम जी का दर्जा हमेशा सबसे ऊपर रहा है। हनुमान जी का भी ऊंचा स्थान है। उन्होंने श्रीराम जी के लिए लंका में आग लगा कर एक मिसाल दी थी कि अपने पूज्य के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं। एक मुस्लिम परिवार के दशहरा मेला और रामलीला कराना आसपास के इलाकों में चर्चा का विषय है।***प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क**.

कमाई के लिए क्लिनिकल ट्रायल्स का हिस्सा बन रहे झुग्गियों में रहने वाले लोग

एक क्लिनिकल ट्रायल्स में हो जाती है 50 हजार तक कमाई, हालांकि कुछ परीक्षणों में रोजाना भी 500 से 1000 हजार रुपए दिए जाते हैं।

गुजरात (अहमदाबाद)। अहमदाबाद की झुग्गियों में रहने वाले लोग अपना घर चलाने और बच्चों की शादी कराने के लिए क्लिनिकल ट्रायल का हिस्सा बन रहे हैं। अगर क्लिनिकल ट्रायल की बात करें तो क्लिनिकल ट्रायल या नैदानिक परीक्षण एक प्रकार का शोध अध्ययन है जिसमें मनुष्यों पर नए उपचारों, दवाओं, चिकित्सा उपकरणों या जीवनशैली में बदलाव की सुरक्षा और प्रभावकारिता का मूल्यांकन किया जाता है। इन परीक्षणों को कई चरणों में किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई उपचार सुरक्षित है और वास्तव में काम करता है। क्लिनिकल ट्रायल किसी भी नई चिकित्सा को प्रयोगशाला से मरीजों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हाल ही गुजरात के अहमदाबाद की झुग्गियों में रहने वाली नूरजहां हाल ही में एक क्लिनिकल परीक्षण से वापस लौटी हैं। उन्होंने एक रिसर्च लैबोरेटरी में तीन दिन बिताए थे। वहां जांचकर्ताओं और दवा कंपनियों ने उन पर नई दवाओं का परीक्षण किया था।अपने छोटे से घर में जब नूरजहां दाखिल हुईं तो उनके बच्चे और पति उनका स्वागत करने के लिए इंतजार कर रहे थे।नूरजहां के घर में एक छोटा–सा रसोईघर, पार्टिशन वाला पलंग और कपड़ों से भरे कुछ बक्से हैं। नूरजहां अपनी बेटी की शादी की तैयारी कर रही हैं। परिवार के भरण–पोषण और बेटी की शादी के लिए कुछ पैसे जमा करने के लिए नूरजहां क्लिनिकल ट्रायल्स में शामिल होती हैं। उनका कहना है कि मैं यह सुनिश्चित करती हूं कि मेरे बच्चे रात में भूखे न सोएं।

नूरजहां की दुनिया और क्लिनिकल ट्रायल

नूरजहाँ इस समय तीन महीने के क्लिनिकल ट्रायल का हिस्सा हैं। उन्हें नियमित रूप से परीक्षणों के लिए रिसर्च लैब जाना होगा। क्लिनिकल ट्रायल के अंत में उन्हें 51 हजार रुपये का भुगतान किया जाएगा। नूरजहाँ से बात की, तब तक उन्हें 15 हजार रुपये मिल चुके थे। नूरजहाँ ने बताया कि वह बाकी 36 हजार रुपये अपनी बेटी की शादी में खर्च करेंगी। नूरजहां ने बताया कि हम गरीब लोग हैं। हमें तो वैसे भी इसी छोटी सी झोपड़ी में मरना है। मुझे गर्व है कि मैं कुछ गलत नहीं कर रही हूँ। जब मुझे बाकी पैसे मिल जाएँगे, तो मैं अपनी बेटी की शादी कर दूँगी। नूरजहाँ अहमद. ाबाद में साबरमती नदी के किनारे से विस्थापित हुए लोगों के पुनर्वास के लिए बसाई गई बस्ती गणेश नगर में रहती हैं। वे आस–पास की रिसर्च लैब्स में चल रहे क्लिनिकल ट्रायल में भाग लेने वाले सैकड़ों लोगों में से एक हैं। नूरजहां की तरह 60 साल की जस्सीबेन चुनारा भी क्लिनिकल ट्रायल्स में हिस्सा लेती हैं। कुछ साल पहले उनके पति और बेटे दोनों की मौत हो गई थी। पहले वे अहमदाबाद

के जमालपुर की सब्जी और फूल मार्केट के पास रहती थीं। जस्सीबेन ने कहा कि जब मैं जमालपुर में रहती थी, तब कभी आर्थिक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। मार्केट से बेकार सब्जियां उठा लेती थी और उन्हें बेच देती थी। उन्होंने आगे कहा कि अब गणेशनगर शिफ्ट हा.ेने के बाद मेरे पास कोई आय का साध् ान नहीं है। क्लिनिकल ट्रायल में शा.मिल होने के अलावा मेरे पास और कोई विकल्प नहीं है। उनकी छोटी झोपड़ी में फर्नीचर के नाम पर केवल एक खाट है। जस्सीबेन चुनारा ने बताया, अब मैं सब्जियां नहीं बेच सकती। मैं बीमार हूं। शरीर में जलन होती है। हाथा.ें में दर्द रहता है। फिर भी मैं क्लि.निकल ट्रायल में जाती हूं ताकि भूखी न मरना पड़े। अहमदाबाद के बाहर पीराना डंपिंग यार्ड के पास बसे गणेशनगर में करीब 15 हजार लोग रहते हैं। इनमें से अधिकतर परिवार कम आय वाले हैं। इनमें से कई लोग पहले सुभाष ब्रिज, शाहपुर, शंकर भवन, वीएस अस्पताल, वासणा बैराज और जमालपुर जैसे नदी किनारे के इलाकों में रहते थे और अहमदाबाद की मंडियों में दिहाड़ी मजदूरी करते थे।जबकि महिलाएं मार्केट में या किसी के घर में काम करती थीं और रोजाना 200 से 400 रुपये तक कमाती थीं। पुनर्वास के बाद इनमें से कई लोगों ने अपना काम खो दिया है।

बिस्मिल्लाह की कहानी

अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन की रिपोर्ट के मुताबिक, सुभाषब्रिज से वासणा बैराज तक नदी किनारे के इलाके में रहने वाले 12 हजार से अधिक परिवारों को 29 सरकारी कॉलोनियों में शिफ्ट किया गया है। विस्थापितों को उनके पुराने घर से दो–तीन किलोमीटर दूर ही नए मकान देने का वादा किया गया था। 48 साल की बिस्मिल्लाह कोला का गणेशनगर आने से पहले ही उनका तलाक हो चुका था। एक समय वे घरेलू सहायक के तौर पर काम करती थीं और पास की सोसायटियों में उन्हें काम मिल जाता था। लेकिन बेटे की आपराधिक मामले में गिरफ्तारी के बाद बिस्मिल्लाह ने क्लिनिकल ट्रायल्स में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं अकेली हूं। मेरा सहारा कोई नहीं है। अदालत में बेटे का केस लड़ने के पैसे नहीं हैं। घर की मरम्मत कराने के पैसे भी नहीं हैं। मैं क्या करूं? किसी ने बताया कि क्लिनिकल ट्रायल से कुछ पैसे मिल जाते हैं, तो मैंने इसमें शामिल होना शुरू कर दिया। बिस्मिल्लाह कई ट्रायल्स में हिस्सा ले चुकी हैं। गणेशनगर के स्थानीय लोग इन क्लिनिकल ट्रायल्स को 'एसटीडी' कहते हैं। दरअसल इन्होंने 'स्टडी' शब्द को अपना नाम दे दिया है। बिस्मिल्लाह ने बताया कि मैं कम से कम सात से दस एसटीडी का हिस्सा रही हूं और 12 हजार से 15 हजार रुपये कमाए हैं। मुझे तीन दिन तक लैबोरेटरी में रहना पड़ता है और दवा लेने के बाद वे नियमित रूप से मेरा खून लेते रहते हैं।

एजेंट ढूढ़ते हैं लोगों को

बिस्मिल्लाह को इस क्लिनिकल ट्रायल के बारे में स्थानीय एजेंटों के नेटवर्क से पता चला। एजेंट जितने लोग लाते हैं, उनके लिए उन्हें प्रति व्यक्ति 500 से 1,000 रुपए तक मिलता है। एक एजेंट ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि आमतौर पर लैब्स हमसे संपर्क करती हैं, जब उन्हें किसी खास आयु वर्ग या महिलाध्पुरुष की जरूरत होती है। उनके पास हमारे नंबर होते हैं और वे हमें कॉल करते हैं। हम एक व्हाट्सऐप ग्रुप में हैं, जहाँ विज्ञापन पोस्ट किए जाते हैं। कभ.ी–कभी हम लोगों को लैब में लेकर जाते हैं, कभी उन्हें सीधे भेजते हैं।यह एजेंट पहले खुद भी ट्रायल्स में भाग लेते थे। अब वे बिस्मिल्लाह, नूरजहाँ और जस्स.ीबेन जैसे लोगों का नेटवर्क चलाते हैं। एजेंट के अनुसार, इसमें गलत क्या है? (रिसर्च कंपनियाँ) कुछ भी गैरकानूनी नहीं कर रही हैं। वे कानूनी प्रक्रिया का पालन करती हैं। लोगों की सहमति लिखित

रूप में और कैमरे पर ली जाती है। प्रतिभागियों को बताया जाता है कि दवा और उसके दुष्प्रभावों का ट्रायल किया जा रहा है। डॉक्टर का नाम और फोन नंबर भी दिया जाता है, ताकि ट्रायल में शामिल होने वाले घर लौटने के बाद भी डॉक्टर से मदद ले सकें।

पैसे कमाने की लालत ने लोगों ने इसे बना लिया व्यवसाय

स्थानीय कार्यकर्ता बीना जाधव ने कहा कि पहले एक–दो बार ये लोग पैसे कमाने के लिए ट्रायल्स में शामिल हुए थे, लेकिन अब यह एक व्यवसाय बन गया है। हम उन्हें जोखिमों के बारे में चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन लोगों की संख्या बढ़ रही है क्योंकि इस इलाके में कोई रोजगार नहीं है। एक प्रमुख रिसर्च लैब से संपर्क किया कि क्या ये ट्रायल्स वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन और भारत सरकार द्वारा निर्धारित गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस गाइडलाइंस के अनुसार किए की गाइडलाइन कहती है कि मेडिकल ट्रायल में भाग लेने के लिए पैसे पाने वाले लोगों के लिए, इस तरह के पैसे को आम तौर पर स्टडी के लाभ के बजाय भर्ती प्रक्रिया के हिस्से के रूप में देखा जाता है। हालांकि, आईईसी दृ आईआ. रबी को भुगतान की राशि और उसकी प्रक्रिया की समीक्षा करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इसके पीछे किसी तरह की मजबूरी या गलत वजह न हो। पैसों का भुगतान इतना अधिक नहीं होना चाहिए कि लोगों को इसमें शामिल होने या स्टडी में बने रहने के लिए अनावश्यक तौर पर प्रोत्साहित किया जाए।

वकील ने इसे मानवाधिकार का गंभीर उल्लंघन बताया

सुप्रीम कोर्ट के वकील संजय पारिख ने इस तरीके को मानवाधिकार का गंभ. ीर उल्लंघन बताया। उन्होंने कहा कि हम उन लोगों की बात कर रहे हैं जो

उनकी सहमति को कानूनी रूप से सू. चित सहमति नहीं माना जा सकता। मध्य प्रदेश स्थित 'स्वास्थ्य अधिकार मंच' नामक संगठन द्वारा दायर एक याचिका का संजय पारिख अदालत में प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इस संगठन ने इंदौर में क्लिनिकल ट्रायल्स से जुड़ी कई मौतों के बाद चिंता व्यक्त की थी। संगठन के राष्ट्रीय संयोजक अमूल्य निधि ने कहा, ऐसा सिर्फ गुजरात में नहीं हो रहा है। मुंबई, हैदराबाद और अन्य शहरों में भी लैब्स लोगों का इस्तेमाल गिनी पिग्स की तरह कर रही हैं। परीक्षणों में अनियमितताओं की जांच कर चुकी एक संसदीय समिति ने भी देश के कम. जोर वर्गों के लिए गिनी पिग शब्द का इस्तेमाल किया था। संजय पारिख ने आगे कहा कि वॉलंटियर्स की भर्ती से लेकर ट्रायल के रिजल्ट तक हर चरण की निगरानी के लिए उचित व्यवस्था नहीं बनाई गई है। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक कमजोर लोगों का शोषण होता रहेगा। ट्रायल के निश्चित निष्कर्षों को छोड़कर बाकी सारी जानकारी सार्व. जनिक की जानी चाहिए।समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने अमेरिका स्थित ग्रैंडव्यू रिसर्च के हवाले से बताया कि भारत का क्लि. निकल ट्रायल बाजार 2025 तक 1.51 अरब डॉलर तक पहुँच सकता है। कंप. नियाँ भारत की ओर इसलिए आकर्षित हो रही हैं क्योंकि यहाँ ट्रायल के फेल होने की लागत कम होती है। कॉमनवेल्थ फार्मास्युटिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉक्टर राव वीएसवी वडलामुडी ने बी. बीसी से कहा कि एक तरफ लोगों को पैसों की जरूरत है और दूसरी तरफ कंपनियों को दवाओं के परीक्षण के लिए वॉलंटियर्स की जरूरत है। मुझे नहीं पता कि यह सब कानून और सरकारी मानकों के अनुसार किया जा रहा है या नहीं।ऐसे सवाल पूछकर हम किसे बचा रहे हैं, यह भी मैं नहीं जानता। दवा बनाना एक सम्मानजनक व्यवसाय है और हमें वॉलंटियर्स की जरूरत है ताकि समाज को बड़े पैमाने पर लाभ मिल सके, लेकिन सभी मानकों का पालन होना चाहिए।

courtesy-www.bbc.com

दिल्ली में दशकों बाद यमुना घाटों पर मना छठ पर्व

पूरे देश में इस बार बड़े ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाए गए दिवाली, भाई दूज और छठ पर्व मनाए गए। इस बार दिल्ली में पहली बार दिवाली के अवसर पर शनिवार को कर्तव्य पथ पर दीपोत्सव का आयोजन किया गया। वहीं दिवाली के साथ दिल्ली में छठ पर्व भी इस बार खास तरीके से मनाया गया। इस बार कई सालों बाद यमुना घाटों पर विधि विधानसभा छठ व्रतियों ने पूजा की।

गौरतलब है कि दिल्ली में पहली बार दिवाली के अवसर पर शनिवार को कर्तव्य पथ पर दीपोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया। इस कार्यक्रम को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का कहना है कि आज का दीपोत्सव केवल दीपों का उत्सव नहीं, बल्कि नई क्रांति की आहट है। दिल्ली एक नया इतिहास लिखने जा रही है, जहां आस्था और आधुनिकता का संगम अद्‌भुत रूप में सामने आया है। राजधानी ने यह दिखा दिया कि दिल्ली अब केवल शासन की राजधानी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना की धड़कन भी है। श्री. राम के जीवन चरित का ड्रोन प्रदर्शन और दीपों का महासागर इस बात का प्रतीक है कि राजधानी दिल्ली अब सनातन परंपरा, देश की सांस्कृतिक समझ के साथ आगे बढ़ रही है। आजादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ है, जब कर्तव्य पथ पर सामूहिक रूप से दीपावली का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में मुख्यमंत्री के साथ कैबिनेट मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और दिल्ली के हजारों लोग शामिल हुए। कर्तव्य पथ पर आयोजित इस दीपोत्सव में भव्य ड्रोन शो, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और रामायण थीम आधारित लाइट कार्यक्रम ने उपस्थित हजारों दर्शकों को अभिभूत कर दिया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता भी इस कार्यक्रम में श्रीराम की भक्ति से प्रेरित दिखीं। उन्होंने कहा कि वर्षों बाद दिल्ली का हृदय इस तरह दीपों की आभा से जगमगा उठा है। यह केवल रोशनी का उत्सव नहीं, बल्कि दिल्ली की नई ऊर्जा, नई उम्मीद और नई दिशा का प्रतीक है।

इस बार की दिवाली दिल्ली के हर वर्ग तक है पहुंच

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बार की दिवाली दिल्ली के हर वर्ग तक पहुंची है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से आज दिल्ली का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित हो रहा है। उन्होंने कहा कि इस दिवाली बच्चों के चेहरों पर मुस्कान है, महिलाओं के घर में बचत है, युवाओं को नए अवसर हैं, बुजुर्गों को स्वास्थ्य का भरोसा है, और हर .नागरिक को अपने शहर पर गर्व है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा संकल्प है कि प्रभु श्रीराम की कृपा से दिल्ली में रामराज्य की स्थापना हो, जहां हर नागरिक को समान अवसर, सुरक्षा और सम्मान मिले। दिल्ली की सरकार जनता की सरकार है, और हम जनता के सेवक हैं।

ड्रोन शो के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन चरित को आकाश में प्रदर्शित

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि कर्तव्य पथ पर आयोजित इस दीपोत्सव की सबसे विशेष बात यह रही कि पहली बार ड्रोन शो के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन चरित को आकाश में प्रदर्शित किया गया। हजारों ड्रोन से सुसज्जित इस भव्य दृश्य ने रामायण की पवित्र गाथा को आधुनिक तकनीक के जरिये जीवंत कर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि दीपावली विशेष पर्व है जो अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। त्रेतायुग में जब भगवान श्रीराम 14 वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे, तब अयोध्या वासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। तभी से यह पर्व दीपों के माध्यम से उजियारे का प्रतीक बन गया।

दिवाली पर्व सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिवाली पर्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का भी प्रतीक है। परिवार,

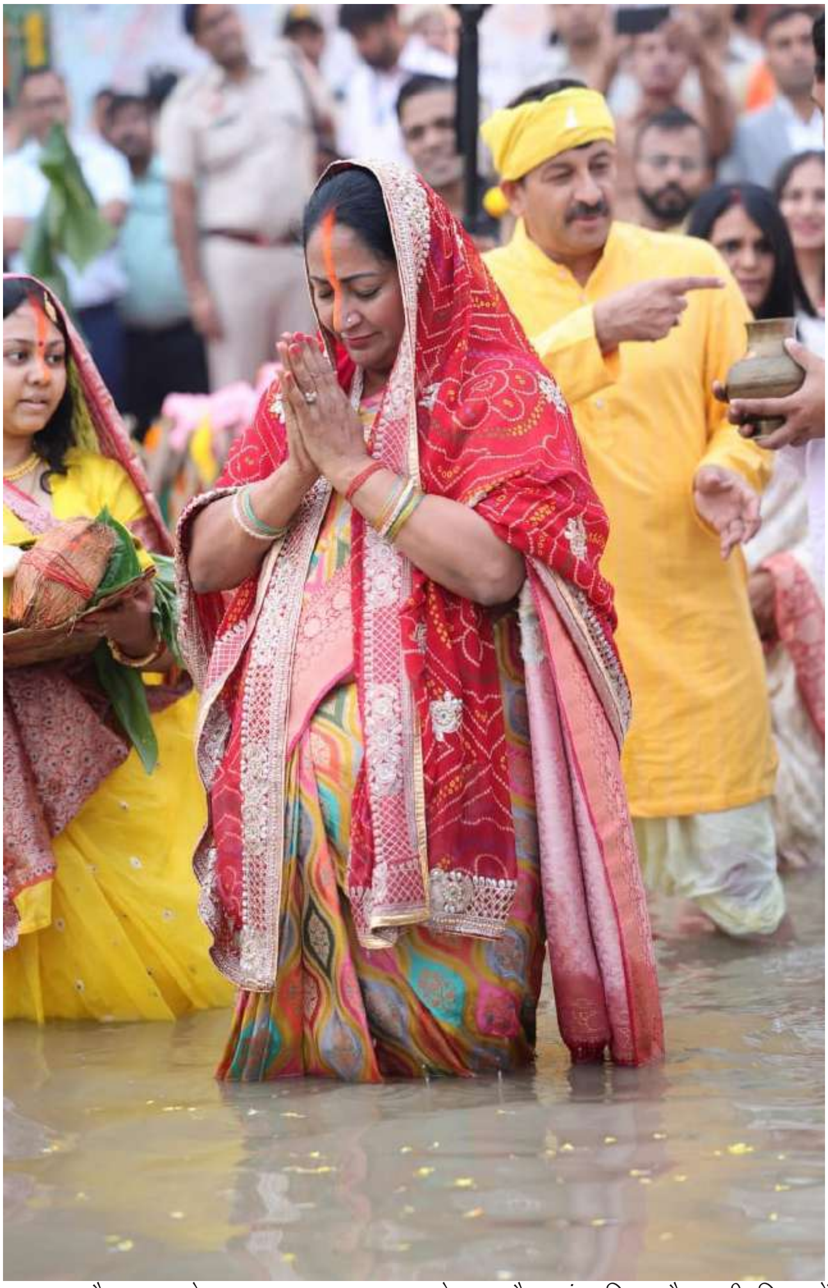

समाज और राष्ट्र के स्तर पर यह उत्सव हमें एक–दूसरे से जोड़ता है, और अंधकार को मिटाकर उम्मीद और सद्भाव के दीप जलाने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार का यह आयोजन विशेष है। अब तक दीपोत्सव का भव्य आयोजन अयोध्या में देखने को मिलता था, लेकिन पहली बार दिल्ली ने भी उस गौरवमयी परंपरा को अपने आंगन में साकार किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि दिल्ली न केवल प्रशासनिक राजधानी रहे, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी भारत की आत्मा को प्रतिबिंबित करे। दीपावली का यह आयोजन दिल्ली को आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक गौरव की दिशा में एक नई पहचान देगा।

भक्ति, लोक संस्कृति और स्वच्छता का संगम बनी दिल्ली की छठ पूजा

दिल्ली में छठ पूजा पर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के लिए यमुना नदी, नहरों के अलावा घाटों पर सोमवार को भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने पूजा–अर्चना की। इस पर्व की सौम्यता, श्रद्धा, प्रकृति की पूजा और आस्था से अभिभूत मुख्यमंत्री 0रेखा गुप्ता शाम कई स्थलों पर महापर्व के कार्यक्रमों में शामिल हुई और छठी मैया से दिल्लीवासियों की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बार भक्ति, लोक संस्कृति और स्वच्छता का संगम दिल्ली की छठ पूजा बनी है। मुख्यमंत्री का कहना था कि राजधानी में पहली बार इतने भव्य व दिव्य रूप से यह महापर्व मनाया जा रहा है, जो राजधानी की सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत मंगोलपुरी के छठ पार्क से की, जहां उन्हांने छठव्रतियों के साथ पूजा–अर्चना में भाग लिया और छठ मैया से आशीर्वाद लिया। इस कार्यक्रम में उनके साथ क्षेत्रीय सांसद योगेंद्र चंदोलिया, विधायक राजकुमार चौहान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा व गणमान्य जन उपस्थित थे। इसके बाद मुख्यमत्री यमुनापार स्थित सोनिया विहार पुश्ता पहुंची। वहां मुख्यमंत्री ने नांव में बैठकर पुश्ता से स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, राम घाट व श्याम घाट तक आयोजित छठ पर्व में भी सहभागिता की। और संध्या अर्घ्य के शुभ अवसर पर सोनिया विहार के घाट पर दीपों की रोशनी और भक्ति गीतों के बीच सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित कर नमन किया और छठ व्रतियों के साथ पूजा में सम्मिलित हुईं। अस्ताचलगामी भगवान सूर्य को नमन करने के लिए अंतिम चरण में मुख्यमंत्री कश्मीरी गेट स्थित यमुना नदी के वासुदेव घाट पहुंची, जहां उन्होंने श्रद्धालुओं और उनके परिवारों के साथ छठ पर्व मनाया। इस अवसर पर वासुदेव घाट पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिनमें पारंपरिक लोकगीत, नृत्य और विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पेश की गईं। मुख्यमंत्री ने कलाकारों का उत्साहवर्धन किया और कहा कि ऐसे आयोजन दिल्ली की सांस्कृतिक विविधता और लोक परंपरा की आत्मा को सशक्त बनाते हैं। मुख्यमंत्री ने छठी मइया से दिल्लीवासियों की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की और कहा कि छठ महापर्व सूर्य देव और छठी मइया की आराधना का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने कहा कि छठ पर्व का नाम सुनते ही मन में आस्था, स्वच्छता, संस्कृति, लोकगीतों और भक्ति की छवियां उभर आती हैं। यह पर्व न केवल आत्मशुद्धि और अनुशासन का प्रतीक है, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच दिव्य संतुलन और कृतज्ञता का भी प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने बताया कि दिल्ली सरकार की ओर से इस वर्ष विशेष तैयारी की गई। पल्ला से लेकर कालिंदी

कुंज तक यमुना नदी के किनारे कुल 17 प्वाइंट पर मॉडल छठ घाटों का निर्माण किया गया है। इन घाटों पर टेंट, लाइट, स्वच्छता, पेयजल, शौचालय और मेडिकल सहायता जैसी सभी व्यवस्थाएं दिल्ली सर. कार द्वारा सुनिश्चित की गई। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार इस पवित्र पर्व को श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित, स्वच्छ और गरिमामय अनुभव बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इन कार्यक्रमों में सांसद श्री मनोज तिवारी, दिल्ली सरकार के विकास व पर्यटन मंत्री श्री कपिल मिश्रा व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मंत्री प्रवेश साहिब सिंह के घर पर हुआ छठ पर्व का भव्य आयोजन

दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यू. डी) और जल मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने सोमवार को अपने सरकारी आवास 20, विंडसर प्लेस पर छठ पर्व का भव्य आयोजन कराया। इस अवसर पर उन्होंने अपने आवास परिसर में ही सुंदर छठ घाट का निर्माण कराकर आसपास के निवासियों के लिए पूजा–अर्चना की विशेष व्यवस्था सुनिश्चित की। यह पहली बार है जब किसी मंत्री के घर पर छठ पूजा का इतना भव्य और जनसहभागिता से जुड़ा आया. जन हुआ। श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में पहुंचकर छठी मइया और भगवान सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित किया। मंत्री प्रवेश साहिब सिंह के परिवार ने भी इस आयोजन में पूर्ण निष्ठा और भावनात्मक जुड़ाव के साथ हिस्सा लिया। उनकी धर्मपत्नी एवं परिवार के अन्य सदस्यों ने स्वयं घाट की सजावट और पूजा की तैयारियों में भाग लिया तथा उपस्थित छठ व्रतियों का स्नेहपूर्वक स्वागत किया। इस अवसर पर प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि छठ पर्व केवल पूजा नहीं, बल्कि आस्था, अनुशासन और पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। मैं चाहता था कि अपनी विधानसभा के लोगों के साथ परिवार की तरह इस पवित्र पर्व को मनाऊं। यही त्योहारों की असली भावना है। पूरे आयोजन में श्रद्धा, भक्ति और एकता की झलक देखने को मिली। जहां एक ओर छठ गीतों की मधुर गूंज थी, वहीं दूसरी ओर श्रद्धालुओं की मुस्कान ने इस पर्व की पवित्रता को और भी उज्जवल बना दिया।

सनातन की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता की झलक : इंद्राज

छठ महापर्व के पावन अवसर पर दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह ने बवाना विधानसभा के विभिन्न छठ घाटों पर जाकर श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं और संध्या अर्घ्य में सम्मिलित होकर व्रतियों के साथ भग. वान सूर्य एवं छठी मईया का पूजन किय. ा। इस अवसर पर मंत्री रविंद्र इंद्राज ने कहा कि छठ महापर्व सनातन की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता की सशक्त झलक प्रस्तुत करता है। यह पर्व न केवल सूर्योपासना का पर्व है बल्कि समाज में संयम, स्वच्छता और सामूहिकता के भाव का प्रतीक भी है। उन्होंने कहा कि इस बार घाटों पर सुविधाओं और सुरक्षा की अद्भुत व्यवस्था है। मंत्री इंद्राज ने रोहिणी सेक्टर 20 झील वाला पार्क में बने मॉडल घाट में पूजन के दौरान कहा कि छठ महापर्व सनातन की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता की सशक्त झलक प्रस्तुत करता है। यह पर्व न केवल सूर्योपासना का पर्व है बल्कि समाज में संयम, स्वच्छता और सामूहिकता के भाव का प्रतीक भी है। मंत्री इंद्राज ने बवाना विधानसभा के रोहिणी सेक्टर 24, 25 और 26 स्थित छठ घाट, पंसाली छठ, बवाना के जे जे कॉलोनी ए ब्लॉक, एफ ब्लॉक, जी ब्लॉक एवं एल ब्लॉक घाट, जैन कॉलोनी घाट, शाहबाद डेयरी स्थित पंच मंदिर घाट और अन्य जगहों पर बने घाटों पर भव्य आयोजन का जायजा लिया। जहां हजारों श्रद्धालु परिवारों ने पूजन किया।

जनकपुरी में बड़े ही व्यापक स्तर पर मनाई जा रही छठ पूजा : सूद

दिल्ली के शिक्षा मंत्री एवं जनकपुरी विधानसभा क्षेत्र के विधायक आशीष सूद ने सोमवार को अपने क्षेत्र में बनाए गए विभिन्न छठ पूजा घाटों पर पहुंचकर व्रतधारी माताओं एवं श्रद्धालुओं से संवाद कर उनकी कुशलक्षेम जानी और उन्हें छठ महापर्व की शुभकामनाएं भी दीं। इस अवसर पर मंत्री आशीष सूद ने कहा कि छठ पूजा केवल सूर्य देव की उपासना नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के पवित्र रिश्ते का महा उत्सव है। यह पर्व अनुशासन, आस्था, स्वच्छता और सामूहिक एकता का प्रतीक है। सूद ने बताया कि दिल्ली सरकार द्वारा जनकपुरी क्षेत्र में इस वर्ष 31 से अधिक छठ घाटों का निर्माण कराया गया है जो पिछले 27 बर्षो में कभी नहीं किया गया था। इन घाटों के बनने से श्रद्धालु सुरक्षित, स्वच्छ और शांत वातावरण में पूजा–अर्चना कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा इन सभी छठ घाटों पर पर्याप्त सफाई व्यवस्था, सुरक्षा, प्रकाश, पेयजल, टेंट, चिकित्सा सुविधा और आप. ातकालीन सेवाओं के लिए विशेष टीम. तैनात की गई हैं ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। सूद ने वहां उपस्थित सभी श्रद्धालुओं से भावनात्मक आह्वान किया कि बिहार के पटना, बक्सर, दीघा, भागलपुर, बेगूसराय, मोकामा, गया, सिवान जहां–जहां उनके परिवारजन रहते हैं वहां तक जनकपुरी से छठी मइया के जयकारों की गूंज सुनाई देनी चाहिए। तभी यह संदेश जाएगा कि इस बार दिल्ली के जनकपुरी में छठ पर्व आस्था, उल्लास और एकता के अभूतपूर्व भाव के साथ मनाया जा रहा है।

प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

प्रधानमंत्री ने डीसीआईएल के लिए 4,000 करोड़ रुपये की आधुनिकीकरण पहल की घोषणा की

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत समुद्री सप्ताह 2025 के उद्घाटन के दौरान एक ऐतिहासिक घोषणा की, जिसमें समुद्री अमृत काई विजन के तहत परिवर्तनकारी पहलों का अनावरण किया गया। इनमें से एक प्रमुख आकर्षण ड्रेजिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (डीसीआईएल) के आधुनिकीकरण के लिए समर्पित 4,000 करोड़ रुपये का निवेश था।डीसीआईएल चार प्रमुख बंदरगाहों दृ विशाखापत्तनम बंदरगाह प्राधिकरण (वीपीए), पारादीप बंदरगाह प्राधिकरण (पीपीए), जवाहरलाल नेहरू बंदरग. ाह प्राधिकरण (जेएनपीए), और दीनदयाल बंदरगाह प्राधिकरण (डीपीए) के एक संघ के तहत काम करता है दृ जो बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्ल्यू) के तत्वावधान में कार्यरत है। इस आधुनिकीकरण पहल का उद्देश्य उन्नत ड्रेजर, तकनीकी उन्नयन और टिकाऊ प्रथाओं के अधिग्रहण के माध्यम से डीसीआईएल की ड्रेजिंग क्षमता, परिचालन दक्षता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना है। 4,000 करोड़ रुपये का निवेश निम्नलिखित पर केंद्रित होगारू भारत के ड्रेजिंग बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए बेड़े का आधुनिकीकरण और क्षमता वृद्धिय भारतीय शिपयार्ड में नए ड्रेजर का निर्माण, 'मेक इन इंडिया' पहल को बढ़ावा देनाय इस दिशा में मंत्रालय ने तीन नए टीएसएचडी की खरीद के लिए पहले ही मंजूरी दे दी थी, जिसमें से डीसीआई ने पहले ही मार्च 2022 में एक 12000 घन मीटर टीएसएचडी दृ डीसीआई ड्रेज गोदावरी के लिए ऑर्डर दिया है। पोत को हाल ही में 18 अक्टूबर 2025 को लॉन्च किया गया था। पोत की डिलीवरी जुलाई 2026 में होने की उम्मीद थी। अगले कुछ महीनों में एक और 12000 घन मीटर टीएसएचडी के लिए ऑर्डर देने की योजना है, और इसके बाद एक और ड्रेजर के लिए ऑर्डर दिया जाएगा। इसके अलावा, डीसीआई ने एक कटर सक्शन ड्रेजर, एक जल इंजेक्शन ड्रेजर, उथले ड्राफ्ट ड्रेजिंग के लिए कम क्षमता का एक और टीएसएचडी और अंतर्देशीय जलमार्गोंध्नहरों आदि में ड्रेजिंग के लिए विभिन्न क्षमताओं के छह बीवर ड्रेजर खरीदने की भी योजना बनाई है। टिकाऊ संचालन के लिए डिजिटल, स्वचालन और हरित ड्रेजिंग तकनीकों को अपनानाय और वैश्विक मानकों के अनुरूप तकनीकी जनशक्ति का कौशल विकास और उन्नयन करना।इन 11 ड्रेजरों और अन्य पहलों की खरीद के लिए कुल निवेश 4000 करोड़ रुपये है और इससे डीसीआई न केवल रखरखाव ड्रेजिंग बाजार में, जिसमें वह पहले से ही भारत में अग्रणी है, बल्कि पूंजी ड्रेजिंग और अंतर्देशीय जलमार्गों में भी अपनी स्थिति मजबूत कर सकेगा, जिस पर सरकार काफी जोर दे रही है।इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. एम. अंगमुथु, आईएएस, अध्यक्ष, ड्रेजिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड और अध्यक्ष, विशाखापत्तनम पोर्ट अथॉरिटी और मुंबई पोर्ट ने प्रधानमंत्री और मंत्रालय के दूरदर्शी समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया।उन्होंने आगे कहा कि डीसीीध भारत की अग्रणी ड्रेजिंग कंपनी है और यह निवेश उसे अपनी स्थिति को और पुष्ट करने और वैश्विक स्तर पर अपनी पैठ बनाने में सक्षम बनाएगा। उन्होंने कहा, "यह रणनीतिक निवेश डीसीआईएल को भविष्य के लिए तैयार संगठन बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, जो भारत की समुद्री आत्मनिर्भरता में सार्थक योगदान देगा।" यह घोषणा मुंबई के बॉम्बे प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित भारत समुद्री सप्ताह 2025 के दौरान केंद्रीय बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल और जलमार्ग मंत्रालय, प्रमुख बंदरगाहों, शिपयार्ड और वैश्विक समुद्री संगठनों के वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति में की गई।यह पहल समुद्री भारत विजन 2030 और आत्मनिर्भर भारत 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार के दीर्घकालिक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो समुद्री और नीली अर्थव्यवस्था क्षेत्रों में भारत के नेतृत्व की पुष्टि करता है।

आरईसी और सागरमाला फाइनेंस (एसएमएफसीएल) ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

आरईसी लिमिटेड और सागरमाला फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसएमएफसीएल) ने आज मुंबई में इंडिया मैरीटाइम वीक 2025 में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।समझौता ज्ञापन पर औपचारिक रूप से आरईसी लिमिटेड की कार्यकारी निदेशक (अवसंरचना एवं लॉजिस्टिक्स) श्रीमती सरस्वती और निदेशक (वित्त) ए.सी. नायक के बीच हस्ताक्षर किए गए, तथा इस दौरान सागरमाला वित्त निगम लिमिटेड के निदेशक (परियोजनाएं) एस.टी. सेल्वम भी उपस्थित थे।इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य भारत के महत्वपूर्ण समुद्री और संबद्ध अवसंरचना क्षेत्रों में सहयोग और संयुक्त वित्तपोषण के अवसरों का पता लगाना है। यह सहयोग भारत के बंदरगाह–आधारित अवसंरचना और नीली अर्थव्यवस्था के उद्देश्यों में तीव्र विकास को गति देने और बढ़ावा देने के लिए दोनों संस्थानों की वित्तीय शक्तियों का लाभ उठाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।इस अवसर पर बोलते हुए, दोनों संगठनों के प्रतिनिधियों ने सहयोग के बारे में आशा व्यक्त की तथा भारत की नीली अर्थव्यवस्था और सतत समुद्री विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने की इसकी क्षमता पर बल दिया।आरईसी लिमिटेड के बारे मेंआरईसी भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक 'महारत्न' कंपनी है, और आरबीआई के साथ गैर–बैंकिंग वित्त कंपनी (एनबीएफसी), सार्वजनिक वित्तीय संस्थान (पीएफआई) और इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग कंपनी (आईएफसी) के रूप में पंजीकृत है। आरईसी पूरे विद्युत–अवसंरचना क्षेत्र को वित्तपोषित कर रहा है जिसमें उत्पादन, पारेषण, वितरण, नवीकरणीय ऊर्जा और नई प्रौद्योगिकियां जैसे इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी भंडारण, पंप भंडारण परियोजनाएं, ग्रीन हाइड्रोजन, ग्रीन अमोनिया परियोजनाएं आदि शामिल हैं। हाल ही में आरईसी लिमिटेड ने गैर–विद्युत अवसंरचना क्षेत्र में भी विविधता लाई है जिसमें सड़क और एक्सप्रेसवे, मेट्रो रेल, हवाई अड्डे, आईटी संचार, सामाजिक और वाणिज्यिक अवसंरचना (शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल), बंदरगाह और इस्पात, रिफाइनरी आदि जैसे विभिन्न अन्य क्षेत्रों के संबंध में इलेक्ट्रो–मैकेनिकल (ईएंडएम) कार्य शामिल हैं। आरईसी लिमिटेड देश में अवसंरचना परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए राज्य, केंद्र और निजी कंपनियों को विभिन्न परिपक्वताओं के ऋण प्रदान करता है। आरईसी लिमिटेड बिजली क्षेत्र के लिए सरकार की प्रमुख योजनाओं में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक भूमिका निभा रहा है।

NHPC के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 50 रुपये का सिक्का जारी

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने जारी किया स्मारक सिक्का

नई दिल्ली। केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल ने 6 नवंबर 2025 को नई दिल्ली में NHPC के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 50 रुपये का एक स्मा. रक सिक्का जारी किया। इस अवसर पर भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय में सचिव (विद्युत) पंकज अग्रवाल, एनएचपीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक भूपेंद्र गुप्ता और एनएचपीसी के निदेशक (कार्मिक) उत्तम लाल भी उपस्थित थे। विद्युत मंत्रालय के अंतर्गत भारत की प्रमुख जलविद्युत नवरत्न कंप. नी, एनएचपीसी लिमिटेड, 7 नवंबर 2025 को अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे करने के अवसर पर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर रही है।इस अवसर पर एनएचपीसी लिमिटेड को बधाई देते हुए, माननीय केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री ने कहा कि भारत सरकार द्वारा स्मारक सिक्के का जारी होना एनएचपीसी की चिरस्थायी विरासत और भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता में इसके रणनीतिक योगदान की मान्यता है। यह स्मारक सिक्का राष्ट्र के प्रति इसके लचीलेपन, नवाचार और सेवा की उल्लेखनीय यात्रा का सम्मान करता है।केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री ने एक विशेष प्रकाशन, "छोटा भीम और बड़ा बांध" नामक एक कॉमिक बुक का भी विमोचन किया, जो 'छोटा भीम' और उसके सहायक पात्रों पर आधारित है। इस कॉमिक बुक का उद्देश्य बच्चों और आम जनता को आकर्षक कहानियों और जीवंत चित्रों के माध्यम से जलविद्युत के महत्व और लाभों का संदेश देना है।इस ऐतिहासिक अवसर पर, एनएचपीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भूपेंद्र गुप्ता ने केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री के बहुमूल्य मार्गदर्शन और सहयोग के लिए उनका हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने विद्युत मंत्रालय को उनके निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन के लिए भी धन्यवाद दिया। उन्होंने आगे कहा कि एनएचपीसी की स्वर्ण जयंती के अवसर पर भारत सरकार द्वारा ₹50 का स्मारक सिक्का जारी करना, संगठन की शानदार यात्रा और देश की ऊर्जा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में इसके महत्वपूर्ण योगदान के प्रति एक श्रद्धांजलि है। यह ऐतिहासिक पहल न केवल एनएचपीसी की असाधारण उपलब्धियों को मान्यता देती है, बल्कि आने वाले वर्षों में निरंतर उत्कृष्टता के लिए प्रेरणा का एक स्थायी स्रोत भी है।पिछले पाँच दशकों में, एनएचपीसी ने कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में ऐतिहासिक जलविद्युत परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया है, साथ ही सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन ऊर्जा में विविध ता लाते हुए, एक हरित ऊर्जा कंपनी के रूप में अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया है। 30 विद्युत संयंत्रों से 8,333 मेगावाट से अधिक की स्थापित क्षमता और निर्माणाधीन 9704 मेगावाट से अधिक की संयुक्त क्षमता वाली 14 अतिरिक्त परियोजनाओं के साथ, एनएचपीसी भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने और स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा की ओर राष्ट्र के परिवर्तन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

WCL ने कोल इंडिया स्थापना दिवस मनाया

नई दिल्ली: 1 नवंबर, 2025 को, टीम वेकोलि ने कंपनी भर में 51वें कोल इंडिया स्थापना दिवस को उत्साह और उमंग के साथ मनाया। इस अवसर पर वेकोलि मुख्यालय में एक विशेष रैली का आयोजन किया गया। रैली को मुख्य सतर्कता अधिकारी अजय मधुकर म्हेत्रे ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिन्होंने न केवल कार्यक्रम का उदघाटन किया, बल्कि स्वयं रैली में सक्रिय रूप से भाग लिया और उसका नेतृत्व भी किया। रैली के बाद, अजय मधुकर म्हेत्रे ने कोल इंडिया का ध्वज फहराया और टीम वेकोलि को संबोधित किया। अपने भाषण में, उन्होंने कोल इंडिया स्थापना दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई दी और कोयला उद्योग के गौरवशाली इतिहास के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने कोल इंडिया लिमिटेड की उल्लेखनीय उपलब्धियों और इसकी सफलता में वेकोलि के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। श्री म्हेत्रे ने कोयला क्षेत्र के उभरते परिदृश्य के बारे में भी बात की और देश की बढती कोयला मांग को पूरा करने के लिए तकनीकी प्रगति के महत्व पर बल दिया। उन्होंने देश की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में कोल इंडिया और ˘ब्स द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। ध्वजारोहण से पहले, कोल इंडिया कॉर्पोरेट गीत बजाया गया। इस कार्यक्रम में महाप्रबंधकों, विभागाध्यक्षों, अधिकारियों, कर्मचारियों और बडी संख्या में महिला प्रतिभागियों की गरिमामय उपस्थिति ने समारोह को जीवंत और यादगार बना दिया।

नाल्को का वित्त वर्ष 2025–26 में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

भुवनेश्वर : भारत सरकार के खान मंत्रालय के अंतर्गत नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम, नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड (नाल्को) ने सितंबर 2025 को समाप्त तिमाही के लिए शुद्ध लाभ में 35: की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान प्राप्त 1,062 करोड रुपये की तुलना में 1433 करोड रुपये है। आज भुवनेश्वर में आयोजित निदेशक मंडल की बैठक में दर्ज परिणामों के अनुसार, तिमाही के दौरान परिचालन से कुल आय 4292 करोड रुपये रही, जो वित्त वर्ष 2024–25 की दूसरी तिमाही की तुलना में 7.2: की वृद्धि दर्ज करती है। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के दौरान, नाल्को ने शुद्ध लाभ में 50.15: की वृद्धि के साथ अपना मजबूत प्रदर्शन जारी रखा, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 1,663 करोड रुपये की तुलना में बढकर 2497 करोड रुपये हो गया। उत्पादन के मोर्चे पर, नाल्को ने वित्त वर्ष 2025–26 की पहली छमाही के लिए एल्यूमिना हाइड्रेट, कैल्साइन्ड एल्यूमिना और एल्यूमिनियम कास्ट मेटल उत्पादन में अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हासिल किया है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025–26 की पहली छमाही में 11,53,000 मीट्रिक टन का अब तक का सर्वोच्च एल्यूमिना हाइड्रेट उत्पादन और 2,34,148 मीट्रिक टन का एल्यूमिनियम कास्ट मेटल उत्पादन दर्ज किया। इसी प्रकार, बिक्री के मोर्चे पर, नाल्को ने पहली छमाही में 6,99,913 मीट्रिक टन की अपनी अब तक की सर्वोच्च एल्यूमिना बिक्री हासिल की, जो वित्त वर्ष 2013–14 में हासिल किए गए 6,56,480 मीट्रिक टन के पिछले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को पार कर गई। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025–26 की पहली छमाही में 2,25,675 मीट्रिक टन की अब तक की सर्वाधिक संचयी घरेलू धातु बिक्री भी दर्ज की। कंपनी ने वित्त वर्ष 2025–26 के लिए 4 रुपये प्रति इक्विटी शेयर (प्रत्येक 5 रुपये के अंकित मूल्य पर 80:) का अंतरिम लाभांश घोषित किया है, जो 734.65 करोड रुपये होगा। वित्त वर्ष 2025–26 की दूसरी तिमाही के दौरान मजबूत प्रदर्शन बेहतर परिचालन क्षमता, लागत अनुकूलन उपायों और अनुकूल बाजार स्थितियों, जिनमें अंतरराष्ट्रीय बाजार में एल्युमीनियम की कीमतों में सुधार और बुनियादी ढांचे तथा ऑटोमोटिव क्षेत्रों से घरेलू मांग में लगातार वृद्धि शामिल है, के कारण हुआ। नाल्को के अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक बृजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि दूसरी और पहली तिमाही के परिणाम सभी कर्मचारियों की कडी मेहनत और प्रतिबद्धता तथा सभी हितधारकों के अटूट समर्थन के प्रमाण हैं। उन्होंने कहा, धातु की कीमतों से कम बिक्री प्राप्ति के बावजूद, हमने परिचालन उत्कृष्टता, लागत–बचत उपायों और निरंतर उत्पादकता के माध्यम से लचीलापन प्रदर्शित किया है, जिसे उच्च उत्पादन मात्रा और बेहतर दक्षता का समर्थन प्राप्त है। आगे बढते हुए, हम मूल्यवर्धन, स्थिरता और अपनी उत्पादन क्षमताओं के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करते रहेंगे ताकि सभी हितधारकों के लिए दीर्घकालिक विकास और मूल्य सृजन सुनिश्चित हो सके। उन्होंने आगे कहा कि यह उपलब्धि नाल्को के लिए गौरव का क्षण है और हम अपने मूल्यवान हितधारकों, खान मंत्रालय, भारत सरकार और ओडिशा सरकार द्वारा दिए गए अटूट समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

शिवकुमार राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के सीएमडी के लिए अनुशंसित

पीईएसबी ने शिवकुमार सुब्रमण्यम को राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (अनुसूची ए) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक पद के लिए अनुशंसित किया है। चयन बैठक में निम्नलिखित आवेदकों का साक्षात्कार लिया गया।

-शिवकुमार सुब्रमण्यम, कार्यकारी निदेशक, कार्यकारी निदेशक (वित्त), राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड।

-अनुपम मिश्रा, निदेशक (विपणन), द फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स त्रावणकोर लिमिटेड (तथ्य)।

-संजय बंगा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएमडी, सीमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड।

-कृष्ण मोहन श्रीवास्तव, वरिष्ठ महाप्रबंधक, बिजनेस एरिया हेड, सीतापुर, भारत संचार निगम लिमिटेड।

पवन कुमार राय डीएफसीसीआईएल में निदेशक (परियोजना, योजना) के पद पर चयनित

भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के अधीन सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड (पीईएसबी) ने रेल मंत्रालय के अंतग. ेत एक अनुसूची 'ए' सीपीएसई, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (डीएफसीसीआईएल) में निदेशक (परियोजना योजना) के पद के लिए पवन कुमार राय की अनुशंसा की है। यह चयन शनिवार, 25 अक्टूबर, 2025 को सुबह 9:00 बजे आयोजित पीईएसबी बैठक संख्या 101/2025 के दौरान किया गया। इस प्रतिष्ठित पद के लिए विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कुल 11 वरिष्ठ अधिकारियों का साक्षात्कार लिया गया। उम्मीदवारों में डीएफसीसीआईएल, राइट्स, इंजीनियर्स

इंडिया लिमिटेड, एनएचपीसी, एनटीपीसी, भेल और रेल विकास निगम लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के बाद, नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के महाप्रबंधक (सिविल) पवन कुमार राय इस पद के लिए शीर्ष पसंद के रूप में उभरे। निदेशक (परियोजना नियोजन) के रूप में, श्री राय डीएफसीसीआईएल के बुनियादी ढाँचे के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे, जिसमें भारत के लॉजिस्टिक्स आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण उच्च गति वाले माल ढुलाई गलियारे भी शामिल हैं। उनकी नियुक्ति आगे की औपचारिकताओं और सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के अधीन है।

फणी ने एनटीपीसी के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (पश्चिम-I) का अतिरिक्त कार्यभार संभाला

ई. सत्य कुमार फणी ने कार्यकारी निदेशक (डीआरसी) और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (यूपीएल) के अपने वर्तमान पदों के अलावा एनटीपीसी के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (पश्चिम–I) का अतिरिक्त कार्यभार संभाला है। विद्युत क्षेत्र के एक अनुभवी पेशेवर, श्री फणी के पास विद्युत उत्पादन और परियोजना प्रबंधन के विविध क्षेत्रों में साढे तीन दशकों से अधिक का समृद्ध अनुभव है। आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम के पूर्व छात्र, उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री (1988) और इग्नू, नई दिल्ली से मानव संसाधन प्रबंधन में एमबीए (2007) की डिग्री प्राप्त की है। श्री फणी 28 फरवरी 1989 को एक कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में एनटीपीसी में शामिल हुए और तब से उन्होंने कई प्रमुख एनटीपीसी परियोजनाओं और प्रतिष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं, और संगठन की परिचालन उत्कृष्टता और क्षमता विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी पेशेवर यात्रा में कॉर्पोरेट सेंटर – ईओसी, रामागुंडम, लारा और विंध्याचल में परियोजना प्रमुख के रूप में उल्लेखनीय कार्यकाल शामिल हैं। उन्होंने क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक के रूप में एनटीपीसी पश्चिम–प्प क्षेत्र का भी नेतृत्व किया है और यूपीएल में परियोजना प्रमुख के रूप में कार्य किया है, जहाँ उनके रणनीतिक नेतृत्व और प्रदर्शन सुधार पर ध्यान व्यापक रूप से पहचाना गया। उनके नेतृत्व में, एनटीपीसी परियोजनाओं ने दक्षता, स्थिरता और कर्मचारी जुडाव में नए मानक हासिल किए हैं। उनका दूरदर्शी दृष्टिकोण और जन–केंद्रित प्रबंधन शैली नवाचार को बढावा देने और विभिन्न कार्यों में संगठनात्मक विकास को गति देने में सहायक रही है।

नृपेन्द्र नाथ ने सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी) का पदभार ग्रहण किया

नृपेन्द्र नाथ ने 31.10.2025 को सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी) का पदभार ग्रहण किया। श्री नाथ ने 1988 में आईआईटी (आईएसएम), धनबाद से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने सीसीएल के एन.के. क्षेत्र से अपना करियर शुरू किया और लगभग दो दशकों तक विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त केडीएच परियोजना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने ईसीएल की विभिन्न खदानों में परियोजना अधिकारी सहित महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। सीसीएल के मगध–संघमित्रा क्षेत्र के क्षेत्रीय महाप्रबंधक के रूप में भी उन्होंने क्षेत्र को प्रतिष्ठित 20 मिलियन टन उत्पादन क्लब में शामिल कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑस्ट्रेलिया में प्रशिक्षित सिमटार्स–मान्यता प्राप्त प्रशिक्षक, श्री नाथ सीआईएल की सहायक कंपनियों में खदान सुरक्षा प्रशिक्षण में गहन रूप से शामिल रहे हैं। खदान सुरक्षा प्रबंधन योजनाओं के निर्माण और कार्यान्वयन में उनके प्रयासों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके पास महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय अनुभव भी है, वे 2024 में कई यूरोपीय देशों में एजीटीएमपीए प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा रहे हैं। कोयला उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में उनके विशाल अनुभव से सीएमपीडीआई और सीआईएल को भारत में खनन सुरक्षा और संचालन की उन्नति के लिए वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं का लाभ उठाने में मदद मिलेगी।

अभिषेक स्वामी को एमआरवीसी के नए निदेशक (वित्त) के रूप में अनुशंसित

मुंबई उपनगरीय रेलवे नेटवर्क के आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी, मुं. बई रेलवे विकास निगम लिमिटेड (एमआरवीसी) एक नए वित्तीय प्रमुख की नियुक्ति करने वाली है। सार्वजनिक उद्यम चयन बोर्ड (पीईएसबी) ने आज घोषणा की कि वह निदेशक (वित्त) के महत्वपूर्ण पद के लिए अभिषेक स्वामी की अनुशंसा करता है। श्री स्वामी वर्तमान में रेल मंत्रालय में कार्यकारी निदेशक (वित्त एवं विधि) के रूप में कार्यरत हैं। उनका चयन प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के सात उच्च योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों के समूह में से किया गया है। साक्षात्कार में शामिल उम्मीदवार इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसीएल), एनएलसी इंडिया, सेल और न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआईएल) जैसी कंपनियों से थे। यह निर्णय आयोजित पीईएसबी बैठक (बैठक संख्या 106÷2025 का कार्यवृत्त संख्या 1) के दौरान लिया गया। श्री स्वामी की वित्तीय विशेषज्ञता, विशेष रूप से रेलवे क्षेत्र में, एमआरवीसी को बहुत लाभान्वित करेगी क्योंकि यह मुंबई के उपनगरीय रेल यातायात में सुधार के लिए आवश्यक बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को आगे बढ़ा रही है। उनकी सिफारिश को कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) द्वारा औपचारिक अनुमोदन के लिए भेजा जाएगा। **प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क**.

उत्तराखंड मानव सेवा समिति,दिल्ली

रोजगार से जोड़ने की पहल

उत्तराखंड मानव समिति दिल्ली शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सरोकारों पर राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में निरंतर कार्य कर नित नए आयाम स्थापित कर रही है। आर्थिक रूप से कमजोर व सामाजिक से वंचित छात्र छात्राओं की शिक्षा आर्थिक कारणों से प्रभा. वित न हो इसके लिए संस्था ने प्रभावी कदम उठाए हैं,वहीं राज्य के व्यावसायिक शिक्षा केंद्रों में अध्ययन रत छात्र छात्राओं के बीच व्यक्तित्व विकास से जुड़े कार्यक्रमों पर जोर देते हुए रोजगार से जोड़ने की पहल पर प्रभावी तरीके से काम कर रही है।

यह जानकारी देते हुए उत्तराखंड मानव सेवा समिति दिल्ली के अध्यक्ष पूर्व केंदीय भविष्य निधि आयुक्त वी एन शर्मा ने दी । उन्होंने कहा कि संस्था द्वारा शैक्षणिक उन्नयन की पहल को आगे बढ़ाते हुए विक. ास खंड नैनी डांडा पौड़ी गढ़वाल के आई टी आई सल्ड महादेव,नैनीडाडा की स्थापना के स्वर्णजयंती अवसर पर संस्थान में अध्ययन रत छात्र छात्राओं के बीच व्यक्तित्व विकास एवं प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए जहां विभिन्न एस्कॉर्ट्स स्पोर्ट्स क्लब के सहयोग से खेल कूद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया वहीं इस अवसर पर परिसर में दो दिवसीय एलोपैथिक एवं होम्योपैथिक बृहद चिकित्सा शिवरों का भी आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा कि आई टी आई के स्वर्ण जयंती अवसर को यादगार बनाने में संस्थान में अध्ययन रत छात्र छात्राओं की व्यावसायिक शिक्षा परिषद ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। एस्कॉर्ट्स स्पोर्ट्स क्लब फरीदाबाद हरियाणा के के सहयोग से परिसर में वॉलीबॉल, बैडमिंटन, कैरम बोर्ड और राइफल शूटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 200 ग्रामीणों, छात्र व छात्राओं ने भाग लिया वहीं इस अवसर पर एस्कॉर्ट्स स्पोर्ट्स क्लब फरीदाबाद प्रबंधन के वरिष्ठ अधिकारी पी सी जोशी ने खेल प्रतिभागियों से डिजिटल रूप से संवाद करते हुए उनका हौसला बढ़ाया एवं शुभकामनाएं भी दी।

संस्थान परिसर में इस अवसर पर काशीपुर चामुंडा अस्पताल के सुप्र. सिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ यशपाल रावत के नेतृत्व में एलोपैथिक चिकित्सा टीम एवं दिल्ली के द्वारिका में स्थित लखेड़ा होम्योपैथी चिकित्सालय के सुविख्यात होम्योपैथी चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ लखेड़ा एवं उनकी टीम ने लगभग 300 लोगों का परीक्षण कर निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की गई जिसमें निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिवर में 100 नेत्र रोग रोगियों को निःशुल्क चश्मे भी वितरित किए गए

इस अवसर पर छात्र छात्राओं के साथ ही अभिभावकों व स्थानीय ग्रामीणों के बीच डॉ रावत ने स्वास्थ्य जागरूकता सत्र में क्षेत्र में सन 2000 से लगातार आयोजित किए जा रहे निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के गहन अध्ययन पर खुलासा करते हुए कहा कि क्षेत्र में जीवन शैली में परिवर्तन और अनियोजित खान पान के कारण डायबिटीज के मरीजों की संख्या बढ़ रही है वहीं डॉ लखेड़ा ने होम्योपैथी चिकित्सा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि होम्योपैथी असाध्य रोगों के लिए विश्वसनीय एवं किफायती है लेकिन इसमें रोग निवारण में समय लगता है और रोग जड़ से मिट जाता है।इस अवसर पर आर पी जी लाइफ साइंसेज लिमिटेड के सौजन्य से आयोजित कैंसर जागरूकता शिविर में एम्स ऋषिकेश के कैंसर विशेषज्ञ एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ दीपक सुंदरियाल ने कहा कि उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में कैंसर जाग. रूकता का नितांत अभाव है,जिससे समय पर उपचार न मिलने के कारण लोग इस घातक बीमारी के जद में आ रहे हैं और कैंसर रोगियों में बढ़ोतरी हो रहीं है। उन्होंने जानकारी देते कहा कि उत्तराखंड मानव सेवा समिति दिल्ली के सहयोग से एम्स ऋषिकेश ,कैंसर रोग पीड़ितों के लिए एक नई दवाई पर परीक्षण करने जा रहा है । इस अवसर पर डॉ जरीन,डॉ हिमांशु, डॉ विनोद भट्ट,डॉ निशा,डॉ सोनाली शर्मा ,डॉ नैंसी शर्मा , सूरज धस्माना, आर एस चौहान और नेत्र जांच सहायक के साथ ही व्यवसा. यिक छात्र परिषद के अध्यक्ष तेजपाल रावत, महासचिव बीरेंद्र पटवाल, उपाध्यक्ष विनोद गुसाईं एवं चौहान उपस्थित रहे।

प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क

सुपरस्टार :कोई और नहीं बल्कि राजेश खन्ना उर्फ काका

मैंने सिर्फ एक सुपरस्टार देखा है जो लगातार खबरों में रहता है और वो को. ई और नहीं बल्कि राजेश खन्ना उर्फ काका हैं। वो अमर हैं लेकिन 29 जुलाई 2012 को वो इस दुनिया से चले गए और अपनी अनंत यात्रा पर निकल पड़े। लगभग तेरह साल से ज्यादा हो गए हैं जब काका शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं लेकिन ऐसा कोई दिन नहीं बचा जब उनके बारे में, उनकी फिल्मों के बारे में, उनके अभिनय के बारे में, उनके किस्सों के बारे में या उनके सुनहरे दिनों के बारे में ळववहसम छमू में न दिखाई पड़े।

उनकी फिल्में, गाने, अभिनय आज भी लोकप्रिय हैं और उनके बारे में अक्सर पूछा जाता है, उनकी सुपर डुपर हिट फिल्मों के शो हिट और हाउसफुल होते हैं, जिसमें उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर उनके प्रशंसक पूरे भारत में मनाते हैं। ऐसा ही आभामंडल पहले और असली सुपरस्टार राजेश खन्ना का था, जिनके अंतिम संस्कार में दस लाख से ज्यादा प्रशंसक शामिल हुए, जो गहरे दुख में उनकी "शव यात्रा" में शामिल हुए और कुछ तो आंसू भी बहा रहे थे।

काका के किस्से अंतहीन हैं और उनकी फिल्में आज भी उतनी ही ताजा और अनोखी हैं जितनी सत्तर के दशक और उसके बाद थीं। काका सिर्फ पहले सुपरस्टार या बेहतरीन स्टाइल वाले स्टार नहीं थे, बल्कि उन्हें भगवान ने असाधारण खूबसूरती, ऐसी शालीनता और ताजगी दी थी जो किसी हीरो ने कभी नहीं दिखाई। काका वास्तव में कोई अकेले अभिनेता या हीरो नहीं थे जिनके लिए सुपरस्टारडम शब्द गढ़ा गया था, बल्कि वे खुद में एक संस्था थे जो बॉलीवुड में अपने समय के एक युग का प्रतिनिधित्व करते थे।

मैं उनके मीडिया सलाहकार के रूप में उनके बहुत करीब था, हालांकि कभी–कभी उनके साथ मतभेद होने पर मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ कि उनके मन में मेरे लिए एक विशेष स्नेह है। वह मुझे कभी खोना नहीं चाहते थे क्या. `कि उन्हें ज्यादातर समय खबरों में बने रहना अच्छा लगता था और चूँकि मैं उनके मीडिया को समन्वयित कर रहा था, इसलिए वह हमेशा मुझे अच्छे मूड में रखते थे, हमेशा मेरा पक्ष लेते थे और मुझे अपने गैर–गंभीर मामलों में शामिल नहीं करते थे, सिवाय तब जब उनका मूड और मूड अच्छा होता था।

मैंने काका के साथ वसंत कुंज के होटल हयात रीजेंसी, 81 लोधी एस्टेट के डुप्लेक्स फ्लैट और इससे पहले दिल्ली पब्लिक स्कूल फ्लैट्स के पास संगम पीवीआर के सामने अपार्टमेंट में कई बार खाना खाया और ड्रिंक किया। उन्होंने कई बार आधी रात को तीन बजे व्यक्तिगत रूप से डिनर परोसा। हम दोनों ने साथ में खाना खाया। वह वास्तव में एक रत्न थे, हालाँकि कभी–कभी ड्रिंक के बाद वह अपना आपा भी खो देते थे, लेकिन विशेष मौकों पर। काका एक सटीक जीवन शैली वाले व्यक्ति थे, जो स्टाइल के साथ रहते थे और उच्च मानकों को बनाए रखते थे।

एक बार मैं अपने मित्र टी.एस.भंडारी के साथ काकाजी से मिलने उनके सर्वप्रिय विहार स्थित आवास पर गया, यह सा. `चकर कि काका शायद मुंबई में होंगे। हम हौज खास से गुजर रहे थे और सोचा कि अंदर झांककर देखूं। हालांकि मैं थोड़ा हिचकिचा रहा था क्योंकि मुझे लगा कि अगर वह वाकई घर में हैं तो शायद उन्हें यह पसंद न आए क्योंकि मैंने वहां जाने से पहले उनसे बात नहीं की थी। बहरहाल, मैंने यह सोचकर घंटी बजाई कि वह घर में नहीं हैं। हालांकि कुछ मिनटों के बाद दरवाजा खुला और काका मेरे सामने थे।

वह शायद थोड़ा तनाव में थे, शायद नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें परेशान करे। वह अपने घर के साधारण परिधान में थे। उन्होंने हमें दो मिनट तक देखा, फिर अंदर आने का इशारा किया। धीरे–धीरे उनका मूड बदला और वे खुश मूड में आ गए। मैं अपने साथ उत्तरांचल हू इज हू के दो संस्करण ले जा रहा था, जिसमें उनके चित्र भी थे। कुछ देर बाद जब हम सोफे पर बैठे काका से बातचीत कर रहे थे, तो मैंने देखा कि बगल में एक गिलास में ड्रिंक (शराब) रखा हुआ है।

दोपहर के करीब बारह बजे थे और एसी पूरे जोरों पर चल रहा था। मैं काका को मेरे मित्र भंडारी जी के सामने मेरे बारे में बात करते और मेरी तारीफ करते देख हैरान था। काका कह रहे थे कि उन्होंने चुनावों में मेरे लिए बहुत काम किया है, मेरे मीडिया का बेहतरीन समन्वय किया है, उनके पास धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं हैं आदि आदि। काका को अंग्रेजी मीडिया का बहुत शौक था क्योंकि उनका मानना था कि इसे मुख्य रूप से अभिजात्य वर्ग द्वारा पढ़ा जाता है।

भंडारी जी काका को यह कहने से नहीं रोक सके कि खन्ना जी दुनिया तो आपके फैन हैं और आप सुनील नेगी के वह वास्तव में मेरे मित्र के सामने मेरी छवि को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहा था ताकि मेरी प्रतिष्ठा बढ़े

ये राजेश खन्ना थे। जब मैंने काका जी से अलग से पूछा कि सर मेरी तारीफ करने की क्या जरूरत थी। तो उन्होंने जवाब दिया यार नेगी, मैंने आपकी तारीफ नहीं की, बल्कि आपकी कार्यकुशलता और मेरे चुनावों में आपके अमूल्य योगदान की तारीफ की। इस महान सितारे की भावनाओं और मेरे लिए उनके दयालु शब्दों के लिए मेरे पास धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं थे और चूंकि मै. ने अंग्रेजी और हिंदी दोनों मीडिया को बड़ी कुशलता से संभाला था और काका को जबरदस्त सकारात्मक मीडिया प्रचार मिला था, इसलिए वे बेहद प्रभावित हुए। इससे मुझे विश्वास हो गया कि वे क्यों पहले सुपरस्टार हैं और पूरी दुनिया में क्यों रहते हैं, न केवल अपने बेहतरीन अभिनय, सुंदरता, अच्छी फिल्मों, शैली,

अभिनय और मंत्रमुग्ध कर देने वाले संगीत और गायन के लिए बल्कि अपने खुले दिल, व्यापक भावनाओं और उदा. रता के लिए। आज काका जी हमारे बीच नहीं हैं। उनका आशीर्वाद भी नहीं है जिसे संग्रहालय में बदलने का उनका चिरस्थायी सपना था, लेकिन काका के लाखों–करोड़ों प्रशंसकवद के लिए वे कभी नहीं मरेंगे और हमेशा रहेंगे। वे अमर हैं और राजेश खन्ना कभी नहीं मरते।

प्रस्तुत स्टोरी हमारे उत्तराखंड ब्यूरो प्रमुख सुनील नेगी की जुबानी है। सुपरस्टार राजेश खन्ना के साथ सहयोगी के तौर पर उन्होंने एक लंबा समय व्यतीत किया था। उस दौरान राजेश खन्ना को नजदीक से जानने का मौका मिला था। उस खुशनुमा पल को श्री नगी ने पाठकों से शेयर किया है।

कैसे और कब करवाना पड़ता लिवर ट्रांसप्लांट

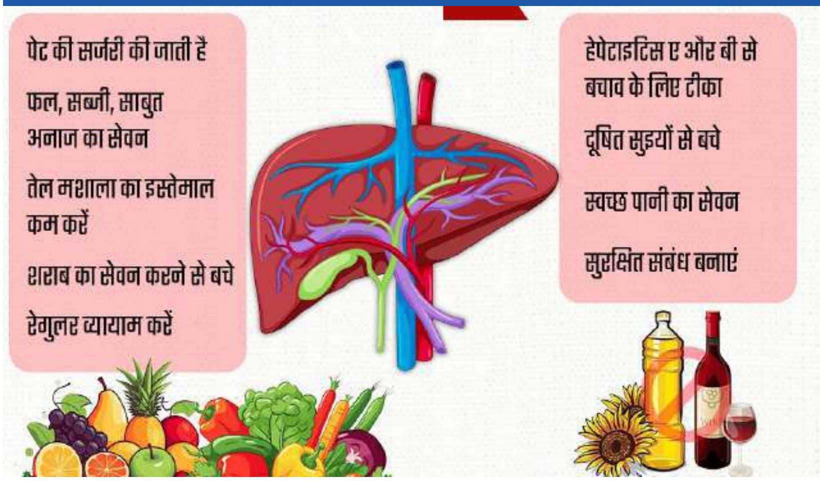

लिवर शरीर के सबसे अहम अंगों में से एक है, लेकिन जब ये इस कदर खराब हो जाए कि अपना काम ही न कर पाए तो कई मामलों में लिवर ट्रांसप्लांट कराना पड़ सकता है। लिवर ट्रांसप्लांट एक ऐसी सर्जरी है जिसमें खराब लिवर को निकालकर उसकी जगह किसी दूसरे व्यक्ति, जिसे डोनर कहते हैं, से लिया गया स्वस्थ लिवर या उसका एक हिस्सा लगाया जाता है। लिवर ट्रांसप्लांट कराने की जरूरत कब पड़ती है। लिवर ट्रांसप्लांट के नियम और शर्तें क्या हैं? लिवर ट्रांसप्लांट के बाद किन बातों का खयाल रखना चाहिए। ये समझने के लिए हमने लीलावती हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, मुंबई के डिपार्टमेंट ऑफ लिवर ट्रांसप्लांट एंड एचपीबी सर्जरी की कंसल्टेंट और हेड डॉ. विभा वर्मा और दिल्ली के मैक्स सेंटर फॉर लिवर एंड बिलियरी साइंसेज के चेयरमैन और लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. सुभाष गुप्ता से बात की।

कब करवाना पड़ता है लिवर ट्रांसप्लांट?

दोनों ही एक्सपर्ट सिरोसिस, लिवर में शुरू होने वाले कैंसर यानी प्राइमरी लिवर कैंसर, एक्यूट लिवर फेल्योर और बच्चों में कुछ जन्मजात कंडिशन के मामले में लिवर ट्रांसप्लांट की जरूरत बताते हैं। लिवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. सुभाष गुप्ता कहते हैं कि लिवर ट्रांसप्लांट मुख्य रूप से तीन बीमारियों में किया जाता है।

1. सिरोसिस यानी लिवर पर स्थायी घाव जिससे इसका कामकाज प्रभावित होता है। ये आमतौर पर एल्कोहल, हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी से होता है। मोटापा और डायबिटीज भी इसके रिस्क फैक्टर हैं।

2. जब लिवर के बाइल डक्ट यानी पित्त की नलियों में समस्या हो, जिसे कोलेस्टेटिक लिवर डिजीज कहते हैं. इसमें लिवर ठीक होता है, लेकिन इसमें बाइल यानी पित्त का फ्लो ठीक से नहीं होता।

3. लिवर कैंसर

डॉ. सुभाष गुप्ता बताते हैं कि लिवर कैंसर दो तरह का होता है, प्राइमरी लिवर कैंसर मतलब जब लिवर के अंदर से ही कैंसर शुरू हुआ हो और सेकेंडरी लिवर कैंसर मतलब जब शरीर के किसी दूसरे हिस्से में कैंसर शुरू हो और लिवर तक फैल जाए। वह कहते हैं कि प्राइमरी लिवर कैंसर में लिवर ट्रांसप्लांट किया जाता है। डॉक्टर विभा वर्मा बताती हैं कि लिवर ट्रांसप्लांट से सिरोसिस के मरीजों में होने वाले कुछ लिवर कैंसर पूरी तरह से ठीक हो सकते हैं। कुछ मामलों में, जब कैंसर बड़ी आंत या मलाशय से शुरू हो और केवल लिवर तक फैला हो, ऐसे मामलों में लिवर ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। इसके अलावा लिवर ट्रांसप्लांट की चौथी वजह एक्यूट लिवर फेल्योर होता है। डॉक्टर विभा वर्मा कहती हैं कि एक्यूट लिवर फेल्योर के मामले में इमरजेंसी ट्रांसप्लांट की जरूरत पड़ती है। इसकी वजह कभी-कभी हेपेटाइटिस ए या ई जैसे वायरल संक्रमण हो सकते हैं या कुछ दवाइयां।

लिवर ट्रांसप्लांट कितने तरह के होते हैं?

ट्रांसप्लांट के लिए लिवर मृत डोनर से लिया जा सकता है या जीवित डोनर भी हो सकते हैं। इसमें डॉक्टर मरीज के बीमारी वाले या काम नहीं कर रहे लिवर को निकालकर उसकी जगह डोनेट किया हुआ लिवर लगा देते हैं। डॉ. विभा वर्मा बताती हैं कि इसमें डोनर का पूरा लिवर मरीज में ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। या फिर लिवर को दो हिस्सों में कर के एक हिस्सा किसी वयस्क मरीज और दूसरा हिस्सा किसी बच्चे को ट्रांसप्लांट किया जा सकता है।

लिविंग डोनर ट्रांसप्लांट

एक स्वस्थ व्यक्ति अपने लिवर का एक हिस्सा दान कर सकता है। ऐसे डोनर को लिविंग डोनर कहा जाता है। लिविंग डोनर मरीज के परिवार के ही हो सकते हैं। डॉ. सुभाष कहते हैं, इसका मतलब ये है कि परिवार का कोई सदस्य लिवर का हिस्सा देगा, उसके अलावा कोई नहीं। जैसे माता या पिता अपने बच्चे को या बच्चे अपने माता या पिता को, पति, पत्नी, भाई, बहन भी लिवर डोनर बन सकते हैं। इसमें भी कानूनी प्रक्रियाओं का पालन होता है। डॉ. विभा वर्मा बताती हैं कि भारत में लिवर ट्रांसप्लांट ट्रांसप्लां. टेशन ऑफ ह्यूमन ऑर्गन्स एक्ट के अधीन है। इसके अनुसार लिवर डोनर मरीज के परिवार का सदस्य होना चाहिए, वयस्क होना चाहिए और उसे अपनी इच्छा से सहमति देनी चाहिए। सरकार से मंजूरी वाली एक समिति मरीज और डोनर के रिश्ते की पुष्टि करती है और यह सुनिश्चित करती है कि कोई दबाव या जबरदस्ती न हो। कानूनी मंजूरी के बाद, डोनर और लिवर ट्रांसप्लांट की जरूरत वाले मरीज दोनों की विस्तृत मेडिकल जांच होती है, ताकि इस सर्जरी के लिए उनकी फिटनेस की पुष्टि हो सके। डॉ. विभा वर्मा कहती हैं कि लिविंग डोनर का ब्लड ग्रुप कम्पैटिबल यानी मरीज के ब्लड ग्रुप के अनुकूल होना चाहिए. डोनर स्वस्थ होना चाहिए, उसकी उम्र 18 से 55 साल के बीच होनी चाहिए। लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट में डोनर के लिवर का केवल एक हिस्सा लिया जाता है, दाहिना, बायां, या एक तरफ का एक हिस्सा। समय के साथ डोनर और लिवर पाने वाले दोनों का लिवर अपने पूरे आकार में आ जाता है। डॉ. सुभाष गुप्ता बताते हैं कि ट्रांसप्लांट के बाद लिवर दो हफ्ते में लगभग 70 प्रतिशत और एक महीने में लगभग 80-90 प्रतिशत आकार में आ जाता है। डोनर और उसके लिवर का हिस्सा पाने वाले दोनों का लिवर एक साल में अपने 95-100 प्रतिशत आकार में वापस आ जाता है। डॉ. सुभ. ाष गुप्ता बताते हैं कि भारत में ज्यादातर लिवर ट्रांसप्लांट लिविंग डोनर से होते हैं.भारत के नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक साल 2024 में देश में 952 मृत डोनर से लिवर ट्रांसप्लांट और 3 हजार 946 लिविंग डोनर से लिवर ट्रांसप्लांट किया गया। डॉ. सुभाष गुप्ता कहते हैं कि भारत में अंगदान को लेकर उतनी जागरुकता नहीं है, जितनी होनी चाहिए। वह कहते हैं कि अंगदान बहुत जरूरी है। इससे बहुत लोगों की जान बच सकती है। आजकल ज़्यादातर लोगों की मृत्यु अस्पताल में होती है, फिर भी अंगदान में बहुत कमी है।

ट्रांसप्लांट के बाद क्या सावधानियां रखनी चाहिए?

लिवर ट्रांसप्लांट के बाद ये ध्यान देने की जरूरत होती है कि मरीज को मिला नया लिवर ठीक से काम कर रहा है या नहीं.इसके लिए डॉक्टर से जांच करवाते रहने की जरूरत है. ट्रांसप्लांट के बाद डॉक्टर ऑर्गन रिजेक्शन और दूसरी दिक्कतों की जांच करवाते हैं.

ऑर्गन रिजेक्शन क्या होता है?

ऑर्गन रिजेक्शन तब होता है जब शरीर का इम्यून सिस्टम ट्रांसप्लांट किए गए लिवर को बाहरी समझकर उसे नष्ट करने की कोशिश करता है. ट्रांसप्लांट के बाद के पहले तीन से छह महीनों में इसकी आशंका सबसे ज़्यादा होती है।

ऑर्गन रिजेक्शन के लक्षण और संकेत क्या हैं?

अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआईएच) के मुताबिक असामान्य लिवर ब्लड टेस्ट के ऑर्गन रिजेक्शन का पहला संकेत हो सकते हैं। ऑर्गन रिजेक्शन के संकेत हमेशा ऐसे नहीं होते कि आप उसकी पहचान कर सकें.ऑर्गन रिजेक्शन के लक्षण जब सामने आते हैं, तो ये हो सकते हैं जैसे थकान महसूस होना, पेट में दर्द बुखार,त्वचा और आंखों के सफेद भाग का पीला पड़ना,गहरे रंग का पेशाब, हल्के रंग का मल। ऑर्गन रिजेक्शन को रोकने के लिए डॉक्टर ऐसी दवाइयां लिखते हैं, जिन्हें इम्यूना. `सप्रेसेंट्स कहते हैं। ये दवाइयां ट्रांसप्लांट किए गए लिवर के प्रति इम्यून सिस्टम की प्रतिक्रिया को कम करके ऑर्गन रिजेक्शन को रोकती हैं। डॉ. विभा वर्मा बताती हैं कि ट्रांसप्लांट के बाद पहले तीन महीने सबसे नाजुक होते हैं क्योंकि इस दौरान इम्यूनोसप्रेसेंट्स के कारण संक्रमण का रिस्क सबसे ज़्यादा होता है।

मरीज इन बातों को रखें ध्यान

मरीज को मास्क पहनना चाहिए और भीड़–भाड़ वाले या प्रदूषित इलाकों में जाने से बचना चाहिए। ऑर्गन रिजेक्शन का रिस्क हो सकता है, जिसका पता ब्लड टेस्ट या लिवर बायोप्सी से लगाया जाता है और इम्यूनोसप्रेसेंट की डोज एडजस्ट करके इसका इलाज किया जाता है.ट्रांसप्लांट के पहले तीन महीनों के दौरान, भारी शारीरिक गतिविधियों से बचना चाहिए.इस अवधि के बाद, दवाइयां और फॉलो–अप विजिट्स धीरे–धीरे कम हो जाती हैं और मरीज काम पर लौट सकते है। समय पर दवाइयां लेना, डॉक्टर की सलाह के अनुसार ब्लड टेस्ट करवाना और किसी भी असामान्य लक्षण की तुरंत सूचना देना जरूरी है। डॉ. विभा वर्मा कहती हैं कि ज्यादातर मरीज लिवर ट्रांसप्लांट के बाद सामान्य और सक्रिय जीवन जीने लगते हैं।

एम्स में आधे से भी कम खर्च में होगी सर्जरी

देश का पहला हार्ट ट्रांसप्लांट करने वाला एम्स, लिवर ट्रांसप्लांट के मामले में पिछड़ा हुआ है। अब एम्स नई ऊर्जा के साथ इस दिशा में आगे बढ़ने जा रहा है। पिछले कुछ महीनों में 4 लिवर ट्रांसप्लांट हुए हैं, जिसमें एक लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट (स्क्स्ज) भी है। खास बात यह है कि 30 से 40 लाख के बीच प्राइवेट में होने वाला ट्रांसप्लांट एम्स में सीजीएचएस रेट मात्र 11 से 14 लाख में ही हो जाएगा।

लिवर ट्रांसप्लांट की दिशा में तेजी से किया काम

एम्स का कहना है कि जब कैडेवर डोनेशन के लिए एक्ट बना था, तभी से एम्स का गैस्ट्रो सर्जरी विभाग एक्टिव था। 1996 में पहली बार अटेंप्ट लिया गया था, तब सारा फोकस कैडवर डोनेशन पर था। विभाग का फोकस कभी लि. विंग डोनेशन के जरिए ट्रांसप्लांट की दिशा में गया नहीं। जबकि नॉर्थ इंडिया में 90 परसेंट ट्रांसप्लांट लिविंग डोनर से ही होता है और मात्र 10 परसेंट कैडेवर डोनेशन से किया जाता है। वहीं, साउथ इंडिया में 70 परसेंट लिविंग और 30 परसेंट कैडेवर से होता है। इसलिए समय की जरूरत को समझते हुए अब एम्स प्रशासन ने लिविंग डोनर लिवर ट्रांसप्लांट की दिशा में काम को तेज किया है।

इस साल बनाई थी कमेटी

एम्स ने मार्च में 11 मेंबर की कमेटी बनाई थी, जिसका चेयरमैन गुजरात यूनिवर्सिटी ऑफ ट्रांसप्लांटेशन साइंस के वाइस चांसलर डॉ. प्रांजल को बनाया हैं। डॉ. प्रांजल न केवल लिविंग डोनर ट्रांसप्लांट को बेहतर करने की दिशा में अपनी राय दे रहे हैं, बल्कि ट्रांसप्लांट सर्जरी को लीड भी कर रहे हैं। साथ ही एम्स के सर्जन को ट्रांसप्लांट की बारिकियां भी सीखा रहे हैं। एम्स का भी मानना है कि सरकारी अस्पताल के एक्सपर्ट के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। जितनी सर्जरी होंगी, हमारा अनुभव उतना बढ़ेगा और कुछ महीनों में एम्स के सर्जन भी इसे अपने स्किल की मदद से सर्जरी कर पाएंगे।

तेजी से हो रहा इस दिशा में काम

एम्स के गैस्ट्रो सर्जरी के सर्जन डॉ. सुजय पॉल ने बताया कि कैडेवर डोनर से मिले लिवर के लिए ट्रांसप्लांट का एसओपी हमारे पास है। अभी लिविंग डोनर को लेकर नई एसओपी बनाई जा रही है। अब तक एम्स में कुल 59 लिवर ट्रांसप्लांट हो चुके हैं, 4 लिविंग है, पहला लि. विंग 2015 में किया गया था। हाल ही में एक और लिविंग ट्रांसप्लांट किया गया है। उन्होंने कहा कि हमारे पास अभी 7 फैकल्टी हैं, सभी इसका हिस्सा हैं। हमारा मकसद लिविंग लिवर ट्रांसप्लांट की दिशा में भी मरीजों को बेस्ट सुविधा और केयर प्रदान करना है और इस दिशा में हम तेजी से काम कर रहे हैं।

.प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

डबल सब्सिडी से सौर ऊर्जा से रोशन हो रहा है छत्तीसगढ़

रायपुर। छत्तीसगढ़ में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना लोगों के लिए बड़ी राहत लेकर आई है। केंद्र सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को राज्य सरकार का प्रत्यक्ष सहयोग मिलने से अब इसका लाभ दोगुना हो गया है। डबल सब्सिडी और हाफत्रत्र बिजली से मुफ्त बिजली के नारे के साथ यह योजना न केवल बिजली बिलों का बोझ कम कर रही है, बल्कि आम लोगों के लिए अतिरिक्त आय का साधन भी बना रही है।

आवासीय मकानों की छतों पर सौर पैनल स्थापित कर स्वच्छ और किफायती ऊर्जा उपलब्ध कराना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। पहले केंद्र सरकार द्वारा 60 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही थी, लेकिन अब राज्य सरकार के सहयोग से यह राहत और बढ़ गई है। उदाहरण के तौर पर, 3 किलोवाट क्षमता का सौर पैनल लगाने की लागत लगभग 1.50 लाख रुपये आती है। डबल सब्सिडी के बाद उपभोक्ताओं को सिर्फ 30 से 40 हजार रुपये का खर्च करना होगा।

योजना के अंतर्गत उपभोक्ताओं को बैंकों से 6.5 प्रतिशत ब्याज दर पर 10 साल की अवधि के लिए ऋण की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। इससे मासिक ईएमआई मौजूदा बिजली बिल से भी कम साबित होगी। कुछ वर्षों बाद उपभोक्ता जीवनभर मुफ्त बिजली का लाभ ले सक. ेंगे। इतना ही नहीं, जरूरत से अधिक उत्पादित बिजली को ग्रिड के माध्यम से राज्य की वितरण कंपनियों को बेचा जा सकेगा, जिससे लोगों को अतिरिक्त आय भी होगी। यह योजना आर्थिक ही नहीं बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण साबित हो रही है। हर घर "ग्रीन एनर्जी हब" बन रहा है और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने में योगदान दे रहा है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में जहां बिजली आपूर्ति बाधित रहती है, वहां सौर ऊर्जा के जरिए लगातार और स्वच्छ बि. जली उपलब्ध होगी। साथ ही स्थानीय युवाओं के लिए इंस्टॉलेशन, तकनीकी और रखरखाव कार्यों में रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे। राज्य सरकार का नारा हैकृ हाफ बिजली से मुफ्त बिजली की ओर छत्तीसगढ़। इसका मतलब है कि जितना पैसा पहले लोग बिजली बिल में खर्च करते थे, अब उसी राशि से सौर पैनल लगाकर जीवनभर मुफ्त बिजली पा सकते हैं। योजना का लाभ लेने के लिए इच्छुक नागरिक चउेनतलंहींत.हवअ. पद पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। निरीक्षण और इंस्टॉलेशन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद सब्सिडी की राशि सीधे उपभोक्ता के खाते में जमा की जाएगी।

डबल सब्सिडी, किफायती ऋण, अतिरिक्त आय और पर्यावरण संरक्षण जैसे लाभों के साथ यह योजना छत्तीसगढ़ को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो रही है। सरकार का मानना

है कि जनभागीदारी और जागरूकता से "हर घर सौर दृ हर घर रोशन" का सपना जल्द ही हकीकत बन जाएगा।

उपभोक्ताओं को बिजली बिल के तनाव से मिली मुक्ति

सरकार की महत्वाकांक्षी प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का पूरे जिले के लोगों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। लोग अपने घर में सोलर सिस्टम लगाकर अब खुद ही बि. जली निर्माता बन गए हैं और इसे वापस बिजली वितरण कंपनी को दे रहे हैं। जिससे उनके घर का बिजली का बिल न के बराबर या फिर बहुत कम आ रहा है। राज्य में घरेलू सोलर पावर प्लांट लगाने के मामले में रायगढ़ जिला लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। छत्ती. सगढ़ विद्युत वितरण कंपनी और स्थ. ानीय बैंकों के सहयोग से लोग आसानी से सोलर सिस्टम अपने घरों में लगवा रहे हैं। सोलर सिस्टम लगाने से पैसे की बचत रायगढ़ शहर की लाभार्थी सुनीता पटेल बताती हैं कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत उन्होंने आसानी से आवेदन किया। आवेदन के बाद बैंक से तुरंत लोन मिला और अगले दिन उनके घर में 3 किलोवाट का सोलर सिस्टम लग गया। बीते दो महीने से उनके घर का बिजली बिल नहीं के बराबर आ रहा है, जो पहले 3 हजार रुपये से अधिक का आता था अब वह ऋणात्मक में आ रहा है। इसका फायदा देखते हुए उन्होंने अपने घर में एक और सोलर सिस्टम लगवा लिया। सुनीता पटेल कहती है कि सोलर सिस्टम लगाने से पैसे की बचत हो रही है, इस बार उनका दीवाली अच्छे से मनेगा। एक लाख से अधिक की सब्सिडी केंद्र और राज्य द्वारा लोगों को 3 किलोवाट के सोलर सिस्टम में 1 लाख 08 हजार रूपये की सब्सिडी मिल रही है। जिसमें केंद्र सरकार की ओर से 78 हजार और राज्य सरकार की ओर से 30 हजार रूपये मिल रहे हैं। 3 किलोवाट के सिस्टम को लगाने में प्रति सिस्टम 1 लाख 90 हजार रूपये का खर्च आता है सब्सिडी काटने के बाद यह रकम महज 72 हजार रूपये हो जाती है जिसे सभी बैंक 6 प्रतिशत की दर से 10 साल के लिए ऋण दे रहे हैं। हजार रूपये से कम के मासिक किश्तों में यह सिस्टम पड़ जाता है।

सौर सुजला योजना से किसानों को आसानी से मिल रहा सिंचाई के लिए पानी

छत्तीसगढ़ में सौर सुजला योजना से किसानों को आसानी से मिल रहा सिंचाई के लिए पानी, और उत्पादन बढ़ रहा है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों को हर संभव सहायता देने और उन्हें शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंच. ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में जशपुर जिले में कृषि विभाग की ओर से किसानों को योजनाओं का लाभ दिलाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। जशपुर जिले के कुनकुरी विकासखंड के ग्राम गिनाबहार निवासी कृषक सुखसाय को कृषि विभाग की योजनाओं से विशेष रूप से लाभ मिला है। उनके पास कुल 2 हेक्टेयर कृषि भूमि है, जिसमें सिंचाई की व्यवस्था सीमित होने के कारण वे पूर्ण रूप से खेती नहीं कर पा रहे थे। पहले एक कुएं के माध्यम से सिंचाई की कोशिश करते थे, लेकिन पंप की अनुपलब्धता के कारण दिक्कतें आती थीं।

सिंचाई के साधन हुए सुलभ

पहले किसान सुखसाय सिर्फ सीमित जमीन पर खेती कर पाते थे, क्योंकि सिंचाई की सुविधा नहीं थी। लेकिन इस साल उन्हें सौर सुजला योजना के तहत सोलर पंप और शाकम्भरी योजना के तहत विद्युत पंप मिला, जिसके माध्यम से स्प्रिंकलर प्रणाली से सिंचाई की जा रही है। अब वे पूरे खेत में गेहूं, धान जैसी प्रमुख फसलें आसानी से उगा पा रहे हैं। उनका कहना है कि अब खेती दोबारा लाभ का साधन बन गई है।

अब सुखसाय रबी और खरीफ दोनों ही मौसम में कृषि कार्य कर रहे हैं। पहले जहां खेती सीमित थी, अब बेहतर सिंचाई सुविधा मिलने से उनकी भूमि पूरी तरह उपयोग में आ रही है और उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। श्री सुखसाय ने राज्य सर. कार और कृषि विभाग का आभार जताते हुए कहा कि इन योजनाओं से उनकी आजीविका को मजबूती मिली है और खेती फिर से लाभ का साधन बन गई है।

योजना का उद्देश्य किसानों को रियायती दरों पर सौर सिंचाई पंप उपलब्ध कराना

छत्तीसगढ़ सौर सुजला योजना का उद्देश्य किसानों को रियायती दरों पर सौर सिंचाई पंप उपलब्ध कराना है, ताकि वे सिंचाई कर सकें और कृषि उत्पादन बढ़ा सकें। इस योजना को छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (क्रेडा) द्वारा लागू किया जा रहा है, और लाभार्थियों का चयन कृषि विभाग करता है। योजना के तहत 3 एचपी और 5 एचपी की क्षमता वाले पंप स्थापित किए जाते हैं।

प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

मध्य प्रदेश में दलित उत्पीड़न की स्थिति गंभीर!

दलितों को पेशाब पिलाने के सामने आए मामलों से राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर बढ़ा आक्रोश

मध्य प्रदेश में दलित उत्पीड़न की स्थिति गंभीर है और हाल ही में कई चौंक. ाने वाली घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें कुछ मामलों में क्रूरता की हद पार की गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्टों के अनुसार, राज्य में अनुसूचित जाति (एससी) के खिलाफ अपराध दर देश में सबसे अधिक है।

हाल ही में भिंड में युवक से बर्बरता की गई। अक्टूबर 2025 में, भिंड जिले में एक 25 वर्षीय दलित युवक का अपहरण कर बेरहमी से पिटाई की गई और कथित तौर पर उसे जबरन पेशाब पीने के लिए मजबूर किया गया। यह घटना तब हुई जब पीड़ित ने आरोपी के यहां ड्राइवर का काम छोड़ दिया था। वहीं अक्टूबर 2025 में ही, कटनी जिले के स्लीमनाबाद में अवैध खनन का विरोध करने पर एक दलित व्यक्ति के साथ मारपीट की गई और उसके चेहरे पर पेशाब किया गया। इसके अलावा नवंबर 2024 में शिवपुरी जिले के एक गांव में पानी भरने के विवाद में एक दलित युवक की कथित तौर पर पीट–पीटकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में स्थानीय सरपंच और उसके परिवार के सदस्यों पर आरोप लगे थे। इसके अलावा जाति सूचक षब्दों को लेकर भी कई मामले दर्ज हुए।

मध्य प्रदेश विधानसभा में जुलाई 2025 में पेश किए गए आंकड़ों के अनुसार, 2022 से 2024 के बीच राज्य में दलित और आदिवासी महिलाओं के खिलाफ 44,978 अपराध दर्ज किए गए, जिसका मतलब है कि हर दिन औसतन 41 महिलाएं अपराधों का शिकार हुईं। इन मामलों में बलात्कार और हत्या के मामले भी शा. मिल हैं। अगर मामलों पर कार्रवाई की बात की जाए तो इन मामलों में पुलिस द्वारा एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामले दर्ज किए गए हैं और आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। हालांकि, इन घटनाओं ने राज्य की कानून–व्यवस्था की स्थिति और दलितों के प्रति सामाजिक रवैये पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं, जिससे राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर आक्रोश है।

मौजूदा हालत यह है कि मध्य प्रदेश राज्य में दलितों का उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है। यहां के एक दलित ने पेषाब पिलाने का आरोप लगाया है। 15 दिन में इस तरह के उत्पीड़न का तीसरा मामला सामने आया है। पीड़ित दलित 33 साल के ज्ञानसिंह जाटव द्वारा पु. लिस को दी षिकायत के मुताबिक मध्य प्रदेश के भिंड जिले में 20 अक्तूबर को ज्ञानसिंह जाटव के साथ मारपीट की गई और जबरदस्ती पेशाब पिलाई गई। पिछले 15 दिनों के भीतर मध्य प्रदेश में जातिगत उत्पीड़न के तीन गंभीर मामले सामने आए हैं। सबसे ताजा मामला भिंड से आया है जिसने एक बार फिर प्रदेश की कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए है।अवहीं भिंड पुलिस ने ज्ञान. सिंह के साथ हुए उत्पीड़न के मामले में तीन लोगों, सोनू बरुआ, आलोक शर्मा और छोटू पर एफआईआर दर्ज की है। भिंड जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव पाठक ने कहा कि इस मामले में हमने मारपीट, अपहरण और एससी–एसटी एक्ट की संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज किया है और तीन लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। मामले की जांच की जा रही है और साक्ष्य जुटाने में पुलिस की टीम लगी हुई है।वहीं भिंड जिला अस्पताल में भर्ती ज्ञान सिंह का कहना है कि उनके साथ दलित होने के कारण ये घटना हुई है और इसका असर उनके पूरे परिवार पर

पड़ रहा है।

यह है पूरा मामला

भिंड जिले के रहने वाले ज्ञानसिंह पेशे से ड्राइवर हैं। वो दावा करते हैं कि 18 अक्तूबर को पास के गांव के सोनू बरुआ ने उनसे अपनी गाड़ी के लिए ड्राइवर के तौर पर काम करने के लिए कहा। उन्हा. ेने मुझे गाड़ी के लिए ड्राइवर के तौर पर बुलाया था लेकिन मुझे उनके साथ काम नहीं करना था। मेरा गांव इनके गांव से आधा किलोमीटर दूर है। मुझे ये पता था कि ये लोग आपराधिक प्रवृत्ति के लोग हैं। मुझे इनके लिए काम नहीं करना था। ज्ञानसिंह का आरोप है कि गाड़ी के लिए ड्राइवर की ड्यूटी करने से मना करने के बाद उनको बंदूक की नोक पर उनके घर से अगवा करके मारपीट की गई। अस्पताल में इलाजरत ज्ञानसिंह फोन पर रुंधे हुए गले से कहते हैं कि मेरा अपराध क्या था सर। उन्होंने मुझसे गाड़ी चलाने के लिए कहा, मैंने मना कर दिया। मैंने डर से उनकी गाड़ी चलाने से मना कर दिया, इसके बाद उन्होंने मुझे घर से किडनैप किया, मुझे मारा और जबरदस्ती पेशाब पिलाई। ज्ञानसिंह दो बच्चों के पिता हैं। उनकी पत्नी पिंकी जाटव ने बीबीसी से कहा, ष्मेरे पति को इतना मारा कि वो दो दिन से अस्पताल में भर्ती हैं। शरीर का जख्म तो भर जाएगा, पेशाब पिला दी, पूरे गांव को ये पता है, हमारे लिए तो जिंदगी बहुत कठिन हो गई है। हर कोई हमें उसी नजर से देखेगा, मेरे बच्चों को भी यही झेलना पड़ेगा। जहां एक तरफ भिंड में ज्ञानसिंह और उनके परिवार के लिए परेशानियां बढ़ी हुई हैं, वहीं भिंड से लगभग 500 किलोमीटर दूर कटनी जिले में राजकुमार चौधरी का परिवार भी सदमे में हैं। अकटनी में 10 दिन पहले दलित व्यक्ति के साथ मारपीट और पेशाब पिलाने की घटना सामने आई थी।

कटनी में दलित के साथ हिंसा, पेशाब पिलाने का आरोप

मध्य प्रदेश के कटनी जिले में 36 साल के दलित किसान राजकुमार चौधरी ने भी अपने साथ मारपीट और पेशाब पिलाने का आरोप लगाया। राजकुमार ने आरोप लगाए कि उन्होंने 13 अक्तूबर की शाम अपने खेत के पास सरकारी जमीन पर हो रहे अवैध खनन का विरोध किया। इसके चलते खनन कर रहे राम बिहारी, गांव के सरपंच रामानुज पांडेय, उनके बेटे पवन पांडेय और कुछ अन्य लोगों ने उन्हें बुरी तरह पीटा। राजकुमार का कहना है कि मुझे लातों से मारा गया और मारपीट के दौरान गांव के सरपंच रामानुज पांडे के बेटे पवन पांडेय ने मुंह पर पेशाब कर दिया। मुझे पिटने से बचाने पहुंचीं मेरी मां को भी बालों से घसीटा गया और जातिसूचक गालियां दी गईं। पुलिस ने इस मामले में दोनों पक्षों की शिकायत पर क्रॉस एफआईआर दर्ज की है। एक शिकायत सामान्य वर्ग के परिवार की ओर से 13 अक्तूबर को दर्ज हुई थी, जबकि राजकुमार की ओर से दो दिन बाद एससी–एसटी अत्याचार निवारण कानून के तहत मामला दर्ज किया गया। कटनी पुलिस अधीक्षक अभि. ानव विश्वकर्मा ने कहा कि हमने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज किया है। इसमें अब तक हम किसी भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर पाएं हैं, लेकिन पुलिस प्रयास में लगी है और जल्द ही गिरफ्तारी की जाएगी।

एससी-एसटी एक्ट के प्रभावी क्रियान्वयन में कई स्तरों पर बरती जाती है लापरवाही : अधिवक्ता सोनवाने

मध्य प्रदेश में काम कर रहीं अधिवक्ता निकिता सोनवाने का कहना है कि एससी–एसटी एक्ट के प्रभावी क्रिय. ान्वयन में कई स्तरों पर लापरवाही बरती जाती है। निकिता ने बताया कि इन अपराधों की जड़ में केवल सामाजिक पूर्वाग्रह नहीं, बल्कि प्रशासनिक ढिलाई और जवाबदेही की कमी भी है। कई बार आरोपियों पर दर्ज मामलों को आपसी विवाद बताकर, या फिर क्रॉस एफआई. आर करके मामले को कमजोर बना दिया जाता है। उन्होंने कहा कि इससे पीड़ित पक्ष पर अनचाहा दबाव बनता है।

दमोह जिले के सतरिया गांव की घटना

देश का दिल कहे जाने वाले मध्य प्रदेश में दलित समुदाय के खिलाफ होने वाले अपराधों ने प्रदेश की कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। कटनी और भिंड से सामने आए मामलों के कुछ दिन पहले मध्य प्रदेश के दमोह जिले के सतरिया गांव से भी उत्पीड़न की एक घटना सामने आई। यहां आरा. `प है कि ओबीसी समाज के पुरुषोत्तम कुशवाहा को एक ब्राह्मण युवक अनुज पांडे के पैर धोकर वही पानी पीने के लिए मजबूर किया गया पुरुषोत्तम के परिवार का कहना है कि यह घटना गांव में शराबबंदी को लेकर शुरू हुए विवाद के बाद हुई। ग्रामीणों ने अनुज पांडे पर शराबबंदी के बीच शराब बे. चने का आरोप लगाया था और इस पर कुशवाहा समाज और पांडे परिवार के बीच विवाद बढ़ गया। बाद में पुरुषोत्तम ने सोशल मीडिया पर अनुज पांडे की एक तस्वीर पर जूतों की माला पहनाकर पोस्ट की थी, जिसे कुछ देर बाद हटा भी दिया। परिवार के अनुसार, इस पोस्ट के बाद गांव के ब्राह्मण समाज के कुछ लोगों ने पंचायत बुलाकर पुरुषोत्तम से सार्वजनिक रूप से माफी मंगवाई, अनुज पांडे के पैर धुलवाए और वही पानी पीने को कहा। इस पूरी घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला गया, जिसके बाद मामले ने तूल पकड़ा। इस घटना के बाद पुरुषोत्तम ने शिकायत और कार्रवाई न करने की मांग की थी। उन्होंने बीबीसी से कहा था कि हमें यहीं रहना है। शिकायत और एफआईआर करके कहां जायेंगे। हालांकि, वीडियो वायरल होने के बाद दमोह पुलिस ने इस मामले में अनुज पांडे और अन्य अभियुक्तों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 196(1)(बी) के तहत एफआईआर दर्ज की है। पु. लिस अधीक्षक श्रुत कीर्ति सोमवंशी ने 12 अक्तूबर को बीबीसी को बताया था कि इस मामले में जांच जारी है और साक्ष्यों के आधार पर आगे वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। वहीं दमोह से वीडियो वायरल होने के बाद अनुज पांडे ने भी एक वीडियो जारी किया जिसमें उन्होंने कहा कि हमारा और पुरुषोत्तम का गुरु–शिष्य का रिश्ता है और उसने अपने मन से हमारे पैर धोए और माफी मांगी थी। अगर कुशवाहा समाज को हमारे पैर धुलवाने से दिक्कत हो रही है तो मैं क्षमाप्रार्थी हूं। अनुज पांडे के भाई दीनदयाल पांडे ने कहा कि हम लोगों ने कोई जबरदस्ती नहीं की है। सामने वाले ने अपनी मर्जी से गुरु होने के नाते अनुज के पैर धोए थे। उन्होंने अनुज की फोटो पर जूतों की माला पहनाई थी और उसी हरकत की माफी मांगी थी।

मध्य प्रदेश में दलितों और पिछड़े वर्गों के खिलाफ अत्याचार का लंबा इतिहास

मध्य प्रदेश में दलितों और पिछड़े वर्गों के खिलाफ अत्याचार कोई नई बात नहीं है। इसके पहले साल 2023 में मध्य प्रदेश के सीधी जिले में एक आदिवासी युवक पर भाजपा नेता प्रवेश शुक्ला के पेशाब करने का वीडियो वायरल हुआ था। इस मामले में प्रवेश शुक्ला को गिरफ्तार किया गया था और फिलहाल मामला न्यायालय में लंबित है। एनसीआरबी की सबसे लेटेस्ट रिपोर्ट साल 2023 तक के अपराधों की बात करती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक मध्य प्रदेश साल 2021, 2022, और 2023 में लग. ातार देशभर में अनुसूचित जाति के खिलाफ हुए अपराधों में तीसरे पायदान पर रहा है। इससे ऊपर सिर्फ उत्तर प्रदेश और राजस्थान रहे हैं। वहीं अनुसूचित जनजाति के खिलाफ हुए अपराधों में भी मध्य प्रदेश 2021 और 2022 में पहले नंबर पर तो 2023 में दूसरे स्थान पर रहा है।

जातीय हिंसा और भेदभाव हमारे समाज में अब भी गहराई तक : माधुरी

भोपाल स्थित सामाजिक कार्यकर्ता माधुरी

का कहना है कि जातीय हिंसा और भेद. भाव हमारे समाज में अब भी गहराई तक घुसे हुए हैं। कानून तो हैं, लेकिन न्याय तक पहुंचना आज भी बेहद मुश्किल है। ये तो सिर्फ कुछ मामले हैं जो खबरों में जगह बना पाते हैं लेकिन ऐसे न जाने कितने पीड़ित हैं जिनकी रिपोर्ट तक नहीं लिखी जाती है। माधुरी का मानना है कि ऐसी घटनाओं में राजनीतिक संरक्षण की एक अदृश्य ढाल होती है, जो अपराधियों को बचा लेती है। आप अगर इन मामलों की तह तक जायेंगे तो ये निकलकर आएगा कि आरोपियों को किसी न किसी तरह सत्ता का संरक्षण प्राप्त होता है और यही वजह है कि ये हिंसा बार–बार दोहराई जाती है।

अधिवक्ता निकिता सोनवाने कहती हैं कि जमीनी स्तर पर जांच प्रक्रिया अक्सर अधूरी और ऊपरी होती है, कई बार तो प्राथमिकी तक दर्ज नहीं की जाती, जिसके चलते अधिकतर मामलों में अभियुक्त बरी हो जाते हैं या मामला आगे नहीं बढ़ पाता। उन्होंने आगे कहा कि राज्य की भूमिका सिर्फ प्रतिक्रिया देने तक सीमित रह गई है, जबकि अधिनियम में स्पष्ट रूप से रोकथाम संबंधी कदम उठाने का प्रावधान है।सरकारों की ओर से कानूनी रूप से आवश्यक एहतियाती कदम नहीं उठाए जाते, न ही पीड़ितों को समय पर न्याय और सुरक्षा मिल पाती है। नतीजा यह है कि अपराधी निडर हो गए हैं और पीड़ित समुदायों में भरोसे की भावना लगातार कम होती जा रही है। निकिता ने कहा कि जब तक राज्य सरकार खुद इन मामलों में सक्रिय हस्तक्षेप नहीं करेगी और रोकथाम को प्राथमिकता नहीं देगी, तब तक यह अधिनियम कागजों में ही प्रभावी रहेंगे। माधुरी ने इन घटनाओं से दलित समुदाय के बच्चों पर होने वाले असर के बारे में कहा कि इन घटनाओं से जो डर, गुस्सा, बेबसी और कड़वाहट पैदा होती है, वह बच्चों के भीतर तक उतर जाती है। ये बच्चे उस माहौल में बड़े होते हैं जहां असमानता और अपमान को सामान्य मान लिया गया है। यह सिर्फ सामाजिक या कानूनी नहीं, बल्कि भावनात्मक और पीढ़ीगत हिंसा है जिसके निशान पीढ़ियों तक जाते हैं।

केंद्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दलितों के खिलाफ अत्याचार के मामलों में पंजीकरण में यूपी, राजस्थान और मध्य प्रदेश शीर्ष पर

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित राज्य वर्ष 2022 में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 (पी.ओ.ए. एक्ट) के तहत दर्ज मामलों की उच्च संख्या में शीर्ष पर हैं। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक केंद्र सरकार की रिपोर्ट से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में पी.ओ.ए. अधिनियम के तहत दर्ज कुल 51,656 मामलों (दलितों के खिलाफ अत्याचार के 97.7 प्रतिशत) का 23.78 प्रतिषत हिस्सा, 12,287 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद, राजस्थान और मध्य प्रदेश दलितों के खिलाफ अत्याचार के मामलों के पंज.ीकरण में शीर्ष पर हैं। रिपोर्ट के निष्कर्ष जाति– आधारित हिंसा और हाशिए के समुदायों के खिलाफ भेदभाव के साथ भारत के चल रहे संघर्ष की एक गंभीर याद दिलाते हैं।

इस बीच, अनुसूचित जनजाति समुदाय के विरुद्ध अत्याचार/हिंसा के 2979 मामलों के साथ मध्य प्रदेश शीर्ष पर है, जबकि 2498 मामलों के साथ राजस्थान दूसरे स्थान पर है तथा अनुसूचित जनजाति समुदाय के विरुद्ध अत्याचार के अपराधों के पंजीकरण में ओडिशा में केवल 773 मामले दर्ज हैं। केंद्रीय मंत्रालय की रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि अनुसूचित जातियों (एससी) के खिलाफ अत्याचार के 52,866 मामले और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) के 9,725 मामले वर्ष 2022 में पीओए अधिनियम के तहत दर्ज किए गए थे। इनमें से अधिकांश मामले, चौंका देने वाले 97.7 प्रतिषत, सिर्फ 13 राज्यों में दर्ज किए गए थे, जिसमें भाजपा शासित उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश सबसे ऊपर हैं। 2022 में पीओए अधिनियम के तहत दर्ज 51,656 मामलों में से, उत्तर प्रदेश में 12,287 मामले दर्ज किए गए, जो कुल का 23.78 प्रतिशत है। 2022 में दलितों के खिलाफ अत्याचार के 97.7 प्र. तिश्शत मामले 13 राज्यों में दर्ज किए गए थे। इसके बाद, राजस्थान में दलितों के खिलाफ अत्याचार के दूसरे सबसे ज्यादा 8,651 मामले (16.75 प्रतिशत) दर्ज किए गए, जबकि मध्य प्रदेश में 7,732 मामले थे, जिन अन्य राज्यों में मामले अधिक हैं उनमें बिहार (6509), ओडिशा (2902) तथा महाराष्ट्र (2276) शामिल हैं।

इसके अलावा तेरह राज्यों में वर्ष 2022 के दौरान अनुसूचित जातियों के सद. स्यों के विरुद्ध अत्याचार के अपराधों से संबंधित कुल मामलों (52866) का कुल मिलाकर 97.7 प्रतिषत (51656) दर्ज किया गया। रिपोर्ट में अनुसूचित जनजातियों के विरुद्ध अत्याचारों से संबंधित आंकड़े भी दिए गए हैं। कुल 9735 मामलों में से 98.91 प्रतिषत (9627) मामलों का सीधा संबंध इन 13 राज्यों से है।

भारत में जाति–आधारित हिंसा का चिंताजनक रुझान लगातार बढ़ रहा है, और दलितों और हाशिए के सम. ुदायों के खिलाफ अत्याचारों की सूची में उत्तर प्रदेश सबसे ऊपर है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के 2022 के आंकड़ों (मंत्रालय की रिपोर्ट के समान अवधि) के अनुसार, राज्य में 15,368 मामले दर्ज किए गए, जो 2021 के 13,146 मामलों से 16 प्रतिषत अधिक है। राजस्थान दलित विरोधी हिंसा के 8,752 दर्ज मामलों के साथ दूसरे स्थान पर है। मध्य प्रदेश दलितों के खिलाफ अत्याचार के 7,733 मामलों के साथ तीसरे स्थान पर बना हुआ है। courtesy-www.bbc.com

कैलाश विजयवर्गीय के बयान पर मचा हंगामा

श्वेतांक वर्मा
मध्य प्रदेश ब्यूरो प्रमुख

भोपाल। 25 सितंबर 2025 को मध्य प्रदेश के शाजापुर में एक समारोह में प्रदेश सरकार में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी पर विवादित टिप्पणी की थी, जिस पर हंगामा मच गया। विजयवर्गीय ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि उनमें संस्कारों का अभाव है। इसके बाद का. ग्रेस ने उनसे माफी मांगने को कहा। पार्टी ने आरोप लगाया कि कैलाश विजयवर्गीय महिला विरोधी हैं। इस घटना के ठीक एक महीने बाद अब उनके एक और बयान पर विवाद खड़ा हो गया है। इंदौर में दो ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेटरों के साथ यौन हिंसा की घटना को उन्होंने दुर्भाग्यपूर्ण तो बताया लेकिन साथ ही कहा कि इसमें थोड़ी बहुत लापरवाही हुई है। कैलाश विजयवर्गीय ने एक चौनल से बात करते हुए कहा कि खिलाड़ियों का अचानक वहां से निकल जाना, बिना किसी को बताए ये थोड़ी सी उनसे गलती हो गई है। क्योंकि वहां उनकी पर्सनल और पुलिस सिक्योरिटी भी थी। बीजेपी नेता कहते हैं कि इससे अब खिलाड़ी भी सीख लेंगे कि हम जब किसी दूसरे देश या शहर में जाएं तो अपनी सुरक्षा की चिंता भी करें।कैलाश विजयवर्गीय इससे पहले भी कई बार महिलाओं के बारे में विवादित बयान देते रहे हैं।

राहुल और प्रियंका गांधी पर विवादित बयान

शाजापुर में एक सभा को संबोधित करते हुए इसी साल 25 सितंबर को उन्होंने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की संयुक्त रैली पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि हम पुरानी संस्कृति के लोग हैं, पुराने जमाने में लोग अपनी बहनों के गांव का पानी तक नहीं पीते थे, लेकिन आज के हमारे प्रतिपक्ष के नेता ऐसे हैं कि अपनी बहन का चौराहे पर चुंबन कर लेते हैं। ये संस्कारों का अभाव है. ये विदेश के संस्कार हैं। उनके इस बयान की कांग्रेस समेत कई लोगों ने आलोचना की थी और इसे म. हिला विरोधी बयान करार दिया था। आलोचना के बाद कैलाश विजयवर्गीय ने कहा था कि मैं किसी रिश्ते की पवित्रता पर सवाल नहीं उठा रहा हूं। सभी रिश्ते पवित्र होते हैं, हालांकि हर रिश्ते की एक सीमा होती है, और मैं उसी का जिक्र कर रहा था। मैंने ये कहा था कि विदेशों में ऐसा होता है, लेकिन यहां यानी भारत में ऐसा नहीं होता।

कम कपड़ों वाली लड़कियों के साथ सेल्फी नहीं खींचे

इसी साल जून में इंदौर में लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था, ष्हमारे यहां महिला देवी का स्वरूप होती है। वो खूब अच्छे कपड़े पहनें, श्रृंगार करें। मुझे तो कम कपड़े पहनने वाली लड़कियां पसंद नहीं। कई लड़कियां मेरे पास सेल्फी खिंचवाने आती हैं तो मैं कहता हूं बेटा पहले अच्छे कपड़े पहन के आना फिर खिंचाना। और मैं मना कर देता हूं। उन्होंने कहा कि विदेशों में कम कपड़े पहनने वाली लड़की को अच्छा मानते हैं, लेकिन हमारे यहां अच्छे कपड़े, श्रृंगार और गहने पहनने वाली लड़की को सुंदर माना जाता है।

कम कपड़ों वाली लड़कियां शूर्पणखा लगती हैं

अप्रैल 2023 में हनुमान जयंती और महावीर जयंती के मौके पर आयोजित एक समारोह में कैलाश विजयवर्गीय के एक बयान के बाद काफी विवाद हुआ। उन्होंने तब कहा था कि मैं रात को जब पढ़े लिखे नौजवानों को झूमते हुए देखता हूं तो इच्छा होती है कि उतर के उन्हें पांच सात खींच के दे दूं तो इनका नशा उतर जाए। लड़कियां भी इतने गंदे कपड़े पहन के निकलती हैं कि उनमें देवी का स्वरूप नहीं दिखता। शूर्पणखा लगती हैं। उनके इस बयान की तीखी आलोचना हुई थी। विजयवर्गीय उस वक्त पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी के प्रभारी थे। तृणमूल कांग्रेस नेता महुआ मो. इत्रा ने तब कहा था, आपकी सोच गंदी है। आपकी नजर गंदी है। हमारे कपड़ों से कोई फर्क नहीं पड़ता।

मर्यादा का उल्लंघन होता है तो सीता हरण होता है

जनवरी 2013– रेप की लगातार बढ़ती घटनाओं पर टिप्पणी करते हुए कैलाश वि. जयवर्गीय ने जो कहा था उससे काफी विवाद हुआ था। लगातार होती आलोचनाओं के बाद बीजेपी को इस पर सफाई देनी पड़ी थी। तब मीडिया से बात करते हुए कैलाश विजयवर्गीय ने कहा था, एक ही शब्द है मर्यादा। मर्यादा का उल्लंघन होता है, तो सीता हरण हो जाता है। लक्ष्मण रेखा हर व्यक्ति की खींची गई है। उस लक्ष्मण रेखा को कोई भी पार करेगा, तो रावण सामने बैठा है, वह सीता हरण करके ले जाएगा। उनकी इस आपत्तिजनक टिप्पणी के बाद विवाद बढ़ते देख तत्कालीन बीजेपी प्रवक्ता रवि शंकर प्रसाद ने कहा था कि पार्टी इस बयान से खुद को दूर रखती है और उन्हा. ेने कैलाश से ये बयान वापस लेने को कहा है। जिसके बाद कैलाश विजयवर्गीय ने कहा था कि उनका मकसद किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था।

नीतीश कुमार पर विवादित टिप्पणी

आगामी विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार की जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) और भा. रतीय जनता पार्टी मिलकर चुनाव लड़ रही हैं, लेकिन अगस्त 2022 में नीतीश कुमार ने बीज. ेपी से गठबंधन तोड़कर और राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के साथ मिलकर बिहार में सरकार बनाई थी। तब बीजेपी नेता कैलाश विजयवर्गीय की एक टिप्पणी पर काफी हंगामा मचा था।उन्होंने कहा था कि जिस दिन बिहार में सत्ता परिवर्तन हुआ मैं विदेश में था। तब एक ने कहा कि हमारे यहां जैसे लड़कियां बॉयफ्रेंड बदलती हैं वैसे बिहार की राजनीति है। बिहार के मुख्यमंत्री की भी वही पोजीशन है। विवाद बढ़ता देख कैलाश विजयवर्गीय ने सफाई देते हुए कहा था कि मैंने अपने मित्र के बयान को कोट किया था। नारी हमारे लिए पूजनीय हैं। नारी के लिए, कम से कम भारतीय नारी के लिए हम सब का बहुत सम्मान है।

मीरा नायर का बेटा ममदानी बना न्यूयार्क का मेयर

ममदानी की जीत से न्यूयॉर्क अचानक दुनिया में सबसे अधिक चर्चित शहर बना

मुंबई। फिल्ममेकर मीरा नायर का बेटा न्यूयार्क का मेयर बन गया है। हालांकि मीरा नायर ने न्यू यॉर्क आई लव यू फिल्म बनाई जिसे इनकी बेस्ट फिल्मों में नहीं गिना जाता है लेकिन बेटे के न्यूयार्क का मेयर बनने के बाद इस पर चर्चा होने लगी है। अनेक छोटी–छोटी कहानियों से गुंथी इस फिल्म के कुल दस निर्देशक थे– उनमें एक मीरा नायर भी हैं। इसमें न्यूयॉर्क सिटी की लाइफस्टाइल को फोकस किया गया था। न्यू यॉर्क दुनिया का सबसे महंगा और हाई प्रोफाइल शहर है लेकिन यहां की जिंदगी कैसी है– इसे इस फिल्म में बखूबी दिखाया गया था।

गौरतलब है कि मीरा नायर ने जब फिल्ममेकिंग की दुनिया में दस्तक दी, तब कुछ ही महिला हस्तियां इस फील्ड में थीं। मीरा नायर ने आगे चलकर जो भी फिल्म. बनाईं, उनमें हाशिए पर पड़े आम लोगा. के साथ–साथ महिलाओं के दर्द और उत्साह को भरपूर स्पेस मिला है। मिसिसिपी मसाला हो या मॉनसून वेडिंग और कामसूत्र– महिलाओं की पीड़ा हर जगह है जानी–मानी डायरेक्टर–प्रोड्यूसर मीरा नायर की कई बहुचर्चित फिल्में हैं– मिसिसिपी मसाला, सलाम बॉम्बे, मॉनसून वेडिंग, दी नेमशेक या फिर कामसूत्र आदि। लेकिन उनकी एक और फिल्म है– न्यू यॉर्क आई लव यू। इसे मीरा नायर की बेस्ट फिल्मों में नहीं गिना जाता। इसके बारे में कम बातें की गई हैं। लेकिन आज इसकी चर्चा लाजिमी हो गई। अनेक छोटी–छोटी कहानियों से गुंथी इस फिल्म के कुल दस निर्देशक थे– उनमें एक मीरा नायर भी हैं। इसमें न्यूयॉर्क सिटी की लाइफस्टाइल को फोकस किया गया था। न्यूयॉर्क दुनिया का सबसे महंगा और हाई प्रोफाइल शहर है लेकिन यहां की जिंदगी कैसी है– इसे इस फिल्म में बखूबी दिखाया गया था।

अब जबकि मीरा नायर के बेटे जोहरान ममदानी न्यू यॉर्क के मेयर बन गए हैं तो निश्चय ही इस सिटी को एक बार फिर से आई लव यू कहने की बारी आ गई है। ममदानी की जीत से न्यू यॉर्क अचानक ही दुनिया में सबसे अधिक चर्चित शहर भी बन गया। फिलहाल उनकी जीत को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सबसे बड़ी हार माना जा रहा है और अमेरिका के राजनीतिक भविष्य का नये एंगल से अनुमान लगाया जा रहा है।

महिला फिल्ममेकर की बड़ी दस्तक

जोहरान ममदानी की ऐतिहासिक जीत से उनकी मां मीरा नायर भी सुर्खियों में आ गईं और उनकी फिल्मी उपलब्धियां भी। मीरा नायर खुद भी अंतरराष्ट्रीय हस्ती हैं। मां और बेटे दोनों को एक दूसरे की उपलब्धियों पर गर्व है। अब उनकी शख्सियत की चर्चा भी लाजिमी हो जाती है। उन्होंने जिस दौर में फिल्ममेकिंग शुरू की, वहां महिलाओं के लिए पर्दे के पीछे के इतने बड़े दायित्व को इतनी गंभीरता से संभालना बहुत आसान नहीं था। लेकिन मीरा ने पहली ही फिल्म सलाम बॉम्बे से ऐसी दस्तक दी कि वर्ल्ड सिनेमा के दिग्गज भी उन्हें सलाम करने लगे।मीरा नायर के समय दीपा मेहता और आगे गुरिंदर चड्ढ़ा जैसी महिला हस्तियों ने अंतरराष्ट्रीय फिल्ममेकिंग में अलग दर्जा हासिल करके चौंकाया है। इनकी बदौलत भारतीय परिदृश्य और कहानियां दुनिया के पटल पर पहुंचीं। सत्यजित राय या राजकपूर के सिनेमा से यह अलग मिजाज लिये हुए था। मीरा नायर पिछले कुछ सालों से चर्चा से दूर हैं लेकिन लगातार फिल्में और टीवी सीरीज बना रही हैं। कामसूत्र, मॉनसून वेडिंग और दी नेमशेक जैसी फिल्मों से उन्होंने भारत और विदेशों में बसे भारतीयों के बीच अच्छी प्रतिष्ठा हासिल की। अनिवासी भारतीयों की संवेदना और जज्बात के साथ–साथ इस वर्ग के दिखावे को भी उन्होंने अपनी फिल्मों में प्रमुखता से उभारा है।

सलाम बॉम्बे बनाकर सबको चौंकाया

उनकी सबसे आखिरी फीचर फिल्म क्वीन ऑफ कैटवे थी। 2006 की दी नेमशेक के बाद उनकी कोई फिल्म बहुत चर्चा हासिल नहीं कर सकी। इसके बरअक्स उन्होंने शॉर्ट फिल्म और सीरीज पर ज्यादा फोकस किया। इसमें उनको कामयाबी मिली। 2020 में आई अ सुटेबल बॉय के अलावा 2022 की नेशनल ट्रेजररू एज ऑफ हिस्ट्री (National Treasure: Edge of History) ने उन्हें एक बार फिर से प्रसिद्धि के शिखर पर बनाए रखा। तो सबसे पहले बात

सलाम बॉम्बे की। सन् 1988 की इस फिल्म ने इतिहास रचा था। यह मीरा नायर की पहली फिल्म थी। मुंबई देश का ऐसा महानगर जो मायानगरी और चकाचौंध भरी लाइफस्टाइल के लिए विख्यात है लेकिन यहां के स्लम में और फुटपाथों पर रात–दिन गुजारने वालों की कैसी जिंदगी है, और वे लोग कैसे–कैसे सपने देखते हैं– सलाम बॉम्बे के जरिए पहली बार इस शहर का एक नया सच सामने आ सका था। मीरा नायर में फुटपाथ पर रहने वालों के समूह को प्रशिक्षित करके यह फिल्म बना दी और दुनिया भर में चर्चा बटोर ली। उन्होंने वर्कशॉप करके बच्चों को अभिनय सिखाए। बड़े सितारों के बदले फुटपाथ पर रहने वाले रीयल लाइफ बच्चों को लिया। नतीजा– फिल्म को ऑस्कर के अलावा बाफ्टा, गोल्डेन ग्लोब में नॉमिनेशन मिला और बेस्ट डायरेक्टर का फिल्मफेयर अवॉर्ड भी। फिल्म में नाना पाटेकर, रघुवीर यादव और अनिता पंवार ने भी अभिनय किया था। सलाम बॉम्बे आज भी मुंबई के अंधेरे पक्ष को दर्शाने वाली सबसे बेहतरीन फिल्म मानी जाती है।

कामसूत्र और मॉनसून वेडिंग भी चर्चित फिल्में

मीरा नायर के फिल्मी सलाम को दुनिया भर में इतना इस्तकबाल मिला कि उन्होंने युग. ांडा का रुख किया और मिसिसिपी मसाला बनाने की ठानी। अश्वेत देश में कैसा नस्लवाद है, इसे उन्होंने दमखम के साथ दिखाया। सन् 1991 में इस फिल्म से उनकी कायापलट हो गई। रीसर्च के दौरान दूसरे जीवन साथ ी के रूप में भारतीय मूल के स्कॉलर महमूद ममदानी मिले। मीरा की जैसे मुराद पूरी हो गई। मिसिसिपी मसाला को मुकाम मिला और बेस्ट फिल्म का इंडिपेंडेंट स्पिरिट अवॉर्ड भी। लेकिन इस फिल्म के बाद उन्होंने एक बार फिर से भारतीय परिवेश और कहानियों की ओर रुख किया। कामसूत्र बनाकर भारतीय नारी की व्यथा को व्यक्त किया तो मॉनसून वेडिंग के माध्यम से उन्होंने विदेश में बसे पंज. ाब की धरती से ताल्लुक रखने वाले धनाढ्य अनिवासी भारतीयों के दिखावे पर फोकस किया था। मीरा नायर की यह फिल्में सबसे अलग महत्व रखती हैं। इसमें नसीरुद्दीन शाह, शेफाली शाह, वसुंधरा दास, रणदीप हुड्डा, रजत कपूर आदि कलाकारों ने काम किया था। यहां भारत–पाक विभाजन का दर्द भी था तो महंगी ग्लैमरस शादियों की दिखावे वाली भव्यता भी। इसी क्रम में मीरा नायर की दी नेमशेक और वैनिटी फेयर को नहीं भूला जा सकता, जहां अनाथ, गरीब, हाशिए पर पड़ी महिलाओं की पीड़ा दर्ज है।

मीरा नायर बेटा इतनी दौलत के हैं मालिक

न्यूयॉर्क को भारतीय मूल का नया मेयर मिल गया है। सलाम बॉम्बे की डायरेक्टर मीरा नायर के बेटे जोहरान ममदानी ने यह जीत हासिल की है। सबसे दिलचस्प बात उनकी सादगी है। मेयर बनने के बावजूद, वे किराए के घर में रहते हैं और सफर के लिए सबवे का इस्तेमाल करते हैं। उनकी कुल संपत्ति करीब 1.77 करोड़ रुपये बताई गई है।

न्यूयॉर्क के मेयर बने जोहरान ममदानी

अमेरिका के न्यूयॉर्क जैसे दुनिया के सबसे ताकतवर शहरों में से एक का मेयर बनना कोई छोटी बात नहीं है। यह बड़ा कारनामा 34 साल के भारतीय मूल के जोहरान ममदानी ने कर दिखाया है। उनकी यह जीत कई मायनों में खास है। एक तो उनकी जड़ें सीधे तौर पर भारत से जुड़ी हैं और दूसरा, उनका सादगी भरा जीवन, जो न्यूयॉर्क की चकाचौंध से बिल्कुल अलग है। इतनी बड़ी राजनीतिक जीत के बाद भी जोहरान एक आम नागरिक की तरह सबवे में सफर करते हैं और किराए के अपार्टमेंट में रहते हैं।

ट्रंप की चुनौती के बावजूद मिली जीत

जोहरान ममदानी ने यह चुनाव तब जीता है, जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चे. तावनी दी थी कि अगर ममदानी जीतते हैं तो न्यूयॉर्क को मिलने वाले फंड पर असर पड़ेगा। इसके बावजूद, खुद को डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट बताने वाले जोहरान ने जीत हासिल की। जो. हरान का भारत और अफ्रीका, दोनों से गहरा नाता है। उनके पिता महमूद ममदानी एक प्रोफेसर हैं, जबकि उनकी मां मीरा नायर हैं, जिन्हें 'सलाम बॉम्बे' और 'मानसून वेडिंग' जैसी विश्व प्रसिद्ध फिल्मों के निर्देशन के लिए जाना जाता है। यही वजह है कि जोहरान बहुत अच्छी हिंदी बोलते हैं। उन्होंने भारतीय मूल के मतदाताओं का दिल जीतने के लिए अपना प्रचार अभियान हिंदी भाषा में भी चलाया था।

करोड़ों की संपत्ति, ऐसे होती है कमाई

जोहरान ममदानी की कुल संपत्ति को लेकर मीडिया में काफी चर्चा रहती है। फोर्ब्स के अनुसार, उनकी कुल संपत्ति करीब 2,00,000 डॉलर (यानी लगभग 1.77 करोड़ रुपये) है। उनकी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा युगांडा से आता है, जहां उनका जन्म हुआ था। पिछले साल दिए गए अपने वित्तीय ब्योरे में, उन्होंने जिंजा (युगांडा) में चार एकड़ जमीन का जिक्र किया था। यह इलाका विक्टोरिया झील के किनारे बसा है। उन्होंने इस जमीन की कीमत 1,50,000 से 2,50,000 डॉलर के बीच बताई है। जहां तक उनकी कमाई का सवाल है, एक राज्य असेंबली सदस्य के तौर पर उनका सालाना वेतन 1,42,000 डॉलर है, जो उनकी आय का मुख्य स्रोत है।

न अपनी कार, न आलीशान बंगला, सबवे से करते हैं सफर

न्यूयॉर्क जैसे महंगे शहर में रहने के बावजूद ममदानी का रहन–सहन हैरान करने वाला सादा है। फोर्ब्स की रिपोर्ट बताती है कि उनके पास कोई आलीशान बंगला नहीं है। वह एस्टोरिया में एक 'रेंट–स्टेबिलाइज्ड' अपार्टमेंट में रहते हैं, जिसका मासिक किराया करीब 2,250 डॉलर (लगभग 2 लाख रुपये) है। उनके पास अपनी कार तक नहीं है। वह अपने काम पर जाने या प्रचार कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए भी आम लोगों की तरह सबवे का ही इस्तेमाल करते हैं। उन्हें अक्सर अपना बैग खुद उठाए देखा जाता है। उनकी जिंदगी का एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि साल 2024 में उन्हें अपने छोटे से रैप करियर से भी 1,000 डॉलर की रॉयल्टी मिली थी, उस समय वह 'मिस्टर कार्डामाम' के नाम से जाने जाते थे।

.प्रस्तुति-प्राइम स्पेक्टेटर डेस्क.

CCL

Fuelling Sustainable Growth

हमारा प्रयास : हितधारकों, ग्रामीणों एवं श्रमिकों का सर्वांगीण विकास

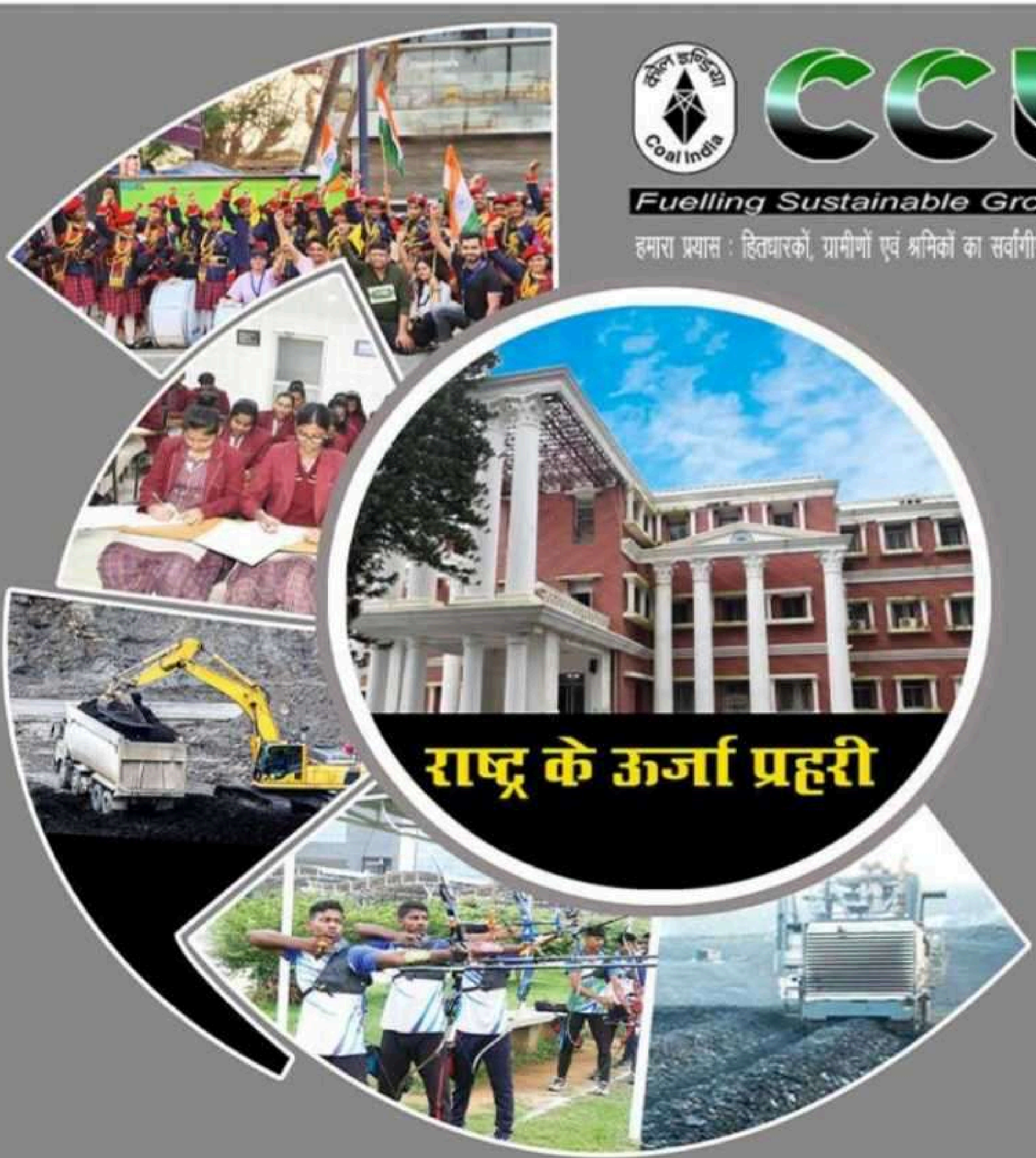

सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम /कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कम्पनी)

दरभंगा हाउस, राँची – 834001 (झारखण्ड)

CentralCoalfieldsLtd CCLRanchi centralcoalfieldsltd Central Coalfields Limited

LONDON DAIRY
Premium Ice Cream
SHEER INDULGENCE
LONDON DAIRY
Premium Ice Cream
DOUBLE CHOCOLATE
LONDON DAIRY
Ice Cream
Yoghurt
mango
LONDON DAIRY
Premium Ice Cream
NEW FIG WALNUT
londondairy.in
londondairyindia
londondairy.com